हिंदी पुस्तक–5

(प्रथम भाषा)

(पाँचवीं कक्षा के लिए)

M4H1T2

ਸਮੱਗਰ ਸਿੱਖਿਆ ਅਭਿਆਨ

ਪੜ੍ਹੋ ਸਾਰੇ ਵਧੋ ਸਾਰੇ

ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਭਲਾਈ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਸਾਂਝਾ ਉਪਰਾਲਾ

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब सरकार

संशोधित संस्करण: 2020-21
संशोधित संस्करण: 2021-22 .... प्रतियाँ

All rights, including those of translation, reproduction
and annotation etc., are reserved by the
Punjab Government.

सम्पादक : शशि प्रभा जैन
डॉ० सुनील बहल

चित्रकार : अमरजीत सिंह वालिया

चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी-होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्देश्य से पाठ्य-पुस्तकों पर जिल्दबंदी नहीं कर सकता। (एजेंसी-होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं. 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों की जाली और नकली प्रकाशन(पाठ्य-पुस्तकों) की छपाई, प्रकाशन, स्टॉक करना, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अंतर्गत गैरकानूनी जुर्म है।
   (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य-पुस्तकें बोर्ड 'वॉटर मार्क' वाले कागज़ के ऊपर ही मुद्रित की जाती हैं।)

ਸਮੱਗਰ ਸਿੱਖਿਆ ਅਭਿਆਨ
ਪੜ੍ਹੋ ਸਾਰੇ ਵਧੋ ਸਾਰੇ

ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਭਲਾਈ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਸਾਂਝਾ ਉਪਰਾਲਾ

ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਵਿਕਰੀ ਲਈ ਨਹੀਂ ਹੈ।

सचिव, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन, फेज़-8, साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर-160062 द्वारा प्रकाशित एवं **राहुल आर्ट एंड प्रैस,** जालंधर द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

गत कुछ वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के ढाँचे में मूलभूत परिवर्तन लाने के विभिन्न प्रयास हो रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के अनुसार बाल-केंद्रित शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। इसी प्रयत्न को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूल के जीवन को सामाजिक जीवन से जोड़ा जाये। इसके लिए ज़रूरी है कि हम सीखने की प्रक्रिया में बच्चे को भागीदार बनायें, उसकी कल्पनाशीलता को विकसित करें तथा वह सीखे हुए ज्ञान को जीवन से जोड़कर अनुभव करे।

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड ने अपने इस उत्तरदायित्व को समझते हुए आधुनिक शैक्षिक आवश्यकताओं के आधार पर हिंदी (प्रथम भाषा) के प्राइमरी स्तर की पाठ्य-पुस्तकों के नवीकरण की योजना प्रवेश वर्ष 2007 से बनायी हुई है। पहली, दूसरी और तीसरी कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए नई पाठ्य-पुस्तकें लागू की जा चुकी हैं।

हस्तीय पाठ्य-पुस्तक हमारा पंचम प्रयास है। इस पाठ्य-पुस्तक में चतुर्थ प्रयास को आगे बढ़ाया गया है। पाठों का चयन बच्चों के मानसिक एवं बौद्धिक स्तर के अनुरूप किया गया है। पाठ्य-पुस्तक के विस्तृत अभ्यास भाषायी ज्ञान देने के साथ-साथ बच्चों की सूझ-बूझ, रचनात्मक क्षमता एवं कल्पनाशीलता को विकसित करने में सहायक होंगे। अभ्यास और प्रयोग के माध्यम से बच्चों को व्याकरण के बिंदु रोचक ढंग से समझाये गये हैं।

पाठ्य-पुस्तक को आकर्षक रूप देने में चित्रकार श्री अमरजीत सिंह वालीया ने अपनी कलात्मक सूझ-बूझ का परिचय देते हुए खूबसूरत चित्र तैयार किये हैं जो बच्चों में पुस्तक के प्रति रोचकता बढ़ाने में सहायक होंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

हमें पूर्ण आशा है कि यह पुस्तक भाषा शिक्षा के मापदंडों पर खरी उतरेगी और विद्यार्थियों में मातृभाषा का ज्ञान बढ़ाने में सहायक होगी। फिर भी, पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए क्षेत्र से आए सभी सुझाव बोर्ड द्वारा सादर स्वीकार किये जायेंगे।

चेयरमैन

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

सीखने की संप्राप्तियाँ

सुनना और बोलना

- दूसरों द्वारा कही जा रही बात को रुचि से सुनने में दिलचस्पी दिखाते हैं। प्रश्न समझने की कोशिश करते हैं।
- चित्रों और रचनाओं पर अनुमान लगाते हुए अपनी प्रतिक्रिया देने की कोशिश करते हैं।
- हिंदी में सुनी गई बातों को अपनी भाषा में कहते हैं।
- छोटी-छोटी कविताओं, कहानियों को आनंदपूर्वक सुनते है। अपनी भाषा में कविताओं, कहानियों को सुनाते हैं।
- पंजाबी तथा हिंदी ध्वनियों की समानता-भिन्नता को सुनकर बोलते हैं।
- सरल शब्दों को बोलते हैं।
- पंजाबी तथा हिंदी की मात्राओं के अंतर को समझकर बोलने में थोड़ा आत्मविश्वास दिखाते हैं।
- पंजाबी तथा हिंदी में प्रयुक्त होने वाले समान शब्दों की समानता एवं भिन्नता को समझने की कोशिश करते हैं।
- संयुक्त ध्वनियों को सुनकर बोलने की कोशिश करते हैं और व्यंजनों के संयोग से नए शब्द बोलने की कोशिश करते हैं। जैसे-मित्र, विद्यालय, ज्ञानी आदि।
- छोटे-छोटे सरल वाक्यों को सोचकर बोलते हैं।
- पाठ्य-सामग्री की कविताओं को कंठस्थ कर बोलते हैं।

पढ़ना और लिखना

- हिंदी पढ़ने के प्रति और अधिक उत्साह और इच्छा प्रकट करते हैं।
- संयुक्त ध्वनियों को पहचानकर पढ़ने की कोशिश करते हैं।
- सरल शब्दों को जोड़कर पढ़ते हैं।
- शब्दों को पढ़ने की गति में तेज़ी दिखाते हैं।
- हिंदी तथा पंजाबी की समान ध्वनियों, मात्राओं को पढ़कर समझते हैं। पंजाबी और हिंदी के समान से लगने वाले शब्दों को पढ़कर उच्चारण की समानता-भिन्नता को जानने की समझ उत्पन्न होती है। जैसे- **ਮਹਾਰਾਜ**-महाराज, **ਪੈਸਾ**-पैसा में समान उच्चारण तथा **ਕੰਮ**-काम, **ਅੱਗ**-आग, **ਸੁੱਤਾ**-सोया आदि के उच्चारण में भेद।
- छोटे-छोटे वाक्यों को सरलता से पढ़ता / पढ़ती हैं।
- पाठ्य-सामग्री में दिए गए वाक्यों को देखकर शुद्ध वाचन करते हैं।
- लिंग-वचन बदलो, पाठ में दिए कठिन शब्दों के अर्थ, विलोम शब्दों को ध्यान एवं रुचि से पढ़ते हैं।
- पाठ्य-सामग्री में आए प्रश्नों के उत्तर देने की कोशिश करते हैं।
- हिंदी लिखने में और अधिक उत्साह दिखाते हैं।
- वर्णों से शब्द बनाने में रुचि दिखाते हैं।
- शब्दों को जोड़कर लिख लेते हैं। शब्दों को धीरे-धीरे लिख लेते हैं।
- हिंदी-पंजाबी की समान ध्वनियों, मात्राओं को लिखकर समझने के अतिरिक्त इन भाषाओं की असमान ध्वनियों एवं मात्राओं को लिखकर समझने की कोशिश करते हैं। जैसे-**ਰ**-र, **ਸ**-म, **ਘ**-घ, **ਕ**-क, **ਮ**-म,आदि ध्वनियां एवं ੁ - ु , ੂ - ू , ਾ - ा, ੌ - ौ, आदि मात्राएं।
- सरल वाक्यों को जोड़कर लिख लेते हैं।
- पाठ्य-सामग्री में आए प्रश्नों के उत्तर लिखने की कोशिश करते हैं।

विषय—सूची

पाठ संख्या	पाठ	लेखक	पृष्ठ संख्या
1	मेरी अभिलाषा है	संकलित	1
2	जब मैं पढ़ता था	संकलित	5
3	नगर की सुंदरता	'तेनालीराम के रोचक किस्से' से संकलित	13
4	हम सुमन एक उपवन के	संकलित	18
5	हमारा स्वास्थ्य	सुधा जैन 'सुदीप'	21
6	हाथी कैसे तोला गया	संकलित	26
7	वैशाखी आई रे	विनोद शर्मा	32
8	भाखड़ा बाँध	संकलित	35
9	गलती छिपाने की सज़ा	डॉ० सेवा नन्दवाल	41
10	फूल और काँटा	संकलित	47
11	क्राँतिजोत : सावित्रीबाई फुले	तरसेम	51
12	श्रद्धा और अभ्यास	शिव शंकर	55
13	अनाथ (एकांकी)	चुने हुए बाल एकांकी से संकलित	61
14	मैं झरना	डॉ० सुरेश वात्स्यायन (संकलित)	70
15	एक दीवाली ऐसी भी	सुधा जैन 'सुदीप'	73
16	प्लास्टिक : सजग प्रयोग	डॉ० मीनाक्षी वर्मा	77
17	उन्नति का मंत्र	संकलित	83
18	नारियल का बगीचा-केरल प्रदेश	कंचन जैन	86
19	रेत और पत्थर	'सनरेज़ फार सनडे' से संकलित	91
20	भूल गया है क्यों इंसान	डॉ० हरिवंशराय बच्चन (संकलित)	95
21	तेंदुए से मुठभेड़	डॉ० सुनील बहल	98
22	आत्मविश्वास	डॉ० सुनील बहल	102

पाठ – 1

मेरी अभिलाषा है

सूरज-सा दमकूँ मैं
चन्दा-सा चमकूँ मैं
झलमल-झलमल उज्ज्वल
तारों सा दमकूँ मैं
मेरी अभिलाषा है।

फूलों-सा महकूँ मैं
विहगों-सा चहकूँ मैं
गुंजित कर वन-उपवन
कोयल-सा कुहकूँ मैं
मेरी अभिलाषा है।

नभ-जैसा निर्मल
शशि-जैसा शीतल
धरती-सा सहनशील
पर्वत-सा अविचल बन जाऊँ
मेरी अभिलाषा है।

मेघों-सा मिट जाऊँ
सागर-सा लहराऊँ
सेवा के पथ पर मैं
सुमनों-सा बिछ जाऊँ
मेरी अभिलाषा है।

अभ्यास

शब्दार्थ

अभिलाषा	=	इच्छा	दमकना	=	चमकना
उज्ज्वल	=	उजला, स्वच्छ	विहग	=	पक्षी
महकना	=	खुशबू फैलाना	उपवन	=	बगीचा
नभ	=	आकाश	शशि	=	चन्द्रमा
अविचल	=	अडिग	मेघ	=	बादल
सुमन	=	फूल			

बताओ

1. बालक किन-किन की तरह चमकना चाहता है ?
2. बालक किसके समान सहनशील बनना चाहता है ?
3. सेवा के पथ पर किसके समान बिछना चाहता है ?

चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखो

1. बालक इस कविता में क्या-क्या इच्छाएँ करता है ?
2. आपकी क्या अभिलाषा है ?

सरलार्थ करो

मेघों-सा मिट जाऊँ
सागर-सा लहराऊँ
सेवा के पथ पर मैं
सुमनों-सा बिछ जाऊँ
मेरी अभिलाषा है।

समान अर्थ वाले शब्द लिखो

सूरज	सूर्य,	रवि
चन्दा	______,	______
फूल	______,	______
विहग	______,	______
कोयल	______,	______

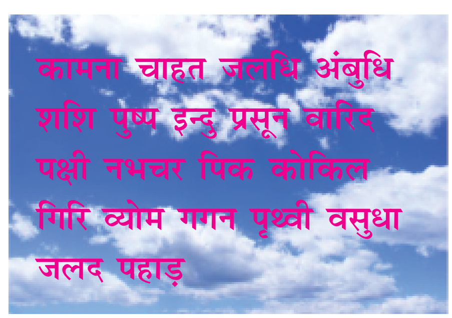

नभ ______, ______

धरती ______, ______

पर्वत ______, ______

मेघ ______, ______

सागर ______, ______

अभिलाषा ______, ______

वाक्य बनाओ

झलमल :	रह-रहकर होने वाला हल्का प्रकाश	______________________
सहनशील :	सहन करने वाला	______________________
निर्मल :	साफ़	______________________
गुंजित :	चहचहाटयुक्त	______________________

पढ़ो, समझो और लिखो

सूरज-सा	**सूरज जैसा**	कोयल-सा	....
चन्दा-सा	______	धरती-सा	______
तारों-सा	______	मेघों-सा	______
फूलों-सा	______	सागर-सा	______
विहगों-सा	______	सुमनों-सा	______

योग्यता-विस्तार

इस कविता के साथ भाव समानता दर्शाती निम्नलिखित कविता की पंक्तियाँ पढ़ो :

फूलों से नित हँसना सीखो
भौरों से नित गाना
तरु की झुकी डालियों से नित
सीखो शीश झुकाना।

तत्पुरुषों के जीवन से
सीखो चरित्र निज गढ़ना
अपने गुरु से सीखो बच्चो
उत्तम विद्या पढ़ना।

कविता की सही पंक्तियाँ चुनकर लिखो

कविता की पंक्तियाँ

1. मेरी अभिलाषा है कि मैं उज्ज्वल तारों की भाँति झिलमिलाऊँ। ... ____________________

2. जिस प्रकार फूल हमारे पैरों में बिछ जाते हैं उसी तरह हमें बिना किसी स्वार्थ दूसरों की सेवा में जुट जाना चाहिए। ... ____________________

3. पृथ्वी सारी दुनिया का भार वहन करती है हमें भी पृथ्वी की तरह सहनशील बनना चाहिए और पर्वत की तरह डट जाना चाहिए। ____________________

पाठ – 2

जब मैं पढ़ता था

मेरे पिता करमचन्द गाँधी थे। वे राजकोट के दीवान थे। वे सत्यप्रिय, साहसी और उदार व्यक्ति थे। वे सदा उचित न्याय करते थे।

मेरी माता का नाम पुतलीबाई था। उनका स्वभाव बहुत अच्छा था। वे धार्मिक विचारों की महिला थी। पूजा-पाठ किए बिना भोजन नहीं करती थी।

2 अक्तूबर 1869 को पोरबंदर में मेरा जन्म हुआ। पोरबंदर से पिताजी जब राजकोट गए तब मेरी आयु सात वर्ष की होगी। पाठशाला से फिर ऊपर के स्कूल में और वहाँ से हाई स्कूल में गया।

एक बार पिताजी 'श्रवण-पितृभक्ति' नामक नाटक की एक किताब खरीद लाए थे। मैंने उसे बड़े शौंक से पढ़ा। उन्हीं दिनों शीशे में तस्वीर दिखाने वाले लोग आया करते थे। तभी मैंने अंधे माता-पिता को बहँगी पर बैठाकर ले जाने वाले श्रवणकुमार का चित्र देखा। इन बातों का मेरे मन पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। मन ही मन मैंने कहा-मैं भी श्रवण कुमार की तरह बनूँगा।

मैंने 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक भी देखा। बार-बार उसे देखने की इच्छा होती। हरिश्चन्द्र के सपने आते। बार-बार मन में यह बात उठती कि सभी हरिश्चन्द्र की तरह सत्यवादी क्यों न बनें। यही बात मन में बैठ गई कि चाहे हरिश्चन्द्र की भाँति दु:ख उठाना पड़े, पर सत्य को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

जब मैं केवल तेरह वर्ष का था, तभी मेरा विवाह कस्तूरबा के साथ हो गया था। मगर मेरी पढ़ाई चलती रही। पाँचवीं और छठी कक्षा में तो छात्रवृत्तियाँ भी मिली थीं।

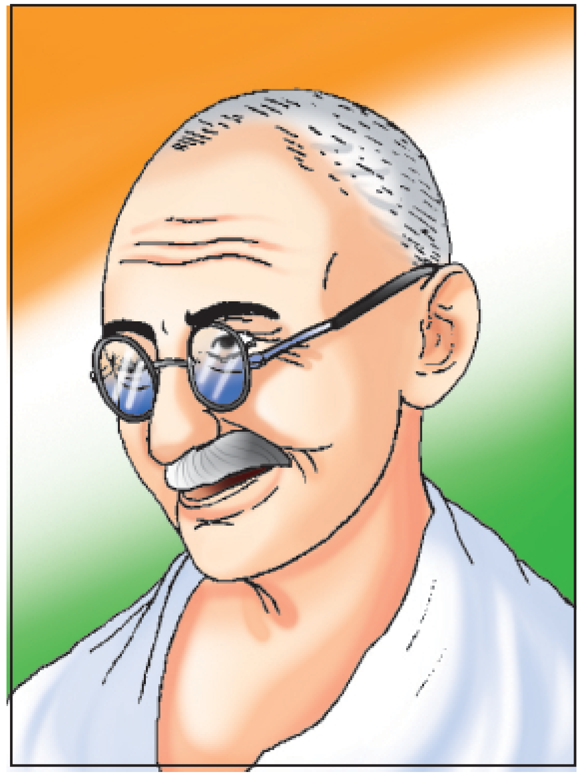

मैंने पुस्तकों में पढ़ा था कि खुली हवा में घूमना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है। यह बात मुझे अच्छी लगी और तभी से मैंने सैर करने की आदत डाल ली। सैर करना भी एक प्रकार का व्यायाम ही है। इससे मेरा शरीर मज़बूत हो गया।

एक भूल की सज़ा मैं आज तक पा रहा हूँ। पढ़ाई में अक्षर अच्छे होने की ज़रूरत नहीं, यह ग़लत विचार मेरे मन में इंग्लैंड जाने तक रहा। आगे चलकर दूसरों के मोती जैसे अक्षर देखकर मैं बहुत पछताया। मैंने देखा कि अक्षर बुरे होना अपूर्ण शिक्षा की निशानी है। बाद में मैंने अपने अक्षर सुधारने का प्रयत्न किया। परन्तु पके घड़े पर कहीं मिट्टी चढ़ सकती है ?

सुलेख शिक्षा का ज़रूरी अंग है। उसके लिए चित्रकला सीखनी चाहिए। बालक जब चित्रकला सीखकर चित्र बनाना जान जाता है, तब यदि अक्षर लिखना सीखे तो उसके अक्षर मोती जैसे हो सकते हैं।

मेरे संस्कृत शिक्षक काम लेने में बड़े सख्त थे। फ़ारसी के शिक्षक नरम थे। विद्यार्थी आपस में बातें करते कि फ़ारसी बड़ी सरल है। यह सुनकर मैं ललचाया और एक दिन फ़ारसी की कक्षा में जा बैठा। यह देखकर संस्कृत-शिक्षक ने मुझे बुलाया और समझाया, 'तुम्हें संस्कृत समझने में कोई कठिनाई हो तो मुझे बताओ। मैं तो सब विद्यार्थियों को अच्छी तरह संस्कृत पढ़ाना चाहता हूँ। आगे चलकर उसमें रस ही रस है। देखो, हिम्मत न हारो। तुम फिर मेरी कक्षा में आकर बैठो।' मैं उन शिक्षक के प्रेम के कारण इंकार न कर सका। आज भी उनका उपकार मानता हूँ क्योंकि आगे चलकर मैंने समझा कि संस्कृत का अच्छा अध्ययन किए बिना न रहना चाहिए।

मैं हाई स्कूल में मंदबुद्धि विद्यार्थी नहीं माना जाता था। पर जहाँ तक याद है, मुझे कभी अपनी होशियारी का गर्व नहीं रहा। इनाम या छात्रवृत्ति पाने पर मुझे आश्चर्य होता था। लेकिन अपने आचरण की मुझे बड़ी चिंता रहती थी। इसमें यदि कोई भूल हो जाती, तो मेरी आँखों में आँसू भर आते। शिक्षक का कुछ कहना ही मेरे लिए असह्य होता, अपने से बड़ों तथा शिक्षकों का अप्रसन्न होना मुझसे सहन नहीं हो पाता था। मुझे याद नहीं कि मैंने अपने शिक्षक या सहपाठी से कभी झूठ बोला हो। मेरे हाथों कोई ऐसा काम हो जिसके लिए शिक्षक मुझे दंड दें, यह मेरे लिए असह्य था। मुझे याद है कि एक बार मुझे मार खानी पड़ी

थी। मुझे मार का दु:ख न था। पर मैं दंड का पात्र समझा गया, इस बात का मुझे बड़ा दु:ख था। यह बात पहली या दूसरी कक्षा की है।

दूसरी बात सातवीं कक्षा की है। उस समय के हमारे हैडमास्टर कड़ा अनुशासन रखते थे, फिर भी वे विद्यार्थियों में प्रिय थे। वे स्वयं ठीक काम करते और दूसरों से भी ठीक काम लेते थे। पढ़ाते अच्छा थे। उन्होंने ऊपर की कक्षा के विद्यार्थियों के लिए व्यायाम और क्रिकेट अनिवार्य कर दिए थे। मेरा मन इनमें न लगता था। खेलना अनिवार्य होने से पहले तो मैं कभी व्यायाम करने, क्रिकेट या फुटबाल खेलने गया ही नहीं था। वहाँ न जाने में मेरा संकोची स्वभाव भी एक कारण था। अब मैं यह देखता हूँ कि व्यायाम के प्रति यह अरुचि मेरी ग़लती थी। उस समय मेरे मन में यह ग़लत विचार घर किए हुए था कि व्यायाम का शिक्षा के साथ कोई संबंध नहीं है। बाद में समझा कि पढ़ने के साथ-साथ व्यायाम करना भी बहुत ज़रूरी है।

व्यायाम में अरुचि का दूसरा कारण था, पिताजी की सेवा करने की तीव्र इच्छा। स्कूल बंद होते ही तुरन्त घर जाकर उनकी सेवा में लग जाता। अब व्यायाम अनिवार्य होने से इस सेवा में विघ्न पड़ने लगा। मैंने पिताजी की सेवा के लिए व्यायाम से छुटकारा पाने का प्रार्थना-पत्र दिया। पर हैडमास्टर साहब कब छोड़ने वाले थे।

एक शनिवार को स्कूल सवेरे का था। शाम को चार बजे व्यायाम के लिए जाना था। मेरे पास घड़ी नहीं थी। आकाश में बादल थे। इससे समय का पता न चला। बादलों से धोखा खा गया। जब पहुँचा तो सब जा चुके थे। दूसरे दिन मुझसे कारण पूछा गया। मैंने जो बात थी, बता दी। उन्होंने उसे नहीं माना और मुझे एक या दो आना, ठीक से याद नहीं कितना, दंड देना पड़ा। मैं झूठा बना। मुझे भारी दु:ख हुआ। मैं झूठा नहीं हूँ, यह कैसे सिद्‌ध करूँ ? कोई उपाय न था। मैं मन मारकर रह गया। रोया। बाद में समझा कि सच बोलने वाले को असावधान भी नहीं रहना चाहिए।

अभ्यास

शब्दार्थ

सत्यप्रिय	=	सत्य से प्रेम करने वाला	धार्मिक	=	धर्म से जुड़ा, धर्म का
सत्यवादी	=	सच बोलने वाला	पितृभक्त	=	पिता की भक्ति
छात्रवृत्ति	=	वजीफ़ा	आचरण	=	चाल-चलन, व्यवहार
असह्‌य	=	जिसे सहा न जा सके	सहपाठी	=	साथ पढ़ने वाला
स्वास्थ्य	=	सेहत	व्यायाम	=	कसरत
अध्ययन	=	पढ़ना, पढ़ाई	अनुशासन	=	नियंत्रण, नियम का पालन
अनिवार्य	=	ज़रूरी	विघ्न	=	रुकावट

बताओ

1. गांधी जी का पूरा नाम क्या था ?
2. गाँधी जी का जन्म कब और कहाँ हुआ ?
3. गाँधी जी के माता-पिता का क्या नाम था ?
4. गाँधी जी ने श्रवण कुमार का चित्र देखकर मन में क्या सोचा ?
5. 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक देखने पर गाँधी जी के मन में क्या बात बैठ गई ?
6. गाँधी जी की किस भूल की सज़ा उन्हें जीवन-भर झेलनी पड़ी ?
7. गाँधी जी के लिए क्या बात असहय थी ?
8. गाँधी जी की व्यायाम में अरुचि के दो कारण कौन-से थे ?

चार या पाँच वाक्यों में उत्तर लिखो

1. गाँधी जी ने इस पाठ में अपने माता-पिता के बारे में क्या बताया है ?
2. 'सुलेख शिक्षा का ज़रूरी अंग है।' इसके बारे में गाँधी जी के क्या विचार थे ?
3. व्यायाम के लिए समय पर स्कूल न पहुँचने पर गाँधी जी को दु:ख क्यों हुआ ?

वाक्यों में प्रयोग करो

सत्यप्रिय = ______________________

साहसी = ______________________

उदार = ______________________

सत्यवादी = ______________________

धार्मिक = ______________________

स्वास्थ्य = ______________________

मंदबुद्धि = ______________________

पके घड़े पर मिट्टी चढ़ना = ... ______________________

मोती जैसे अक्षर होना = ... ______________________

धोखा खाना = ... ______________________

मन मारकर रह जाना = ... ______________________

'अ' लगाकर विपरीत शब्द बनाओ

अ + प्रसन्न	= अप्रसन्न	अ + रुचि	= ______
अ + सत्य	= ______	अ + न्याय	= ______
अ + पूर्ण	= ______	अ + सावधान	= ______

बताओ, इन शब्दों में मोटे किए हुए वर्ण 'र' पदेन (⁄) है या रेफ (̊) या 'ऋ' की मात्रा ' ृ'

अनिवार्य	= ̊ (रेफ)	छात्रवृत्ति	= ______
पितृभक्ति	= ृ (ऋ की मात्रा)	श्रवण	= ______
धार्मिक	= ______	सत्यप्रिय	= ______
हरिश्चन्द्र	= ⁄ (पदेन)	वर्ष	= ______
अपूर्ण	= ______	विद्यार्थी	= ______
संस्कृत	= ______	प्रेम	= ______
आश्चर्य	= ______	क्रिकेट	= ______

पाठ से ढूँढ़कर समान अर्थ वाले शब्द लिखो

स्कूल	______	कसरत	______
पुस्तक	______	हैरानी	______
अध्यापक	______	कठोर	______
पढ़ाई	______	तरीका	______
नाखुश	______	ज़रूरी	______

इसके लिए एक शब्द लिखो

जो दूसरों से संकोच करे	= ______
जिसे सदा सत्य प्यारा हो	= ______
जो सत्य के लिए आग्रह करे	= ______
जो सदा सत्य बोले	= ______
जो पिता का भक्त हो	= ______

(क) अंतर समझो और वाक्यों में प्रयोग करो

दंड = जुर्माना = मुझे दो रुपए **दंड** देना पड़ा।

दंड = सज़ा = पुलिस ने चोर को **दंड** दिया।

पात्र = बर्तन = ____________________

पात्र = अभिनेता = ____________________

भूल = गलती = ____________________

भूल = भूल जाना/याद न रहना = ____________________

कड़ा = हाथ में पहना जाने वाला = ____________________

कड़ा = कठोर = ____________________

दीवान = मंत्री, वज़ीर = ____________________

दीवान = जमघट, जमावड़ा, संग्रह = ____________________

आना = मूल्य (रुपया, आना, पैसा) = ____________________

जैसे 1 रुपये में सोलह आने होते थे।

आना = किसी व्यक्ति या वस्तु का कहीं से चलकर आना। = ____________________

(ख) सूक्ष्म अंतर समझो और वाक्यों में प्रयोग करो

सजा : सजाना = ____________________

सज़ा : दण्ड = ____________________

शोक : अफसोस = ____________________

शौक : पसंद = ____________________

चिंता : फिक्र = ____________________

चिता : शव जलाने हेतु लकड़ियों का ढेर = ____________________

पढ़ो, समझो और नये शब्द बनाओ

क् + ष = क्ष = अक्षर, ________, ________

त् + र = त्र = छात्र, ________, ________

ज् + ञ = ज्ञ = ज्ञान, ________, ________

श् + र = श्र = श्रवण, ________, ________

विपरीत शब्द बनाओ

इच्छा	=	अनिच्छा	उदार	=	अनुदार
दु:ख	=	_______	अनिवार्य	=	ऐच्छिक
दण्ड	=	_______	रुचि	=	_______

प्रयोगात्मक व्याकरण

1. मैं भी **श्रवण कुमार** की तरह बनूँगा।
2. मैं **फुटबॉल** खेलने नहीं गया था।
3. यह विचार मेरे मन में **इंग्लैंड** जाने तक रहा।
4. मुझे इस बात का **दु:ख** है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'श्रवण कुमार' एक व्यक्ति, 'फुटबाल' एक वस्तु 'इंग्लैंड' एक स्थान तथा 'दु:ख' एक भाव का नाम है। **ये नाम ही संज्ञा कहलाते हैं।**

अत: किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

निम्नलिखित वाक्यों में से संज्ञा शब्द छाँटिये

1. वे राजकोट के दीवान थे। ☐
2. सभी को हरिश्चन्द्र की तरह सत्यवादी बनना चाहिए। ☐
3. सत्य को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। ☐
4. मैंने कभी झूठ नहीं बोला। ☐
5. मैं तुरंत उनकी सेवा में लग जाता था। ☐
6. लेकिन अपने आचरण की मुझे बड़ी चिंता रहती थी। ☐

योग्यता विस्तार

अपने स्कूल के पुस्तकालय से श्रवण कुमार, महात्मा गाँधी, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, लाला लाजपत राय आदि की जीवनियाँ लेकर पढ़ो। जो गुण आप उनसे सीखो उसे अपनी डायरी में नोट करो और अपने आचरण में लाओ।

हाँ या नहीं में उत्तर दो

क्या आप सैर करने जाते हो ? – हाँ/नहीं

क्या आप फुटबाल खेलते हो ? – हाँ/नहीं

क्या आप क्रिकेट खेलते हो ? – हाँ/नहीं

क्या आप व्यायाम/योग करते हो ?– हाँ/नहीं

क्या आप चित्रकला में रुचि रखते हो – हाँ/नहीं

क्या आप नाटक में रुचि रखते हो – हाँ/नहीं

ऊपर लिखी जिस बात में आपकी अधिक रुचि है उस पर अन्यथा इनके अलावा किसी अन्य में जैसे संगीत, दौड़ आदि में आपकी रुचि है तो उस पर पाँच वाक्य लिखें।

विचारों को प्रकट करने का साधन **भाषा** होती है तथा किसी भाषा को चिह्नों में लिखने की प्रणाली को **लिपि** कहते हैं।

भाषा	लिपि
संस्कृत	देवनागरी
हिन्दी	देवनागरी
पंजाबी	गुरुमुखी
अंग्रेजी	रोमन
उर्दू	फ़ारसी

समझो और संकेतों की सहायता से अपनी आत्मकथा लिखो।

अपने बारे में लिखी कहानी को आत्मकथा कहते हैं। आपने गाँधी जी की आत्मकथा पढ़ी। इसमें से कौन-कौन से गुण आप अपने जीवन में अपनायेंगे। लिखो।

शब्द संकेत

________________ * माता-पिता की सेवा करना

________________ * शिक्षक का आदर करना

________________ * सत्य बोलना

________________ * खुली हवा में सैर करना

________________ * सुलेख

________________ * पढ़ने के साथ व्यायाम करना

पाठ–3

नगर की सुंदरता

महाराज कृष्ण देव विजय नगर को अत्यधिक साफ़–सुथरा और सुंदर बनाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने मंत्री को अपनी इच्छा से अवगत कराया। मंत्री महाराज का आदेश पाते ही विजय नगर को सजाने–सँवारने में लग गया। कुछ ही दिनों में वहाँ का नक्शा ही बदल गया। विजय नगर की सुंदरता का बखान दूर–दूर तक होने लगा। सैलानियों का समूह उसकी सुंदरता को देखने के लिए उमड़ पड़ा।

महाराज की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने कहा–'यदि विजय नगर की सुंदरता में किसी को कोई कमी दिखाई देती है तो वह अपना विचार व्यक्त कर सकता है।'

दरबार में उपस्थित सभी लोगों ने एक स्वर में कहा 'विजय नगर की सुंदरता का कोई जवाब नहीं है। हमें उसमें कोई कमी नहीं दिखाई देती।'

सभी ने विजय नगर की प्रशंसा की। किन्तु तेनालीराम चुप बैठा रहा। उसे चुप देख राजपुरोहित ने महाराज से कहा–'महाराज तेनालीराम चुपचाप बैठे हैं। मुझे लगता है–ये विजय नगर की सुंदरता से खुश नहीं हैं।'

यह सुनते ही महाराज ने तेनालीराम से सवाल किया–'तेनालीराम चारों ओर विजय नगर की सराहना हो रही है। दरबार के सभी लोग यह सुनकर बहुत खुश हैं। लेकिन तुम गुमसुम क्यों हो ?'

'महाराज विजय नगर की सुंदरता में कुछ कमी रह गई है।' तेनालीराम ने अपनी चुप्पी तोड़ते हुए कहा।

'कैसी कमी ? महाराज ने आश्चर्यचकित होकर पूछा।'

'उस कमी को देखने के लिए आपको मेरे साथ नगर का भ्रमण करना पड़ेगा।'

'मंजूर है। लेकिन तुम यदि कमी को सिद्‌ध नहीं कर पाये तो तुम्हें मृत्यु दंड दिया जायेगा।'

'मंजूर है महाराज।'

महाराज, तेनालीराम और कुछ दरबारी विजयनगर का भ्रमण करने निकले। महाराज की सवारी एक सुनसान इलाके से गुज़र रही थी। जब वे बस्ती में पहुँचे तो लोग उनकी जय–जयकार करने लगे। लेकिन जय–जयकार करने वाले लोग मंत्रियों के चमचे थे। प्रजा में कोई उत्साह नहीं दिखाई दिया। महाराज और आगे बढ़े तो अँधेरा ही अँधेरा था। वहाँ का माहौल बहुत गंदा हो गया था। विजय नगर की सुंदरता के चक्कर में बस्ती की साफ़–सफ़ाई रोक दी गई थी। वहाँ के लोग तरह–तरह की बीमारियों से ग्रस्त थे। प्रजा पर नये–नये कर लगा दिए गए थे।

प्रजा को दु:खी देखकर महाराज का दिल रो पड़ा।

महाराज ने दु:खी नज़रों से तेनालीराम को देखा। तेनालीराम ने अपनी बात को साबित करते हुए कहा कि 'अब पहले जैसी बात नहीं रही महाराज। प्रजा के हृदय में आपके प्रति घृणा पैदा हो गई है। विजय नगर को सुंदर बनाने में यही सबसे बड़ी कमी रह गई है। काश ! मंत्री लोग प्रजा की सुविधाओं पर ध्यान देते तो आज ये स्थिति न उत्पन्न होती।'

तेनालीराम की बातों को सुनते ही महाराज ने तुरंत आदेश दिया कि 'प्रजा के सुंदर जीवन के बिना विजय नगर की सारी सुंदरता बेकार है। अत: बस्ती की गंदगी को साफ़ किया जाए, बीमारों का इलाज कराया जाए और बढ़े हुए करों को वापस ले लिया जाए।'

महाराज के आदेश को तुरंत अमल में लाया गया। उसी दिन से वे तेनालीराम को बहुत अधिक मान–सम्मान देने लगे।

अभ्यास

शब्दार्थ

अत्यधिक	:	बहुत ज़्यादा	अवगत	:	जानकारी
सैलानी	:	घूमने फिरने का शौकीन	भ्रमण	:	घूमना
राज पुरोहित	:	राजा के धार्मिक कृत्य करने वाला	कर	:	शुल्क (टैक्स)
अमल	:	व्यवहार	सराहना	:	प्रशंसा

बताओ

1. महाराज कृष्णदेव क्या करना चाहते थे ?
2. सैलानियों का समूह क्यों उमड़ आया ?
3. राजा के पूछने पर तेनालीराम क्यों चुप रहे ?
4. कृष्णदेव ने कमी सिद्ध न कर पाने पर क्या शर्त बतायी ?
5. जय-जयकार करने वाले लोग कौन थे ?
6. बस्ती के लोगों की दशा कैसी थी ?
7. प्रजा के सुंदर जीवन के लिए राजा ने क्या आदेश दिया ?
8. इस कहानी से क्या संदेश मिलता है ?

विलोम शब्द लिखो

राजा : रंक

दु:खी : ______

सुंदर : ______

अंधेरा : ______

विजय : ______

गंदगी : ______

सम्मान : ______

उपस्थित : ______

समानार्थक शब्द लिखो

राजा : नरेश

जीवन : ______

खुशी : ______

सैलानी : ______

मृत्यु : ______

प्रश्न : ______

संज्ञा शब्द छाँटकर लिखो

1. मुझे लगता है ये विजयनगर की सुंदरता से खुश नहीं है।
2. तेनालीराम ने अपनी चुप्पी तोड़ते हुए कहा।
3. महाराज की खुशी का ठिकाना न रहा।
4. प्रजा में कोई उत्साह नहीं दिखाई दिया।

शब्द में से बने बनाए शब्द ढूँढकर लिखो

तेनालीराम

नाल नाली लीर राम

महाराज

सुनसान

चुपचाप

सुराहना

राजपुरोहित

मुहावरों को वाक्यों में प्रयोग करो

	मुहावरा	अर्थ	वाक्य
1.	उमड़ पड़ना	जोश में आ जाना	______
2.	दिल रो पड़ना	अफसोस होना	______
3.	खुशी का ठिकाना न रहना	बहुत खुश होना	______
4.	एक स्वर में कहना	मिलकर कहना	______
5.	चुप्पी तोड़ना	मौन तोड़ना, बोलना	______

विराम चिह्न लगाओ

1. महाराज तेनालीराम चुपचाप बैठे हैं
2. कैसी कमी महाराज ने हैरानी से पूछा
3. लेकिन तुम गुमसुम क्यों हो
4. काश मंत्री लोग प्रजा की सुविधाओं पर ध्यान देते

अंतर समझो व वाक्यों में प्रयोग करो

वाक्य

1.	चमचा	:	चम्मच	________
	चमचा	:	चापलूसी करने वाला	________
2.	अमल	:	नशा	________
	अमल	:	काम, क्रिया, व्यवहार	________
3.	चक्कर	:	मोड़, घुमाव	________
	चक्कर	:	उलझन	________
4.	नक्शा	:	रंगरूप, बनावट	________
	नक्शा	:	मानचित्र	________

कुछ करने के लिए

किसी बस्ती में अपने अभिभावक/अध्यापक के साथ जाकर वहाँ के लोगों की दशा व बस्ती की दशा पर अपने विचार लिखो। आप उसके सुधार के लिए क्या करेंगे ?

पाठ–4

हम सुमन एक उपवन के

हम सब सुमन एक उपवन के।
एक हमारी धरती सबकी
जिसकी मिट्टी में जन्में हम,
मिली एक ही धूप हमें है
सींचे गए एक जल से हम।

पले हुए हैं झूल-झूलकर
पलनों में हम एक पवन के।
सूरज एक हमारा, जिसकी
किरणें उर की कली खिलातीं,
एक हमारा चाँद, चाँदनी
जिसकी हम सबको नहलाती।

मिले एक से स्वर हमको हैं
भ्रमरों के मीठे गुंजन के।
रंग-रंग के रूप हमारे
अलग-अलग है क्यारी-क्यारी
लेकिन हम सबसे मिलकर ही
है उपवन की शोभा सारी।
एक हमारा माली, हम सब

रहते नीचे एक गगन के।
काँटों में खिलकर हम सबने
हँस-हँस कर है जीना सीखा,
एक सूत्र में बँधकर हमने
हार गले का बनना सीखा।
सबके लिए सुगंध हमारी
हम श्रृंगार धनी-निर्धन के।

अभ्यास

शब्दार्थ

सुमन	:	फूल	उपवन	:	बगीचा
पवन	:	वायु	उर	:	हृदय
भ्रमर	:	भौंरा	एक सूत्र	:	इकट्ठे होकर
श्रृंगार	:	सजावट, शोभा			

बताओ

1. उपवन के फूलों को क्या-क्या समान चीज़ें प्राप्त होती हैं?
2. उपवन की शोभा किनसे बनती है ?
3. फूलों ने हँसकर जीना किससे सीखा है ?
4. 'एक सूत्र में बँधकर हमने, हार गले का बनना सीखा' इस काव्य-पंक्ति का क्या अर्थ है ?
5. फूल अपनी सुगंध किसे देता है ?

चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखो

1. कवि ने फूल के द्वारा क्या संदेश दिया है ? पाँच वाक्यों में लिखो।
2. प्रकृति जैसे मिट्टी, वायु, सूरज, चाँद, भँवरे अपने गुण देने में कोई भेदभाव नहीं करते। वे निःस्वार्थ भाव से देते हैं। इसी प्रकार पाँच उन प्राकृतिक वस्तुओं के नाम लिखो जो सबको समान भाव से देते रहते हैं।

सरलार्थ करो

काँटों से खिलकर हम सबने,
हँस-हँस कर है जीना सीखा,
एक सूत्र में बँधकर हमने,
हार गले का बनना सीखा।

सबके लिए सुगंध हमारी
हम शृंगार धनी-निर्धन के।

वाक्यों में प्रयोग करो

उर की कली खिलना	=	खुश होना	______________
गले का हार बनना	=	अतिप्रिय, सदा साथ लगे रहना	______________

समानार्थक शब्द लिखो

सुमन	=	**प्रसून**
उपवन	=	______
धरती	=	______
जल	=	______
पवन	=	______
सूरज	=	______
चाँद	=	______
भ्रमर	=	______
गगन	=	______

विपरीत शब्द मिलाओ

धरती	दुर्गंध
धूप	अंधेरी
चाँदनी	निर्धन
सुगंध	छाया
धनी	आकाश

नये शब्द बनाओ

सूत्र	=	त् + र = त्र, पुत्र, ...
शृंगार	=	श् + ऋ = शृं, शृंग, ...

अध्यापन संकेत : अध्यापक इस कविता को पढ़ाते हुए बच्चों को बताए कि देखो कवि की कल्पना का चमत्कार ! एक फूल के माध्यम से एक ओर तो प्रकृति की नि:स्वार्थ देन की ओर संकेत किया है तो दूसरी ओर देश की एकता का संदेश है। अलग-अलग प्राँतों, भाषा, वेशभूषा, त्योहार, संस्कृति के होते हुये भी हम सब एक हैं। हमारा एक माली अर्थात् ईश्वर है जो हमें सुख-दु:ख में जीना सिखाता है।

पाठ–5

हमारा स्वास्थ्य

दुनिया में सबसे पहला सुख नीरोगी काया है। हम स्वस्थ हैं तो हमारे चेहरे पर रौनक एवं चमक रहती है। हमारा मन उमंग और उल्लास से भरा रहता है। हम हर काम को स्फूर्ति से करते हैं। आलस्य पास नहीं फटकता। रात को नींद भी अच्छी आती है। इसके विपरीत जब स्वास्थ्य ठीक न हो तो कुछ भी अच्छा नहीं लगता। न भूख है, न नींद है। स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है। इसलिए कहा भी गया है कि स्वस्थ तन में स्वस्थ मन और मस्तिष्क का निवास होता है।

तन और मन स्वस्थ रहे इसके लिए सबसे पहली आवश्यकता है–स्वच्छता। स्वच्छता तन की, मन की, घर की और बाहर की भी।

तन की अर्थात् शरीर की स्वच्छता के लिए हमें शरीर के सभी अंगों को साफ़ रखना चाहिए। क्योंकि हमारी त्वचा में छोटे–छोटे छिद्र होते हैं। इन्हें रोम कूप भी कहा जाता है। क्या आपने कभी ध्यान से देखा है ? इनसे ही तो पसीना निकलता है। जिस पर प्रतिदिन धूल के कण जम जाते हैं। जिससे त्वचा के छिद्र बंद हो जाते हैं। आजकल तो पाउडर, जैल, क्रीम, इत्र, खुशबूदार पदार्थ (डियो) आदि छिड़कने का फैशन हो गया है। इनसे भी छिद्र बंद होने लगते हैं। जिससे शरीर की गन्दगी बाहर नहीं निकल पाती और अनेक रोग पनपने लगते हैं।

हमें अपनी त्वचा के अनुरूप साबुन का प्रयोग करते हुए नियमित स्नान करना चाहिए। शौच के बाद हाथ साबुन से अवश्य धोने चाहिए। स्नान एवं हाथ–मुँह धोने के बाद पोंछने के लिए अपना ही तौलिया प्रयोग करना चाहिए। एक–दूसरे का तौलिया प्रयोग करने से दूसरों के त्वचा रोग हमें भी लग सकते हैं।

तन की सफ़ाई के साथ–साथ कपड़ों की सफ़ाई भी आवश्यक है। जहाँ तक संभव हो बिना धुले कपड़े नहीं पहनने चाहिए।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए हमें संतुलित आहार खाना चाहिए जिसमें चोकर वाले आटे की रोटी, हरी सब्ज़ियाँ, दालें, फल, दही, पनीर और अंकुरित अनाज आदि शामिल हों। दूध अपने–आप में संतुलित आहार है। इसे तो सुबह–शाम पीना ही चाहिए। इन सबसे हमारे शरीर में ऊर्जा उत्पन्न होती है।

हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि खाने की वस्तुएँ ढकी हों, उन पर धूल मिट्टी न पड़ी हो, मक्खियाँ न बैठी हों। फल और सब्ज़ियाँ बिना धोए न खायें। इनसे भी अनेक रोग होने का भय हो सकता है।

शुद्ध, ताज़ा और पौष्टिक आहार के साथ-साथ हमें पेयजल की स्वच्छता पर भी ध्यान देना चाहिए। जहाँ तक हो सके नल, हैंडपम्प या टंकी का पानी छानकर या पानी उबालकर पीना चाहिए। आजकल तो बाज़ार में अनेक प्रकार के फ़िल्टर मौजूद हैं। हमें दिन में आठ-दस गिलास शुद्ध पानी अवश्य पीना चाहिए। पेट के रोगी को तो खासतौर पर उबालकर पानी पीना चाहिए।

तन के साथ-साथ मन की स्वच्छता एवं तन्दरुस्ती के लिए खेल-खेलना, आसन करना, सुबह-शाम सैर करना, योगाभ्यास करना आदि बड़े लाभकारी हैं। खुली हवा में सांस लेना और व्यायाम करना, नियमित समय पर सोना और उठना आदि से तन ही नहीं मन भी हृष्ट-पुष्ट होता है। जीवन में अपनी सोच सकारात्मक रखनी चाहिए। ध्यान आदि लगाने से मन शाँत होता है, स्मरण शक्ति एवं एकाग्रता बढ़ती है। अच्छा प्रेरणादायक साहित्य एवं शिक्षाप्रद महापुरुषों की जीवनियाँ इत्यादि पढ़ने से मन-मस्तिष्क में सकारात्मक सोच पैदा होती है जोकि स्वस्थ रहने का सुनहरी नियम है।

तन-मन के बाद घर की सफ़ाई का भी हमारे स्वास्थ्य पर बहुत प्रभाव पड़ता है। घर को प्रतिदिन झाड़ू लगाकर, फिनायल डालकर पोछा तो लगाना ही चाहिए। साथ में अलमारियों आदि की सफ़ाई करके घर का सब सामान यथा-योग्य स्थान पर ही रखना चाहिए। ऐसा न करने से जहाँ एक तरफ अस्त-व्यस्त सामान से मन की एकाग्रता पर बुरा प्रभाव पड़ता है वहीं दूसरी तरफ ज़रूरत के समय वस्तु न मिलने पर घर में कलह का कारण बनता है।

घर में लगे जाले आदि भी नियमित रूप से उतारने ज़रूरी हैं क्योंकि इनसे भी गंदगी के कीटाणु फैलने का भय रहता है। गंदगी से अनेक बीमारियाँ पैदा होती हैं जो हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं।

घर की सफ़ाई के साथ-साथ घर के आस-पास व बाहर की सफ़ाई पर भी हमें ध्यान ज़रूर देना चाहिए। घर की सफ़ाई के बाद कूड़ा बाहर नहीं फेंकना चाहिए। कूड़ा-कर्कट ढक्कनदार डिब्बे में ही डालना चाहिए। गड्ढों एवं नालियों में पानी एकत्रित नहीं होने देना चाहिए। गंदे पानी से मलेरिया, हैजा आदि रोग फैलते हैं। तो साफ़ ठहरे हुए पानी से डेंगू आदि रोग फैलते हैं। इसलिए कूलरों, बाल्टियों, डिब्बों, पानी की टंकियों में पानी को ढक कर रखना चाहिए। ज़रूरत न होने पर उन्हें खाली करके उल्टा करके रखना चाहिए।

इस तरह अपने स्वास्थ्य को अच्छे से अच्छा रखने के लिए हमें अपनी दिनचर्या में सब अच्छी बातें शामिल करनी चाहिए। क्योंकि किसी ने ठीक कहा है-एक तन्दरुस्ती हज़ार नियामत।

प्रसन्नचित्त रहना, क्रोध न करना, चिंता न करना, कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य न खोना, धीरज से फैसले लेना, चुनौतियों भरे काम करने के लिए तत्पर रहना आदि भी अच्छे स्वास्थ्य की निशानी है।

अभ्यास

शब्दार्थ

फ़िनायल	=	मक्खी-मच्छर दूर भगाने वाली दवा	त्वचा	=	चमड़ी
विभिन्न	=	कई तरह की	छिद्र	=	सूराख
पौष्टिक	=	पुष्ट करने वाला	स्फूर्ति	=	फुर्ती, तेजी
हानिकारक	=	नुकसान पहुँचाने वाला			
संतुलित	=	नपा-तुला, सब प्रकार के आवश्यक तत्वों से भरपूर			
योगाभ्यास	=	विशेष प्रकार के आसन जिनके द्‌वारा व्यायाम किया जाता है			

पढ़ो, समझो और लिखो

स्वस्थ	=	**अस्वस्थ**	दूषित	=	**स्वच्छ**
योग्य	=	______	स्फूर्ति	=	______
निश्चित	=	______	उचित	=	______
पर्याप्त	=	______	सकारात्मक	=	______

पढ़ो और समझो

स्वस्थ	=	स्वास्थ्य	संतुलित	=	संतुलन
आवश्यक	=	आवश्यकता	नियमित	=	नियम
स्वच्छ	=	स्वच्छता	गरम	=	गरमी

नित्य कर्म की सूची दी गई है, इसे सही क्रम दो

सफाई करना, दातुन करना, सोना, स्नान करना, सैर करना, शौच जाना, पढ़ना, व्यायाम करना

1.	______	2.	______
3.	______	4.	______
5.	______	6.	______
7.	______	8.	______

वाक्य पूरे करो

1. हमें बिना धुले ______ नहीं पहनने चाहिए।
2. शौच के बाद हाथ ______ से अवश्य धोने चाहिए।
3. ______ अपने आप में संतुलित आहार है।
4. फल व ______ बिना धोए न खाएं।
5. घर में ______ लगाकर, फिनायल डालकर पोछा लगाना चाहिए।
6. स्वच्छता तन की, मन की, ______ की और बाहर की भी।

बताओ

1. दुनिया में सबसे पहला सुख कौन-सा है ?
2. पाऊडर के छिड़काव से त्वचा पर क्या दुष्प्रभाव पड़ता है ?
3. दिन में कितने गिलास और कैसा पानी पीना चाहिए ?
4. पेट के रोगी को कैसा पानी पीना चाहिए ?
5. सकारात्मक सोच कैसे पैदा होती है ?
6. गंदे पानी से कौन-कौन से रोग होते हैं ?
7. साफ़ ठहरे पानी से कौन-कौन से रोग फैलने का डर होता है ?

चार-पाँच पंक्तियों में उत्तर लिखो

1. स्वस्थ व्यक्ति के क्या लक्षण हैं ?
2. शरीर की सफ़ाई कैसे रखनी चाहिए ?
3. संतुलित आहार में क्या-क्या होना चाहिए ?
4. शुद्ध जल ही क्यों पीना चाहिए ?
5. प्रत्येक वस्तु यथा-स्थान पर न होने से क्या-क्या होता है ?
6. 'स्वस्थ तन में स्वस्थ मन निवास करता है', स्पष्ट करें।

इन शब्दों को बोलकर सही ढंग से लिखो

शरीर	आवश्यक	शुद्ध	शर्त	हमेशा	रोशनी
सफ़ाई	उल्लास	पसीना	संदेह	सब्ज़ी	सुखी

पहली पंक्ति में बार-बार आई ध्वनि है 'श'

दूसरी पंक्ति में बार-बार आई ध्वनि है **'स'**

अब इन्हें पढ़ो

श शा शि शी शु शू शे शै शो शौ

स सा सि सी सु सू से सै सो सौ

श्रुतलेख

स्वास्थ्य,	मस्तिष्क,	उमंग,	स्फूर्ति,	पर्याप्त,	हृष्ट-पुष्ट।
त्वचा,	शुद्धता	तत्पर,	पौष्टिक,	संतुलित	योगाभ्यास।

रचनात्मक

1. अपनी छोटी बहन/भाई को पत्र लिखकर यह बतायें कि अच्छा स्वास्थ्य कैसे रखा जा सकता है ?

यह भी करो

1. शरीर, कपड़े, घर, आस-पड़ोस की नियमित सफ़ाई।
2. प्रतिदिन व्यायाम एवं सैर।
3. खाने पीने की वस्तुओं को ढक कर रखो।
4. शारीरिक अंगों की हमेशा सफ़ाई रखो।

अध्यापन संकेत : 'श' का उच्चारण स्थान है-तालु (मुँह के अंदर का वह ऊपरी भाग जो ऊपर वाले दाँतों पंक्ति और गले के कौए तक विस्तृत रहता है) जबकि 'स' का उच्चारण स्थान है-वर्त्स दाँत और मसूड़े के मिलने की जगह)

पाठ–6

हाथी कैसे तोला गया

बहुत समय पहले की बात है, हमारे देश में एक राजा राज करता था। प्रजा उसे बहुत चाहती थी।

राजा के पास एक हाथी था। जिसे वह बहुत प्यार करता था। वह हाथी को अपनी अत्यधिक मूल्यवान वस्तु समझता था। हाथी भी राजा को बहुत प्यार करता था और अनेक युद्धों में अपनी बहादुरी तथा साहस दिखा चुका था। यद्यपि अब वह बूढ़ा हो गया था और अधिक काम करने में असमर्थ था, फिर भी राजा का प्रेम उससे ज्यों का त्यों बना हुआ था। अब भी राजा कभी-कभी उस पर सवारी करता और हाथी भी उसे नगर में और जंगल में घुमा कर बहुत संतुष्ट होता।

एक बार राज्य में कुछ समय तक वर्षा नहीं हुई जिससे खाने-पीने की कमी हो गई। राजा ने जब प्रजा के पास अनाज कम होने की बात सुनी तो उसने तुरंत अनाज के भण्डार खोल दिए। राजा ने यह भी निश्चय किया कि वह निर्धन लोगों को अपने प्रिय हाथी के भार के बराबर तोल कर सोना बाँटेगा।

हाथी को कैसे तोला जाए कि उसके तोल के बराबर सोना निर्धनों में बाँटा जा सके। यह एक समस्या बन गई। उन दिनों न तो भार तोलने की बड़ी-बड़ी मशीनें थीं और न ही इतना बड़ा तराजू जिस पर भारी-भरकम हाथी खड़ा किया जा सके और उसका भार मालूम किया जा सके। जब राजा के मंत्री सोच-विचार कर भी कोई उपाय नहीं निकाल सके तो राजा ने घोषणा की कि राज्य का जो भी व्यक्ति हाथी तोलने का उपाय ढूँढ़ निकालेगा उसे सोने से भरी दस थैलियाँ इनाम में दी जायेंगी।

यह घोषणा बिजली की तरह चारों ओर फैल गई। सभी हाथी तोलने का उपाय खोजने में व्यस्त हो गए। कई दिन बीत गए, पर राज्य में किसी भी व्यक्ति ने कोई उपाय नहीं सुझाया।

कुछ सप्ताह बीतने पर, एक-दिन एक कर्मचारी ने हाँफते-हाँफते राजदरबार में प्रवेश किया और राजा से निवेदन किया-महाराज ! मैं एक बहुत अच्छा समाचार लाया हूँ। एक निर्धन मछुआ हाथी को तोलने का दावा करता है। वह समुद्र के किनारे एक छोटे-से गाँव में रहता है। उसकी शर्त यह है कि हाथी वहीं तोला जाए।

राजा ने कहा-'ठीक है। हमें शीघ्र ही उस गाँव में पहुँचना चाहिए।' बस फिर क्या था। अपने मंत्रियों और सैनिकों के साथ राजा उस गाँव की ओर चल पड़ा। रास्ते में अनेक लोग भी साथ हो लिए क्योंकि वे अचम्भित थे कि कोई हाथी को कैसे तोलेगा।

राजा अपने प्रिय हाथी पर सवार था और उसके पीछे थे ऊँट और घोड़े, फिर सैनिक और सबसे पीछे प्रजा जन। इस प्रकार यह लशकर मछुए के गाँव में जा पहुँचा। मछुआ अपनी मछली पकड़ने का जाल ठीक करने में व्यस्त था। जैसे ही राजा का हाथी वहाँ पहुँचा, मछुआ उठ खड़ा हुआ और झुककर राजा को प्रणाम किया।

'मैंने सुना है कि तुम मेरे हाथी को तोल सकते हो। मुझे हाथी तोलने की विधि बताओ। मैं तुम्हें धन-दौलत से मालामाल कर दूँगा', राजा बोला।

'महाराज। मैं आपको हाथी तोलने की विधि बता सकता हूँ परंतु उसमें कुछ समय लगेगा। पहले आपके कर्मचारी एक बड़ी नाव बनाने में मेरी सहयता करें'। मछुए ने उत्तर दिया।

'परन्तु नाव हाथी को कैसे तोलेगी ?', महाराज ने प्रश्न किया। मछुए ने हाथ जोड़ कर कहा-यदि मैं अपने तरीके से हाथी को न तोल सका तो मैं तब तक आपकी सेवा करूँगा जब तक नाव बनाने पर लगा धन चुकता न हो जाए।

राजा हैरान रह गया, फिर बोला 'तुम्हारी शर्त मुझे मंजूर है।' मछुए ने नाव बनाने के लिए सौ दिन का समय माँगा। राजा के आदमी दिन-रात एक करके नाव बनाने में लगे रहे। कारीगर गुप्त तरीके से हाथी को तोलने का भेद भी जानना चाहते थे, परंतु उनको कुछ भी ज्ञात न हो सका, क्योंकि वहाँ तो केवल नाव बनाने का ही काम हो रहा था।

ठीक सौवें दिन समुद्र के किनारे एक बहुत बड़ी नाव तैयार थी। राजा भी अपने हाथी, महावत, मंत्रियों तथा सभासदों के साथ वहाँ पहुँच गया। आसपास के गाँवों में से भी हज़ारों लोग इस अनोखे दृश्य को देखने के लिए आ पहुँचे। मछुए ने कई लोगों की सहायता से नाव को समुद्र में धकेला। अब बड़े-बड़े शहतीर लगाकर किनारे से नाव तक एक सपाट रास्ता बनाया गया। सभी आश्चर्य से देख रहे ते कि मछुआ कर क्या रहा है। तभी मछुए ने महावत के कान में कुछ कहा। महावत हाथी पर जा बैठा और उसके मस्तक पर अंकुश से कुछ संकेत करने लगा। हाथी शहतीरों पर पाँव रखता हुआ नाव पर जाने लगा तो लोग चिल्ला उठे, 'नाव टूट जाएगी। नाव डूब जाएगी।'

धीरे-धीरे कदम रखते हुए हाथी नाव पर चढ़ गया। नाव का कुछ भाग पानी में डूब गया। मछुए ने जहाँ तक पानी था, वहाँ एक निशान लगा दिया। अब उसने महावत से हाथी को नाव से उतारने को कहा। हाथी के बाहर आ जाने पर नाव पानी के ऊपर आ गई।

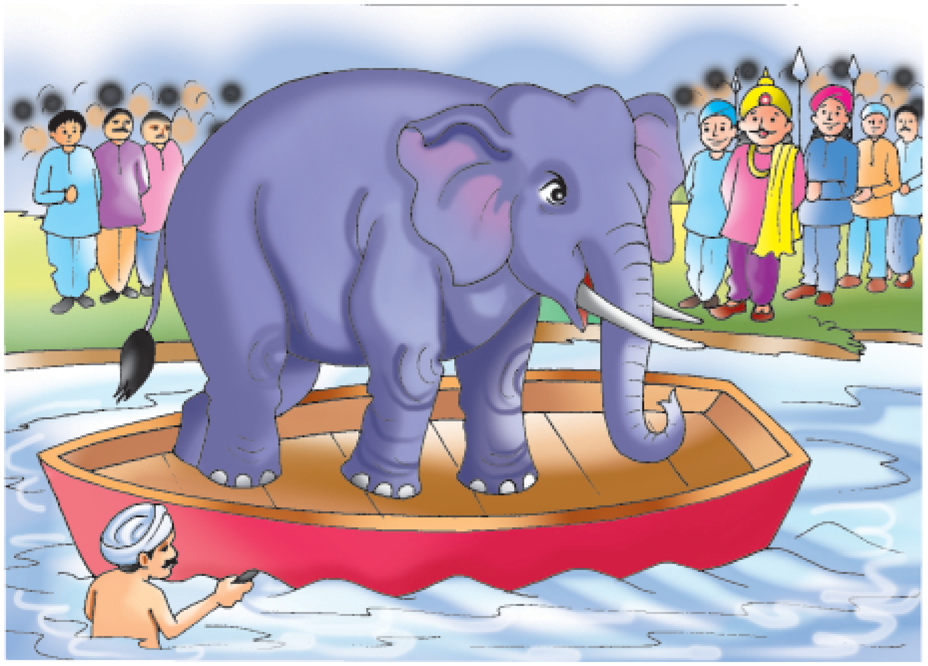

मछुआ राजा के पास पहुँचा और बोला–महाराज हाथी तुल गया। अब आप अपने सेवकों को सोना लाने की आज्ञा दें। सेवक सोने से-भरे थैले लेकर आगे बढ़े तो मछुए ने उन्हें नाव पर रखने के लिए कहा। सभी लोग अचंभित होकर सारा दृश्य देख रहे थे और मछुआ बार–बार नाव को देखता फिर और सोना लाने को कहता। धीरे–धीरे नाव का काफी भाग पानी में डूब गया। जब नाव अंकित चिह्न तक पानी में डूब गई तो मछुआ चिल्ला उठा–बस, बस हो गया। हाथी के बराबर सोना तुल गया। लीजिए महाराज हाथी के तोल के बराबर सोना तुल गया। लोग खुशी के मारे तालियाँ बजाने लगे और मछुए की बुद्धि की प्रशंसा करने लगे।

अभ्यास

शब्दार्थ

मूल्यवान	=	कीमती	निर्धन	=	गरीब
मछुआ	=	मछलियाँ पकड़ने का पेशा करने वाला	अचम्भित	=	हैरान
लशकर	=	सेना	कारीगर	=	दस्तकार
महावत	=	हाथी हाँकने वाला	सपाट	=	समतल
शहतीर	=	पाटन के नीचे दी जाने वाली बड़ी कड़ी	अंकित	=	निशान लगाना
अंकुश	=	लोहे की छोटी नुकीली छड़			

बताओ

1. राजा को अपना हाथी क्यों प्रिय था ?
2. राजा ने कितना सोना निर्धन लोगों में बाँटने का निश्चय किया ?
3. किस व्यक्ति ने हाथी तोलने का दावा किया ?
4. मछुए ने राजा से नाव बनाने के लिए कितने दिन का समय माँगा ?
5. मछुए की शर्त क्या थी ?

चार या पाँच वाक्यों में उत्तर लिखो

1. मछुए ने हाथी को कैसे तोला ? अपने शब्दों में लिखो।
2. आजकल हाथी को कैसे तोला जा सकता है ?
3. इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है ?

वाक्य पढ़ो और बताओ कि यह कहानी के अनुसार सही है या गलत

- हाथी राजा को बहुत प्रिय था। ☐
- सभी राजदरबार के लोग हाथी तोलने का उपाय खोज कर लाए। ☐
- मछुआ समुद्र के किनारे रहता था। ☐
- राजा के आदमी दिन-रात नाव बनाने में लगे रहे। ☐
- मछुए ने नाव को अकेले समुद्र में धकेला। ☐
- धीरे-धीरे कदम रखते हुए हाथी नाव पर चढ़ गया। ☐
- हाथी के बराबर सोना तुल गया–मछुए ने कहा। ☐

विपरीत शब्दों का मिलान करो

दिन	डरपोक
बूढ़ा	सम्पन्न
साहसी	रात
निर्धन	जवान
इनाम	रंक
एक	दंड
राजा	अनेक

पढ़ो, समझो और लिखो

राज–दरबार = राजा का दरबार　　धन–दौलत = **धन और दौलत**

प्रजा–जन = प्रजा के जन　　दिन–रात = ______

अनाज–भण्डार = ______　　प्रश्न–उत्तर = ______

हाथी के चित्र में से उपयुक्त समानार्थक शब्द चुनकर लिखो

राजा = नृप, ______

हाथी = ______, ______

पानी = ______, ______

समुद्र = ______, ______

नाव = ______, ______

सोना = ______, ______

विराम चिह्न लगाओ

कई दिन बीत गए पर राज्य में किसी भी व्यक्ति ने कोई उपाय नहीं सुझाया

परंतु नाव हाथी कैसे तोलेगी महाराज ने प्रश्न किया

उपयुक्त अक्षर लगाकर पाठ में आए शब्द को पूरा करो

1. मूल्य ______ न　　2. उ ______ य
3. सा ______ स　　4. म ______ आ
5. क ______ चारी　　6. श ______ ती ______
7. ______ हा ______ ज　　8. ______ र्त

शब्द में से कम से कम दो शब्द ढूँढ़कर लिखो

निकालेगा — निकाले काले लेगा

तराजू

सहायता

दरबार

मालामाल

महावत

प्रयोगात्मक व्याकरण

राजा ने अपने मंत्रियों से कहा कि तुममें से जो भी हाथी को तोलने का उपाय बताएगा उसे, मैं इनाम दूँगा। एक कर्मचारी ने राजा से कहा कि समुद्र के किनारे एक मछुआ रहता है। वह हाथी को तोलने का दावा करता है।

उपर्युक्त पंक्तियों में राजा, मंत्री और मछुआ शब्द संज्ञा हैं। यहाँ राजा ने अपने लिए 'मैं' मंत्रियों के लिए 'तुम' और 'उसे' तथा मछुए के लिए 'वह' शब्द प्रयोग किया है। **ये शब्द संज्ञा के स्थान पर आने के कारण सर्वनाम हैं।**

अतः संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयोग में आने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। अन्य सर्वनाम शब्द हैं–**उन्हें, उस, उसका, हम, मेरा, हमारा, तेरा, तुम्हारा, तुम, अपना, स्वयं आदि।**

रेखांकित शब्दों के स्थान पर उचित सर्वनाम का प्रयोग करके वाक्य दोबारा लिखो

1. हाथी को कैसे तोला जाए कि **हाथी** तोल के बराबर सोना तुल जाए।

2. राजा के पास एक हाथी था। **राजा हाथी को** बहुत प्यार करता था।

3. एक राजा था। प्रजा **राजा को** बहुत चाहती थी।

4. मछुए ने कहा कि **मछुआ** हाथी को तोलूँगा।

5. मछुए ने कहा कि राजा **राजा के** सेवकों को सोना लाने की आज्ञा दें।

पाठ–7

वैशाखी आई रे ...

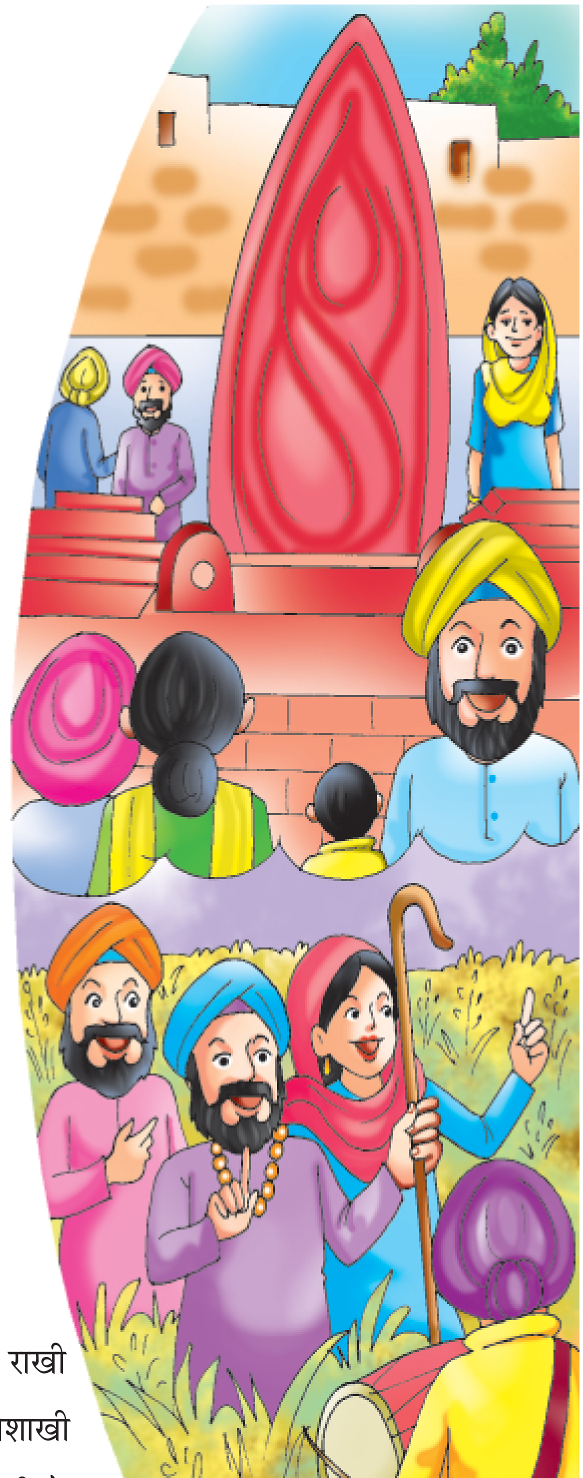

वैशाखी आई रे, वैशाखी आई रे
यादें हजारों साथ लाई रे ...

वैशाखी है याद दिलाती
जलियाँवाले बाग़ की माटी
आज़ादी अधिकार हमारा
हमें देश है अपना प्यारा,
खूनी कुआँ जो है कहलाता
डायर का वह ज़ुल्म बताता
बच्चे, बूढ़े और युवकों ने
सीने पे गोली खाई रे

वैशाखी आई रे ...

कैसे भुलाएं सन् सोलह सौ
निन्यानवे की वो वैशाखी
कलगीधर दशमेश पिता ने
करने को जब धर्म की राखी
पंथ खालसा सिरजन हेतु
बना आनन्दपुर साखी
अमृत छकाकर, सिंह सजाकर
जन–जन की चेतना जगाई रे

वैशाखी आई रे ...

खत्म हुई फ़सलों की राखी
देख ले जट्टा आई वैशाखी
कंबाइनों से फ़सल कटी है

मण्डी में वह आन बिकी है
धूम मची है अब मेलों की
भंगड़े, गिद्दे और खेलों की
कपड़े, लत्ते और गहनों की
खरीदारी ने धूम मचाई रे
वैशाखी आई रे ...

अभ्यास

शब्दार्थ

माटी	=	मिट्‌टी	सिरजन	=	सृजन
जुल्म	=	अत्याचार	निन्यानवे	=	99 की संख्या
राखी	=	रक्षा			
कम्बाइन	=	वह मशीन जिससे फसल काटने, दाना निकालने तथा भूसा अलग किया जाता है।			
दशमेश	=	दसवें गुरु गोबिंद सिंह जी			
साखी	=	साक्षी, गवाह, प्रमाण			

बताओ

1. पंजाब में फ़सल की कटाई से जुड़ा कौन-सा त्योहार मनाया जाता है ?
2. जलियाँवाले बाग़ में किसने गोलियाँ चलाई थीं ?
3. आनंदपुर साहिब में गुरु गोबिंद सिंह जी ने किसकी स्थापना की थी ?
4. वैशाखी पर किसान अपनी खुशी कैसे प्रकट करता है ?
5. पंजाब में वैशाखी पर कौन-सा गीत गाया जाता है ?

अपने अध्यापक से

* जलियाँवाले बाग़ की घटना सुनो।
* धर्म की रक्षा के लिए गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा स्थापित 'खालसा पंथ' की जानकारी प्राप्त करो।
* सिक्ख धर्म के दस गुरुओं के नाम लिखो और उनके बारे में जानकारी प्राप्त करो।

सरलार्थ करो

पंथ खालसा सिरजन हेतु
बना आनन्दपुर साखी
अमृत छकाकर, सिंह सजाकर
जन-जन की चेतना जगाई रे
वैशाखी आई रे ...

वैशाखी पर लगने वाले मेले का आनंद लें। अपनी डायरी में लिखें कि आपने वैशाखी का त्योहार कैसे मनाया ?

योग्यता विस्तार

जलियाँवाला बाग़ : अमृतसर में स्थित एक बाग़ जहाँ पर 13 अप्रैल 1919 को एक सभा का आयोजन किया गया था। जब लोग, जिनमें बच्चे, बूढ़े, जवान सभी थे, चुपचाप सुन रहे थे, तभी एक अंग्रेज़ अफसर जनरल डायर अपनी सशस्त्र सेना के साथ बाग़ में दाखिल हुआ। उसने अपनी फौज को गोलियाँ चलाने का आदेश दिया। उन्होंने चीखते-चिल्लाते, भागते हुए, दीवारों पर चढ़ते हुए, कूदते हुए, निहत्थे लोगों को निशाना बनाया। देश की स्वाधीनता के लिए हज़ारों की संख्या में लोग शहीद हुए। उन शहीदों के बलिदान ने देश को आज़ादी दिलाई। ऐसे नर-संहार का उदाहरण इतिहास में शायद ही कोई हो।

खूनी कुआँ : जलियाँवाला बाग़ में स्थित एक कुआँ। जब जनरल डायर ने गोलियाँ चलाई तो कुछ लोग जान बचाने के लिए इसमें कूद गए थे। उन्हें कूदते देखकर बहुत-से लोग इसमें गिरते गए, कुचले गए और मर गए। कहते हैं कि कुआँ लाशों से भर गया था। इसलिए इसे खूनी कुआँ कहा जाता है।

खालसा पंथ : सिक्खों के दसवें गुरु, गुरु गोबिन्द सिंह जी ने आनन्दपुर साहिब में सन् 1699 में वैशाखी के दिन एक विशाल जलसे का आयोजन किया था। गुरु जी ने धर्म की रक्षा के लिए 'पाँच प्यारों' का चुनाव किया था। ये पाँचों व्यक्ति अलग-अलग धर्मों और प्रदेशों के थे। लाहौर का क्षत्रिय भाई दयाराम, हस्तिनापुर का जाट भाई धर्मराय, द्वारिका का धोबी मोहकम चन्द, बिदर का नई साहब चन्द और पुरी का कहार हिम्मत राय। गुरुजी ने इन्हें 'पाँच प्यारों' के नाम से पुकारा और कहा कि यह 'पाँच प्यारे' अपने प्राणों की आहुति देकर भी अपने धर्म की रक्षा करेंगे।

योग्यता विस्तार

जैसे पंजाब में किसान और कृषि से जुड़ा त्योहार वैशाखी मनाया जाता है उसी प्रकार दक्षिण भारत के तमिलनाडु और आन्ध्र प्रदेश में जनवरी माह में मकर संक्राँति के अवसर पर कृषि से संबंधित पोंगल त्योहार मनाया जाता है। जैसे पंजाब में किसान गेहूँ की फ़सल की कटाई शुरू करते हैं उसी प्रकार तमिलनाडु में चावल की फ़सल की कटाई शुरू होती है। वैशाखी से भारतीय सम्वत् शुरू होता है। इसे नव वर्ष के रूप में मनाया जाता है।

पाठ–8

भाखड़ा बाँध

भाखड़ा बाँध स्वतंत्र भारत में बनाया गया सबसे पहला बाँध है। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इसे भारत का आधुनिक तीर्थ कहकर सम्मानित किया था। सचमुच यह है भी तीर्थ ही–भारत को सम्पन्न बनाने वाला और जन–जन के लिए खुशहाली लानेवाला।

बाँध वह निर्माण है जिसके द्वारा नदियों के पानी बाँध कर अथवा इकट्‌ठा कर आवश्यकता के समय उपयोग में लाया जाता है। नदियों का पानी सिंचाई के ही काम नहीं आता उससे बिजली भी उत्पन्न की जाती है, जो देश के उद्योग–धंधों तथा कल–कारखानों को चलाने के काम आती है। भाखड़ा बाँध का निर्माण ऐसी ही योजनाओं को ध्यान में रखकर किया गया है।

भाखड़ा बाँध पंजाब की राजधानी चंडीगढ़ से एक सौ पंद्रह किलोमीटर की दूरी पर है। यह आनन्दपुर से लगभग तीस किलोमीटर की दूरी पर सतलुज नदी पर बनाया गया है। भाखड़ा के पास सतलुज नदी दो पहाड़ों के बीच एक संकरे मार्ग से निकलती है। इससे नदी के पानी को इकट्‌ठा करने के लिए केवल एक ओर दीवार बनाने का कार्य शेष बचता है। ऐसा स्थान बाँध बनाने के लिए बहुत ही उपयुक्त समझा जाता है।

बाँध बनाने से पहले सतलुज के प्रवाह को बदला गया। इसके लिए पहले दो सुरंगें खोदी गईं। नदी का पानी इनमें से निकालकर बाँध का निर्माण शुरू किया गया। जिस स्थान पर सतलुज नदी के पानी को रोका गया था, वहाँ एक बहुत बड़ी झील बन गई। जिसका नाम गुरु गोबिन्द सिंह जी के नाम पर 'गोबिन्द सागर' रखा गया। लहराती हुई झील सचमुच एक छोटे समुद्र-सी प्रतीत होती है। तीन ओर पहाड़ों से घिरी हरी-भरी घाटियाँ, ऊँचे-ऊँचे वृक्षों की पंक्तियाँ तथा बीच में झील का लहराता हुआ जल एक अनुपम दृश्य उपस्थित करता है। दर्शक का मन तो इस प्राकृतिक सौंदर्य की छटा से ही मुग्ध हो उठता है। दूर-दूर से अनेक यात्री भाखड़ा की सैर करने आते हैं जिससे यह प्रसिद्‌ध पर्यटन-स्थल भी बन गया है।

भाखड़ा बाँध एशिया के सबसे ऊँचे बाँधों में से एक है। इसकी ऊँचाई 226 मीटर है। यह कुतुब मीनार से तीन गुणा ऊँचा है। इसी से तुम अनुमान लगा सकते हो कि यह बाँध कितना ऊँचा है। बाँध की दीवार इतनी चौड़ी है कि उस पर आसानी से मोटर कार दौड़ सकती है।

भाखड़ा बाँध पर काम करने वाले मज़दूरों तथा इंजीनियरों की सुविधा के लिए विशेष रूप से एक बस्ती बसाई गई है। यह बस्ती नया नंगल के नाम से प्रसिद्‌ध है। यह स्थान भाखड़ा से तेरह किलोमीटर की दूरी पर है और बाँध के सबसे समीप पड़ता है। इसी स्थान पर सतलुज नदी पर एक छोटा बाँध और बनाया गया है। इससे एक नहर निकाली गई है जिसपर दो बिजली घर-गंगूवाल तथा कोटला नामक स्थानों पर बनाए गए हैं। इस नहर से न केवल पंजाब बल्कि हरियाणा तथा राजस्थान को भी सिंचाई के लिए पानी मिलता है। कई छोटी-बड़ी नहरों द्‌वारा पानी पहुँचाकर इन राज्यों की लाखों हेक्टेयर बंजर और रेतीली भूमि की सिंचाई की गई है। अब वही बंजर भूमि सोना उगलने लगी है।

भाखड़ा बाँध के बनने से पंजाब और हरियाणा में चारों ओर लहलहाते खेत दृष्टिगोचर होते हैं। उपज भी पहले से दुगुनी हो गई है। राजस्थान की रेतीली भूमि में पहले जहाँ दूर-दूर तक कंटीली झाड़ियाँ ही नज़र आती थीं वहाँ अब फलों के बगीचे तथा चने, गेहूँ, कपास और गन्ने की हरी-भरी फसलें लहलहाने लगी हैं। इतना ही नहीं, इस बाँध के पानी से कुछ चरागाहें भी स्थान-स्थान पर दृष्टिगोचर होती हैं, जिनमें पशु पालन किया जाता है। अब राजस्थान से दूध तथा सब्ज़ियाँ अन्य स्थानों के बाज़ारों में भी बिकने के लिए भेजी जाती हैं।

पंजाब, हरियाणा, राजस्थान के राज्यों तथा दिल्ली के लिए प्रतिदिन के उपयोग तथा उद्‌योग-धंधों के लिए आवश्यक बिजली का अधिकांश भाग भाखड़ा बाँध से ही प्राप्त किया जाता है। इससे कई प्रकार के उद्‌योगों का विकास हुआ है और ये प्रदेश काफी समृद्‌ध हो गए हैं।

इस विशाल बाँध को तैयार करने में लाखों टन लोहा, सीमेंट, कंकरीट, चूना और मिट्‌टी का प्रयोग हुआ है। यह हमारे इंजीनियरों की कार्य-कुशलता तथा हज़ारों मज़दूरों के परिश्रम का ही फल है कि इतना विशाल बाँध कुछ ही वर्षों में तैयार हो गया।

भाखड़ा बाँध हमारे देश का गौरव है। इसे स्वर्गीय प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 22 अक्तूबर 1953 को राष्ट्र को समर्पित किया था।

अभ्यास

शब्दार्थ

स्वतंत्र	=	आज़ाद
बाँध	=	नदी का पानी रोकने के लिए बनाया हुआ कच्चा या पक्का घेरा
प्रथम	=	पहला
प्रधानमंत्री	=	किसी देश का सबसे बड़ा मंत्री
सम्मानित	=	सम्मान देना
संपन्न	=	सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण
संकरे	=	तंग
प्रवाह	=	बहाव
सुरंग	=	ज़मीन के नीचे खोदकर बनायी हुई नाली
पर्यटन स्थल	=	घूमने-फिरने का स्थान
कुतुब मीनार	=	पुरानी दिल्ली की एक मीनार जो कुतुबद्‌दीन ऐबक (एक राजा) की बनवाई हुई है और अपनी ऊँचाई के लिए प्रसिद्‌ध है।
इंजीनियर	=	यंत्र बनाने वाला, नहर/पुल आदि के नक्शे बनाने और उसके निर्माण की निगरानी करने वाला
हेक्टेयर	=	किसी भी क्षेत्रफल को मापने की इकाई (1 हेक्टेयर = 100 100 वर्ग मीटर)
बंजर भूमि	=	वह ज़मीन जिस पर खेती न की जा सके
दृष्टिगोचर	=	दिखाई देना
कंटीली	=	काँटों वाली
चरागाह	=	पशुओं के चरने-चराने की जगह, घास का मैदान

स्वर्गीय = मृत्यु को प्राप्त

समर्पित = सौंपा हुआ

बताओ

1. बाँध किसे कहते हैं ?
2. भाखड़ा बाँध किस नदी पर बनाया गया है ?
3. भाखड़ा बाँध की ऊँचाई कितनी है ?
4. 'गोबिंद सागर' झील का नाम किस गुरु जी के नाम पर रखा गया है ?
5. किस नहर पर और कहाँ दो बिजली घर बनाए गए हैं ?
6. भाखड़ा बाँध से किस-किस राज्य को सिंचाई के लिए पानी मिलता है ?
7. पंडित जवाहर लाल नेहरू ने इसे कब राष्ट्र को समर्पित किया था ?

इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखो

1. कैसा स्थान बाँध बनाने के लिए उपयुक्त समझा जाता है ?
2. गोबिन्द सागर झील की सुंदरता का वर्णन करो।
3. भाखड़ा बाँध के निर्माण से पंजाब के पड़ोसी राज्यों को क्या-क्या लाभ हुए हैं ?

वाक्य पूरे करो

भाखड़ा बाँध ____________________ सबसे पहला बाँध है।

यह आनन्दपुर साहिब से ____________________ सतलुज नदी पर बनाया गया है।

भाखड़ा बाँध ____________________ में से एक है।

भाखड़ा बाँध बनने से ____________________ दृष्टिगोचर होते हैं।

भाखड़ा बाँध ____________________ गौरव है।

वाक्यों में प्रयोग करो

स्वर्गीय प्राकृतिक तीर्थ आधुनिक सौंदर्य

दृष्टिगोचर सोना उगलना

पढ़ो, समझो और लिखो

बहना	=	**बहाव**	सींचना	=	**सिंचाई**
चुनना	=	_______	चढ़ना	=	_______

दबना = ______ पढ़ना = ______

शुद्ध शब्द पर गोला लगाओ

उद्योग	उद्योग	उदयोग
समरीध	स्मृद्ध	समृद्ध
समरपित	समर्पित	समर्पीत
द्रिष्टि	दरिष्टि	दृष्टि
उपस्थित	उपस्थीत	उपसथित

अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द लिखो

किसी देश का सबसे बड़ा मंत्री	**प्रधानमंत्री**
नदी के पानी को बाँधना/रोकना	______
सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण	______
ज़मीन के नीचे खोदकर बनाई हुई नाली	______
सैलानियों के घूमने-फिरने का स्थान	______
वह भूमि जो खेती योग्य न हो	______
वह भूमि जिस पर भरपूर फसल हो	______
पशुओं के चरने की जगह	______
मृत्यु को प्राप्त	______

निम्नलिखित गद्यांश में आए संज्ञा शब्दों पर गोला तथा सर्वनाम शब्दों को रेखांकित करो

भाखड़ा बाँध पर काम करने वाले मज़दूरों तथा इंजीनियरों की सुविधा के लिए विशेष रूप से एक बस्ती बनाई गई है। यह बस्ती नया नंगल के नाम से प्रसिद्ध है। यह स्थान भाखड़ा से तेरह किलोमीटर की दूरी पर है और बाँध के सबसे समीप पड़ता है। इसी स्थान पर सतलुज नदी पर एक छोटा बाँध और बनाया गया है। इससे एक नहर निकाली गई है। जिस पर दो बिजली घर गंगूवाल तथा कोटला नामक स्थानों पर बनाए गए हैं।

पढ़ो, समझो और लिखो

'समर्पित' शब्द में मूल शब्द 'समर्पण' है। उसमें 'इत' शब्दांश जोड़ कर 'समर्पित' शब्द बना है। इसी प्रकार नए शब्द बनाओ

समर्पण + इत = **समर्पित**

प्रवाह + इत = __________

सम्मान + इत = __________

एकत्र + इत = __________

निर्माण + इत = __________

अनुमान + इत = __________

प्रयोगात्मक व्याकरण

1. हरी-भरी घाटियाँ तथा ऊँचे-ऊँचे वृक्ष दिखाई दे रहे थे।
2. हज़ारों मज़दूरों की मेहनत रंग लाई।
3. रेतीली भूमि में भी फ़सलें लहलहाने लगी हैं।
4. यह ऊँचा है।

उपर्युक्त वाक्यों में **'हरी-भरी'** शब्द घाटियों (संज्ञा) की, **'ऊँचे-ऊँचे'** शब्द वृक्ष (संज्ञा) की, **'हज़ारों'** शब्द मज़दूरों (संज्ञा) की, **'रेतीली'** शब्द भूमि (संज्ञा) की तथा **'ऊँचा'** शब्द 'यह' सर्वनाम की विशेषता बता रहा है।

अतः संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

निम्नलिखित में से विशेषण शब्द छाँटिए

1. अनेक यात्री भाखड़ा बाँध की सैर करने आते हैं।
2. इसके लिए दो सुरंगें खोदी गयीं।
3. अब बंजर भूमि सोना उगलने लगी है।
4. कँटीली झाड़ियाँ नज़र आ रही हैं।
5. प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का सपना साकार हुआ।

पाठ–९

गलती छिपाने की सज़ा

''देखो बेटे गलतियाँ सबसे होती हैं, गाँधी जी से भी हुई थीं। समझदारी इसी में है कि सबको विश्वास में लेते हुए अपनी गलती स्वीकार कर ली जाए क्योंकि कभी-कभी अपनी गलती न स्वीकार करना बहुत महँगा साबित होता है।'' पापा ने समझाने की चेष्टा की। कुश उधेड़बुन की मुद्रा में बैठा रहा जैसे कुछ तय न कर पा रहा हो। फिर सकुचाते हुए धीरे-से पूछने लगा, 'बहुत महँगा कैसे पापाजी ?'

'वह ऐसे कि कभी-कभी इसके द्वारा कोई हमसे ब्लैकमेलिंग भी कर सकता है।' पापा बोले, 'मैं समझा नहीं ?' कुश ने दोबारा जानना चाहा।

मैं समझाता हूँ। देखो बेटे, बात उस समय की है जब मैं स्कूल में पढ़ता था। मुझे दिनभर बल्ला हाथ में लिए हुए बॉल को शॉट लगाने का शौक था। एक दिन ऐसे ही मेरे द्वारा काँच की महँगी ट्रे फूट गई। यह आलीशान ट्रे दादाजी ने इटली से मंगवाई थी। इस अप्रत्याशित हादसे से मैं बहुत घबरा गया। फिर अपने को संभालते हुए चुपचाप ट्रे के अवशेष उठाकर कूड़ेदान में फेंक आया। ट्रे को ठिकाने लगाकर मैंने राहत की साँस ली कि चलो अच्छा हुआ किसी ने देखा नहीं वरना बेकार का लफड़ा हो जाता। दादाजी को जब याद आएगा तब का तब देखा जाएगा।

लेकिन मैं गलतफहमी में था, तुम्हारी ऊषा बुआ यानी मेरी छोटी बहन ने यह हादसा देख लिया था लेकिन किसी कुटिल नीति के तहत वह चुप रही थी। थोड़ी देर बार दादाजी ने याद किया। 'चलो बेटा ऊषा बर्तन साफ़ कर लो।' हमारी माँ नहीं थी इसलिए यह ज़िम्मेदारी ऊषा को वहन करनी पड़ती थी। मुझे आश्चर्य हुआ जब दादाजी की एक आवाज़ में उठकर काम करने वाली ऊषा ने हँसते हुए कहा, 'दादाजी, भैया ने आज से घर के काम में मेरा हाथ बँटाने का संकल्प किया है।' दादाजी प्रसन्न होते हुए बोले, 'यह तो बहुत अच्छी बात है, दोनों भाई-बहन मिलकर काम करोगे तो जल्दी हो जाएगा, क्यों बेटे ?' मैंने गुस्से

में आँखें तरेर कर ऊषा की तरफ देखा तो उसने कुछ ऐसा इशारा किया कि मुझे पूरे बर्तन साफ़ करने पड़ेंगे वरना वह ट्रे टूटने वाली बात दादाजी को बता देगी।

अगले दिन दादाजी बोले, 'ऊषा बेटे पूरे घर का झाड़ू-पोछा लगाना है।' तुम्हारी ऊषा बुआ ने झट से मेरा नाम आगे बढ़ा दिया और खुद सहेलियों के साथ खेलने निकल गई। दादाजी मेरे सहयोग से खुश थे जबकि मैं खून के घूँट पीकर रह गया था।

धीरे-धीरे यह रोज़मर्रा की बात हो गई। दादाजी कोई भी काम बताते कि ऊषा मेरा नाम आगे बढ़ा देती। मैं आनाकानी करने की कोशिश करता तो वह कुटिल मुस्कान के साथ पूछ बैठती, 'काँच की ट्रे कहाँ गई भैया, क्या दादाजी को पता है ?' इसके बाद मैं दब्बू बनकर चुप रह जाता।

जब मैं बहन के जुल्म से तंग आ गया यानी पानी सिर के ऊपर से निकल गया तो मैंने दादाजी के सामने जाकर अपनी ग़लती कबूल कर ली और सिर झुकाकर खड़ा हो गया उनकी कठोर सज़ा भुगतने के लिए। गुस्से के स्थान पर दादाजी मुस्करा पड़े-'माना वह महँगी ट्रे मुझे बहुत पसंद थी लेकिन तुमसे ज्यादा नहीं, आखिर वह काँच की थी।' मैं अविश्वसनीय नज़रों से उनकी तरफ घूर रहा था कि उन्होंने मेरे सिर पर स्नेहपूर्वक हाथ फेरते हुए रहस्योद्घाटन किया, 'बेटे जिस दिन तुम्हारे हाथ से ट्रे टूटी थी मैंने गैलरी से सब-कुछ देख लिया था और मेरे प्रिय होने के कारण तत्काल तुम्हें क्षमा भी कर दिया था।'

मैं जैसे आसमान से धरती पर आ गिरा, 'ओह ! दादाजी अब तक बेकार ही मैं ऊषा बहन की दादागिरी सहन करता रहा।' 'मैं यही देखना चाहता था कि आखिर कब तक तुम बहन की ब्लैकमेलिंग सहन करते हो।' दादाजी बोले। मैं खिसियाते हुए मुस्कराने लगा तो दादाजी ने नसीहत दी। 'इसके द्वारा आगे के लिए सबक सिखाना चाहता था कि ग़लती छिपाने से कभी-कभी कितनी बड़ी सज़ा मिल जाती है।'

पापाजी ने बात समाप्त की तो कुश ने तपाक से अपनी ग़लती स्वीकारते हुए दोनों हाथों से कान पकड़ते हुए कहा, 'हाँ, पापाजी फ्रिज में रखी आईसक्रीम मैंने खाई थी, लव ने नहीं ... वह तो अभी छोटा है। फ्रिज भी नहीं खोल सकता।'

अभ्यास

शब्दार्थ

उधेड़बुन	:	निरंतर विचार करना, तर्क वितर्क
ब्लैकमेलिंग	:	भय दिखाकर मनचाहा काम करवाना
आलीशान	:	अत्यधिक शानदार
तत्काल	:	उसी समय
अवशेष	:	बचा हुआ भाग
कुटिलनीति	:	धोखेबाजी, दुष्टता
सकुचाना	:	शर्माना
खिसियाना	:	नाराज़ होना
वहन	:	भार ढोना, निर्वाह करना
रहस्योद्घाटन	:	भेद प्रकट करना
नसीहत	:	अच्छी शिक्षा
अप्रत्याशित	:	जिसकी आशा न रही हो, अचानक
लफड़ा	:	झगड़ा
गलतफहमी	:	बात समझने में धोखा खा जाना

बताओ

1. अपनी ग़लती स्वीकार कर लेने में क्या समझदारी है ?
2. कुश के पापा से बचपन में गलती से क्या टूट गया था ?
3. उन्होंने अपनी गलती छिपाने की क्या कोशिश की थी ?
4. कुश की बुआ उसके पापा को बचपन में क्यों ब्लैकमेल करती थी ?
5. कुश के पापा ने अपनी बहन की ब्लैकमेलिंग से कैसे छुटकारा पाया ?
6. कुश के पापा अपने बचपन की बात के द्वारा कुश को क्या सिखाना चाहते थे ?
7. कुश ने अपने पापा से अपनी कौन-सी गलती स्वीकार की और क्यों ?

निम्नलिखित मुहावरों के वाक्य बनाओ

मुहावरा	अर्थ	वाक्य
राहत की साँस लेना	चैन मिलना	____________________
		____________________
आँखें तरेरना	क्रोध से देखना	____________________
		____________________
खून का घूँट पीकर रह जाना	अत्यधिक क्रोध का आवेश सह लेना	____________________
		____________________

आनाकानी करना	किसी काम को	______
	करने से हिचकिचाना	______
दब्बू बनना	डरपोक बनना	______
		______
तंग आना	परेशान होना	______
		______
पानी सिर के ऊपर से	किसी बात की हद हो जाना	______
निकल जाना		______
हाथ बंटाना	सहायता करना	______
		______
उधेड़बुन में बैठे रहना	चिंता में रहना, फिक्र करना	______
		______
आसमान से धरती	बुरे ख्याल आना पर हो	______
पर आ गिरना	अच्छा जाना	______
दादागिरी सहन करना	किसी का ज़ुल्म सहना	______
सिर झुकाकर खड़ा हो	शर्म से गर्दन झुकाकर	______
जाना	खड़े हो जाना	______

इस पाठ में अंग्रेज़ी व फ़ारसी के शब्दों का प्रयोग भी हुआ है। कम से कम पाँच ऐसे शब्दों को चुनकर लिखो

अंग्रेज़ी के शब्द		फ़ारसी के शब्द	
ब्लैकमेलिंग	______	गलती	______
______	______	______	______
______	______	______	______

लिंग बदलो		वचन बदलो	
पापा	______	तुम्हारा	तुम्हारे
दादा	______	अपना	______

सहेली	______	यह	______
बहन	______	वह	______
तुम्हारा	तुम्हारी		
अपना	______		
बुआ	______		

निम्नलिखित प्रत्येक समूह में से जो शब्द सबसे अलग हो, उस पर गोला लगाओ

1. बॉल, बल्ला, शॉट, खुश
2. दादा, बहन, बुआ, दादागिरी
3. रोज़मर्रा, कभी-कभी, दिन-भर, विश्वास
4. गुस्सा, प्रेम, मुस्कान, स्कूल
5. हाथ, कान, आँख, आईसक्रीम

अन्तर समझो और वाक्य बनाओ

1.	मुद्रा : मुख, हाथ, गर्दन आदि की विशेष भाव सूचक स्थिति	______
	मुद्रा : रुपया/सिक्का	______
2.	वहन : भार ढोना, निर्वाह करना	______
	बहन : माँ-बाप की बेटी	______
3.	साँस : श्वास, दम	______
	सास : पत्नी या पति की माता	______
4.	बाल : केश, बालक	______
	बॉल : गेंद	______

प्रयोगात्मक व्याकरण

पढ़ो, समझो और लिखो

1. वर्तमान काल : हमारी माँ नहीं है इसलिए यह ज़िम्मेदारी ऊषा बहन को वहन करनी पड़ती है।

   भूतकाल : हमारी माँ नहीं ती इसलिए यह ज़िम्मेदारी ऊषा बहन को वहन करनी पड़ती थी।

भविष्यकाल : हमारी माँ नहीं होगी इसलिए यह ज़िम्मेदारी ऊषा बहन को वहन करनी पड़ेगी।

2\. वर्तमान काल : ______________________

भूतकाल : मुझे दादा जी ने नसीहत दी।

भविष्यकाल : ______________________

3\. वर्तमान काल : ______________________

भूतकाल : ______________________

भविष्यकाल : मैं स्कूल में पढ़ूँगा।

बच्चो ! क्या आपने कभी अपनी ग़लती के लिए क्षमा माँगी है ? चार-पाँच वाक्यों में लिखें।

पाठ–10

फूल और काँटा

हैं जन्म लेते जगह में एक ही,
एक ही पौधा उन्हें है पालता।
रात में उन पर चमकता चाँद भी,
एक-सी ही चाँदनी है डालता।।
मेह उन पर है बरसता एक-सा,
एक-सी उन पर हवाएँ हैं बहीं।
पर सदा ही यह दिखाता है हमें,
ढंग उनके एक से होते नहीं।।
छेद कर काँटा किसी की उँगलियाँ,
फाड़ देता है किसी का वर वसन।
प्यार डूबी तितलियों के पर कतर,
भौर का है बेध देता श्याम तन।।
फूल लेकर तितलियों को गोद में,
भौर को अपना अनूठा रस पिला।

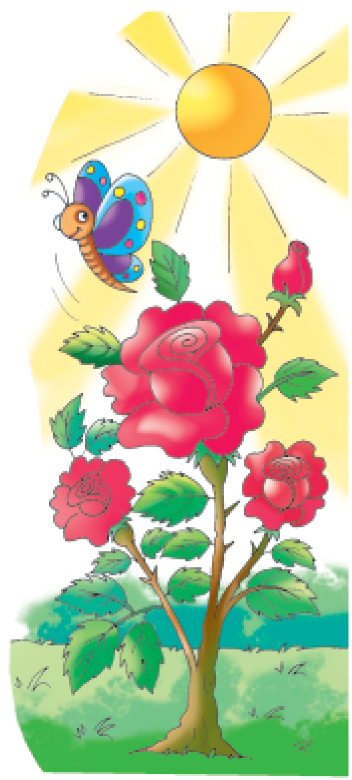

निज सुगंधि और निराले ढंग से,

है सदा देता कली का जी खिला।।

है खटकता एक सबकी आँख में,

दूसरा है सोहता सुर-सीस पर।

किस तरह कुल की बड़ाई काम दे,

जब किसी में हो बड़प्पन की कसर।।

'हरिऔध'

अभ्यास

शब्दार्थ

मेह	=	वर्षा	वर-वसन	=	श्रेष्ठ वस्त्र
पर	=	पंख	भौर	=	भँवरा
श्याम	=	साँवला	तन	=	शरीर
सुगंधि	=	खुशबू	सोहता	=	सुंदर लगना
सुर-शीश	=	देवताओ के सिर पर	कुल	=	कुटुम्ब
कसर	=	कमी	बड़प्पन	=	बड़ाई, गौरव

बताओ

1. फूल और काँटे की कौन-सी समान परिस्थितियाँ मिलती हैं ?
2. फूल किस प्रकार सुख देता है ?
3. काँटा किस प्रकार दु:ख देता है ?
4. देवता के शीश पर किसे चढ़ाया जाता है ?
5. कवि ने इस कविता में कुल का क्या महत्व बताया है ?

इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच पंक्तियों में लिखो

1. इस कविता से आपको क्या शिक्षा मिलती है ? अपने शब्दों में लिखो।
2. समान कुल में जन्म लेने और समान परिस्थितियाँ मिलने पर भी व्यक्तियों का व्यवहार अलग-अलग होता है। क्यों ? उदाहरण देकर लिखो।

काव्य-पंक्ति पूरी करो

1. एक ही पौधा ...।
2. मेह उन पर है ...।
3. प्यार डूबी ...।
4. जब किसी में ...।

सरलार्थ करो

है खटकता एक सबकी आँख में,
दूसरा है सोहता सुर-सीस पर।
किस तरह कुल की बड़ाई काम दे,
जब किसी में हो बड़प्पन की कसर।

वाक्य बनाओ

कली का जी खिलना = प्रसन्न होना = ____________________

आँख में खटकना = बुरा लगना = ____________________

विपरीत शब्दों का मिलान करो

श्याम	दुर्गंध
सुगंध	असुर
सुर	घृणा
एक	अनेक
प्यार	श्वेत

फूल के चित्र में से समानार्थक शब्द ढूँढ़कर लिखो

फूल = पुष्प, _______

चाँद = _______, _______

हवा = _______, _______

वर्षा = _______, _______

देवता = _______, _______

भौंरा = _______, _______

चांदनी = _______, _______

बहुवचन रूप लिखो

उँगली	=	**उँगलियाँ**	काँटा	=	**काँटे**	हवा	=	**हवाएँ**
कली	=	______	भौंरा	=	______	कविता	=	______
तितली	=	______	निराला	=	______	लता	=	______

कविता में 'स्याम-तन', 'सुर-शीश' शब्द युग्म के रूप में प्रयोग हुए हैं। इनमें पहला शब्द दूसरे शब्द की विशेषता बताता है। जिसकी विशेषता बताई जाये, उसे विशेष्य और जो शब्द विशेषता बताये उसे विशेषण कहते हैं। इन शब्द-युग्मों में से विशेषण और विशेष्य अलग-अलग कर लिखो।

विशेषण	विशेष्य
श्याम	तन
______	______
______	______

पाठ – 11

क्राँतिजोत : सावित्रीबाई फुले

यह उस समय की बात है जब औरत को पढ़ने-लिखने का अधिकार नहीं था। वह अपने घर की चार-दीवारी में बंद थी। समाज के अंदर अन्याय और भेदभाव आदि ने अपनी जड़ें जमा रखी थीं। ऐसे ही समय में क्राँतिजोत सावित्री बाई फुले का जन्म हुआ।

सावित्री बाई फुले का जन्म 3 जनवरी, 1831 को महाराष्ट्र के सतारा ज़िले के नैगाँव, तहसील खण्डाला में हुआ। उनके पिताजी का नाम खांदोजी नैवसे तथा माताजी का नाम लक्ष्मी था। वह एक संपन्न किसान परिवार के साथ ताल्लुक रखती थीं।

उनका विवाह 9 वर्ष की आयु में महान क्राँतिकारी योद्धा ज्योतिबा राव फुले के साथ हुआ। देश में जिन लोगों ने स्त्री-शिक्षा और अछूतों के उद्धार के लिए काम किया उनमें ज्योतिबा राव का नाम सबसे ऊपर आता है। ज्योतिबा ने अन्याय, भेद-भाव को मिटाने और समाज में फैले अंधकार को दूर भगाने का दृढ़ निश्चय किया। विद्या के प्रचार और प्रसार में ज्योतिबा राव की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने औरतों को पढ़ाने का बीड़ा उठाया, क्योंकि वे समझते थे इस काम के लिए उन्हें अध्यापिकाओं की ज़रूरत होगी। इसलिए सबसे पहले उन्होंने सावित्री बाई फुले को पढ़ाने का निश्चय किया।

ज्योतिबा माली परिवार से संबंध रखते थे। वह हर रोज़ खेतों में काम करने जाया करते थे। उनकी पत्नी सावित्री खेतों में खाना लेकर जाया करती थीं। ज्योतिबा ने खाली समय में सावित्री बाई को पढ़ाना

शुरू किया। भले ही परिवार में इस बात को लेकर विरोध हुआ लेकिन ज्योतिबा ने उन्हें निरंतर पढ़ाया। अब सावित्री बाई पढ़ाई के कार्यों में भी सहायता करने लगी। इसके चलते सावित्री को बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ा। मार्ग में न जाने लोग क्या-क्या कहते। कपड़ों पर कीचड़ आदि फेंकते, क्योंकि सावित्री बाई अपने लक्ष्य में अडोल व अडिग थीं इसलिए वह न तो डगमगायीं और न घबरायीं बल्कि धैर्य से लड़कियों को पढ़ाती रहीं।

सन् 1848 में उन्होंने अपने पति के साथ मिलकर पुणे में लड़कियों के लिए एक स्कूल की स्थापना की। जिसकी वह पहली मुख्य अध्यापिका बनी। उन्होंने अपने पति के साथ मिलकर और अधिक स्कूल खोले। इसी कारण ब्रिटिश सरकार ने 1852 में उन्हें और ज्योतिबा राव को सम्मानित किया।

ज्योतिबा राव के द्वारा किए गए समाज की भलाई के कामों में उन्होंने बहुत सहयोग दिया। ज्योतिबा राव ने ग़रीबों, अनाथों और विधवाओं की भलाई के लिए जो काम किए, सावित्री बाई ने उन्हें पूर्ण सहयोग दिया। ज्योतिबा की कथनी और करनी में समानता थी। उन्होंने समाज के द्वारा सताए मनुष्यों को सहारा दिया। उन्होंने एक बेसहारा ग़रीब औरत को आश्रय दिया और उसे अपनी बेटी के समान घर में रखा। सावित्री बाई ने उसके बेटे के लालन-पालन की ज़िम्मेदारी को बखूबी निभाया। इस दम्पति ने उसके बेटे को पढ़ा-लिखाकर डॉक्टर बनाया और डॉक्टर यशवंत ने भी सारी उम्र अपने बेटा होने का फर्ज़ निभाया।

ज्योतिबा के निधन के पश्चात् उन्होंने ज्योतिबा फुले द्वारा स्थापित सत्यशोधक मंडल का दायित्व खुद संभाल लिया। वे सभाओं की अध्यक्षता और कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन करतीं।

सावित्रीबाई एक अच्छी कवयित्री थीं। उनकी कविताएँ समाज के लिए प्रेरणादायक थीं। उनके दो काव्य-संग्रह प्रकाशित हुए।

सावित्री बाई ने प्लेग-पीड़ितों को राहत पहुँचाने के लिए सख़्त मेहनत की। उन्होंने ग़रीब बच्चों के लिए शिविर लगाए। कहा जाता है कि महामारी के दौरान वे दो हज़ार बच्चों को भोजन कराती थीं। एक बालक की सेवा करते समय प्लेग ने उन्हें अपना शिकार बना लिया और इस बीमारी के चलते 10 मार्च, 1897 को उन्होंने प्राण त्याग दिए।

निस्संदेह, सावित्री बाई प्रथम महिला शिक्षिका और प्रबुद्ध कवयित्री तो थी हीं, साथ में महिलाओं की मुक्ति में भी उनका सराहनीय योगदान था। भारत सरकार ने 10 मार्च 1998 को उनके नाम पर डाक-टिकट जारी किया।

अभ्यास

शब्दार्थ

पक्षपात = तरफ़दारी

तहसील = ज़िले का वह भाग जो तहसीलदार के अधीन रहता है

स्पर्श = छूना

सराहनीय = प्रशंसा योग्य

ज़िला = प्राँत का बड़ा भाग

दायित्व = ज़िम्मेदारी

ताल्लुक = संबंध

महामारी = मरक (जैसे हैज़ा, चेचक महामारी का रूप हैं)

बताओ

1. सावित्री बाई फुले का जन्म कब और कहाँ हुआ ?
2. सावित्री बाई फुले के माता-पिता व पति का क्या नाम था ?
3. सबसे पहले सावित्री बाई फुले ने लड़कियों के स्कूल की स्थापना कब की ?
4. ब्रिटिश सरकार ने उन्हें और उनके पति को कब सम्मानित किया ?
5. सावित्री बाई फुले की मृत्यु कब और किस बीमारी की चपेट में आने से हुई ?
6. सावित्री बाई फुले को पढ़ने व पढ़ाई के कार्य में किन समस्याओं का सामना करना पड़ा ?
7. भारत सरकार ने सावित्री बाई फुले का डाक टिकट कब जारी किया ?

शुद्ध शब्द पर गोला लगाओ

तहसील/तहिसील/तहसिल

अध्यापीका/अध्यिापिका/अध्यापिका

सावित्री/सावितरी/सावीत्री

महतवपूर्ण/महत्वपूर्ण/महत्वपूरण

सथापना/स्थापना/स्थाप्ना

समानित/सम्मानित/सम्मानीत

प्रेरणादायक/प्रेरणादाइक/प्रेनादायक

सरानीय/सराहनीय/सराहनिय

प्रकाशित/प्रकाशित/प्रकासित

समान अर्थ वाले शब्द ढूँढ़कर लिखो

प्रथम	:	______
अंधकार	:	______
निश्चय	:	______
निरंतर	:	______
धैर्य	:	______
उद्धार	:	______
खुद	:	______
शिविर	:	______
अध्यापिका	:	______

कल्याण	अंधेरा	लगातार	इरादा
पहली	हौसला	स्वयं	शिक्षिका
खेमा			

बहुवचन रूप लिखो

स्त्री	:	**स्त्रियाँ**	बच्चा	:	**बच्चे**
लड़की	:	______	कपड़ा	:	______
बेटी	:	______	बेटा	:	______

पढ़ो, समझो और लिखो

शिक्षक	:	शिक्षिका	कवि	:	कवयित्री
औरत	:	मर्द	विधवा	:	सधवा

पाठ – 12

श्रद्धा और अभ्यास

बात महाभारत काल की है। पाँच पाँडव युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव और कौरव पुत्र दुर्योधन, दुशासन आदि गुरु द्रोणाचार्य के आश्रम में शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। उस समय शिक्षा आश्रम में दी जाती थी जो नगर से दूर जंगल में हुआ करते थे।

सभी शिष्य गुरु द्रोणाचार्य की निगरानी में धनुर्विद्या का अभ्यास कर रहे थे। एक वनवासी साधारण बालक गुरु द्रोण को श्रद्धा से देख रहा था व शाँत मन से विद्या की बारीकियों को समझ रहा था। पाँच पाँडव व अन्य शिष्यों में अर्जुन का निशाना सर्वोत्तम था जिसे देख कर गुरु गद्गद हो रहे थे। वनवासी बालक ने प्रण किया कि वह भी अर्जुन की तरह महान धनुर्धर बनेगा।

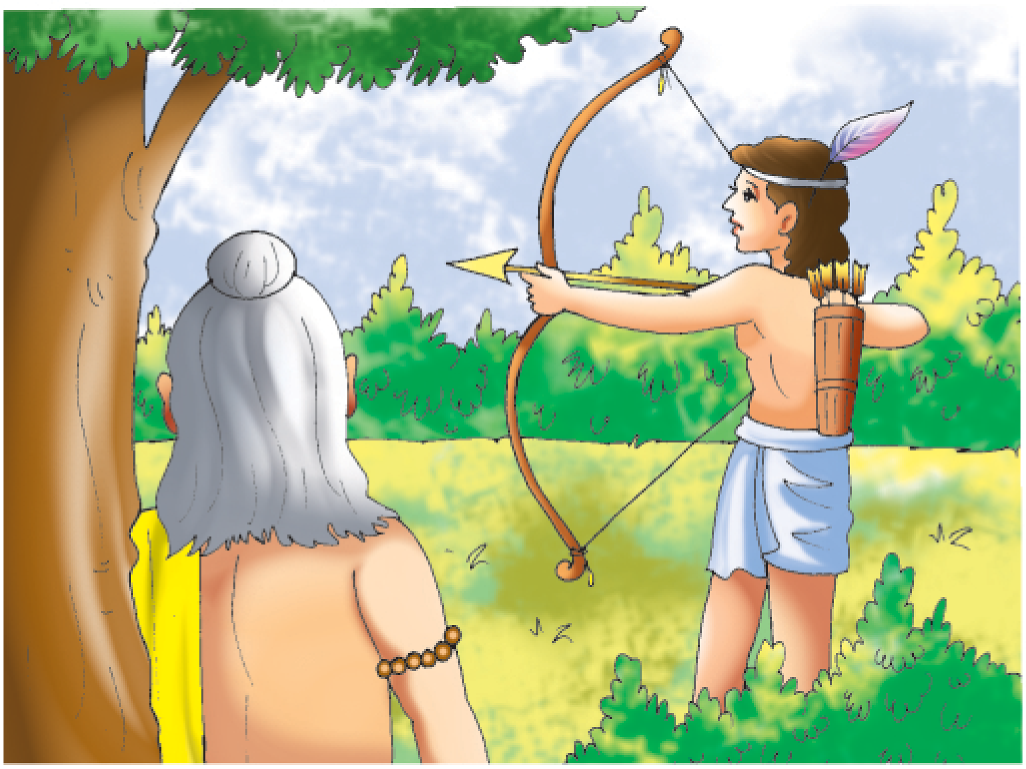

वह चुपचाप अपनी कुटिया में लौट आया। गुरु द्रोण उसके मन में बस गए थे अतः उसने मिट्टी की एक मूर्ति बनाई और एकांत में स्थापित कर ली। वह रोज उस मूर्ति को श्रद्धा से प्रणाम करता और उसके सम्मुख धनुष चलाने का अभ्यास करने लगा मानो साक्षात गुरु द्रोण के सान्निध्य में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा हो।

समय बीतता गया। एक दिन द्रोणाचार्य आश्रम में शिष्यों को शिक्षा दे रहे थे। अचानक एक कुत्ता आश्रम में आया। उसका मुँह बाणों से भरा हुआ था। मुँह में भरे बाणों से वह छटपटा रहा था उसकी आवाज़ तक नहीं निकल रही थी। गुरु-शिष्य सभी चकित थे धनुर्धर की प्रवीणता पर ! अर्जुन के तो आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वह मन ही मन धनुर्धारी के प्रति नत-मस्तक था क्योंकि द्रोणाचार्य के अनुसार उससे महान धनुर्धर कोई नहीं था। परंतु यह तो प्रमाण सम्मुख था। सभी के मन में इस धनुर्धर को देखने की इच्छा प्रबल हो उठी। प्रात: सभी जंगल में निकल पड़े।

कुछ दूरी पर जाकर देखा एक बालक अपने अभ्यास में तल्लीन था। वह इतनी एकाग्रता से अभ्यास कर रहा था कि उसे ध्यान ही न आया कि उससे मिलने कोई आया है।

'तुम कौन हो बालक ?' द्रोणाचार्य ने पूछा। द्रोणाचार्य की आवाज़ से ही बालक धन्य हो गया, उसके मुँह से कोई शब्द न निकला। वह एकटक गुरु को निहारता रहा।

द्रोणाचार्य ने फिर पूछा, 'बेटा तुम कौन हो ? तुम्हारा गुरु कौन है ? इस कुत्ते को तुमने दंड क्यों दिया ?'

बालक ने गुरु को दंडवत प्रणाम किया और कहा, 'गुरुवर मैं एक साधारण वनवासी हूँ। मेरे गुरु आप हैं।'

'मैं तुम्हारा गुरु ! मैंने तो तुम्हें विद्या नहीं दी है।' द्रोणाचार्य ने हैरान होते हुए कहा।

'परंतु मेरे मन में ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा थी। एक दिन आपको शिक्षा देते देख मैंने मन में आपको गुरु मान लिया था। मैंने आपकी एक प्रतिमा बनाई और उसके सम्मुख ही प्रतिदिन अभ्यास करता था। बालक सभी को उस मूर्ति के सम्मुख ले गया।'

'पर इस कुत्ते के प्रति तुम्हारा व्यवहार !'

'गुरु जी यह भौंक-भौंक कर मेरे अभ्यास में बाधा डाल रहा था। मेरी एकाग्रता भंग हो रही थी अत: उसका मुख बंद करने के सिवा कोई चारा न था। तो सोचा इस पर भी अभ्यास कर लूँ, एक पंथ दो काज हो जाएगा।'

गुरु के प्रति ऐसी श्रद्धा, शिक्षा के प्रति ऐसा समर्पण, ज्ञान के प्रति ऐसी जिज्ञासा देख सभी चकित थे।

प्यारे बच्चो, जानते हो यह बालक कौन था, एकलव्य, जो अपने अभ्यास और श्रद्धा के बल से महान बना। सच है श्रद्धा, विश्वास, लगन और परिश्रम से कोई भी कार्य कठिन नहीं रह सकता है।

अभ्यास

शब्दार्थ

आश्रम	:	साधु-संत की कुटिया	जिज्ञासा	:	जानने की इच्छा
धनुर्विद्या	:	धनुष चलाने की कला	प्रतिमा	:	मूर्ति
वनवासी	:	वन में रहने वाला	बाधा	:	रुकावट
सर्वोत्तम	:	सबसे बढ़िया	पिपासा	:	इच्छा, चाह
सान्निध्य	:	निकट	एकाग्रता	:	एक केन्द्र पर ध्यान देना
धनुर्धर	:	धनुष धारण करने वाला	प्रवीणता	:	कुशलता, निपुणता
तल्लीन	:	ध्यानमग्न			
दंडवत	:	ज़मीन पर बिल्कुल सीधे लेट कर किया जाने वाला प्रणाम			

बताओ

1. पाँच पाँडवों के नाम लिखो।
2. कौरवों-पाँडवों के गुरु कौन थे ?
3. गुरु शिष्यों को कौन-सी विद्या सिखा रहे थे ?
4. अर्जुन किस विद्या में निपुण था ?
5. वनवासी बालक क्या कर रहा था ?
6. आश्रम में कुत्ते को देख सभी चकित क्यों हो गए ?
7. गुरु द्रोणाचार्य प्रतिमा देखकर हैरान क्यों हो गए ?
8. एकलव्य का गुरु कौन था ?
9. श्रद्धा और अभ्यास का एकलव्य पर क्या प्रभाव पड़ा ?
10. इस कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

वाक्य पूरे करो

1. अर्जुन का निशाना अन्य ________ से सर्वश्रेष्ठ था।
2. ________ उन्हें धनुष विद्या सिखा रहे थे।
3. अचानक एक ________ वहाँ आया।
4. उसका मुँह ________ से भरा था।

5. वह बालक ________ था।

6. मैंने मन से आपको ________ मान लिया था।

7. बालक सभी को ________ के सम्मुख ले गया।

वनवासी शब्द वन + वासी शब्दों से बना है। नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं इनसे शब्द बनाओ और अर्थ लिखो।

	शब्द	अर्थ
वन + चर	वनचर	______
वन + राज	______	______________________
वन + मानुष	______	______________________
वन + माली	______	वनमाला धारण करने वाला, कृष्ण
वन + रोपण	______	______________________
वन + पाल	______	वन की रक्षा करने वाला सरकारी कर्मचारी

मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करो

	मुहावरा	अर्थ	वाक्य
1.	गद्‌गद होना	प्रसन्न होना	______________
2.	एकटक देखना	लगातार देखना	______________
3.	मुँह से शब्द न निकलना	चुप्पी साध लेना	______________
4.	चकित होना	हैरान होना	______________
5.	एक पंथ दो काज	एक कार्य करते समय दूसरा कार्य भी हो जाना	______________
6.	मन में बसना	प्रिय लगना, पसंद आना	______________
7.	आश्चर्य का ठिकाना न रहना	बहुत हैरान होना	______________
8.	नतमस्तक होना	नम्र बनना	______________

इनको भी जानो

(i) महान विद्वान वरदराज, जिसे गुरु ने मूढ़ समझ आश्रम से निकाल दिया था परंतु अभ्यास के बल पर एक दिन विद्वान बन गया तभी तो कहा है–

करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते सिल पर परत निसान।।

(ii) राजा ब्रूस की कहानी अपने अध्यापक से सुनें और उससे शिक्षा लेते हुए जीवन के उद्देश्य की ओर बढ़ें।

शब्द में से शब्द बनाओ

निशाना — निशा, शान

प्रतिदिन

पिपासा

एकलव्य

वनवासी

अनुसार

प्रयोगात्मक व्याकरण

1. गुरु द्रोणाचार्य शिष्यों को शिक्षा **दे रहे थे।**
2. मैं आपकी प्रतिमा के सम्मुख प्रतिदिन अभ्यास **करता हूँ।**
3. गुरु शिष्यों से तीर **चलवाते थे।**
4. अचानक एक कुत्ता आश्रम में **आया।**
5. गुरु के प्रति ऐसी श्रद्धा देख कर सभी चकित **थे।**

उपर्युक्त वाक्यों में 'दे रहे थे', 'करता हूँ' से काम का करना, 'चलवाते थे' से काम करवाना तथा 'आया' और 'थे' से काम का होना प्रकट हो रहा है।

अतः वाक्य में जिस पद से किसी काम का 'करना', 'करवाना' या 'होना' प्रकट हो, उसे क्रिया कहते हैं।

निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया शब्दों को छाँटिये

1. बालक गुरु द्रोण को श्रद्धा से देख रहा था।
2. उसकी आवाज़ तक नहीं निकल रही थी।
3. उसने मिट्टी की एक मूर्ति बनायी।
4. वह एकटक गुरु को निहारता रहा।
5. मेरे गुरु आप हैं।
6. मेरी एकाग्रता भंग हो रही थी।

पाठ–13

अनाथ

पात्र-परिचय

देवेन्द्र	:	अधिकारी
मंजरी	:	देवेन्द्र की पत्नी
वैभव	:	देवेन्द्र का आठ वर्षीय पुत्र
मनोहर	:	वैभव का समवयस्क नौकर
राजन	:	वैभव का सहपाठी
विकास	:	वैभव का सहपाठी
प्रिंसिपल	:	मांटेसरी स्कूल के प्रधानाध्यापक

पहला दृश्य

[शहर में किसी अधिकारी के बँगले का दृश्य। बँगले के सामने से सड़क दिखाई दे रही है। बँगले के चारों और बाउंड्री है तथा बाउंड्री के अंदर बँगले के लान में तथा चारों ओर विभिन्न प्रकार के फल-फूल के पौधे लगे हैं। सामने बरामदा है। बरामदे की बगल में मोटर गैरेज है, जिसमें गाड़ी खड़ी है। बरामदे में एक महिला तथा उसका बच्चा, जिसकी आयु लगभग आठ वर्ष है तथा एक नौकर, जिसकी आयु उनके बच्चे के ही आसपास है, खड़े हुए आपस में वार्तालाप कर रहे हैं।]

मंजरी : (नौकर से) देख मनोहर, आज से हम लोग तुमको मोनू कहा करेंगे, समझे ?

मनोहर : (सिर झुकाए) जी, मेमसाहब।

मंजरी : और अब कल से वैभव का स्कूल खुल जाएगा। तुम रोज़ सवेरे वैभव के साथ-साथ स्कूल जाना। वैभव अपनी क्लास में चला जाएगा, तुम वहीं बैठे रहना फिर जब वैभव की छुट्टी हो तो उसके साथ-साथ घर आना। समझ गए?

मनोहर : जी, मेमसाहब।

मंजरी : और हाँ मोनू, अभी तुम गाँव से आए हो। शहर के बारे में तुमको बहुत कम जानकारी है। आज शाम को चलकर हम लोग तुमको वैभव का स्कूल दिखा देंगे। ध्यान रखना, कहीं भी इधर-उधर नहीं जाना। वरना यह गाँव नहीं है, कहीं भूल-भटक जाओगे तो हम लोग कितना परेशान होंगे, समझे ?

मनोहर : जी, मेमसाहब।

वैभव : मोनू, मेमसाहब नहीं, मम्मी कहा करो। तुमसे मैं रोज कहता हूँ, मम्मी को मेमसाहब नहीं, मम्मी कहा करो। मुझे तुम्हारा मेमसाहब कहना अच्छा नहीं लगता। (*हठपूर्वक मम्मी से*) मम्मी, मोनू को कहो कि यह भी तुमको मम्मी कहा करे, तभी मैं पढ़ने जाऊँगा।

(मनोहर कभी मंजरी तो कभी वैभव को देख रहा है।)

मंजरी : क्यों मोनू, तुमको क्या अच्छा लगता है–मेमसाहब कहना कि मम्मी ?

(मनोहर कुछ सोचता है।)

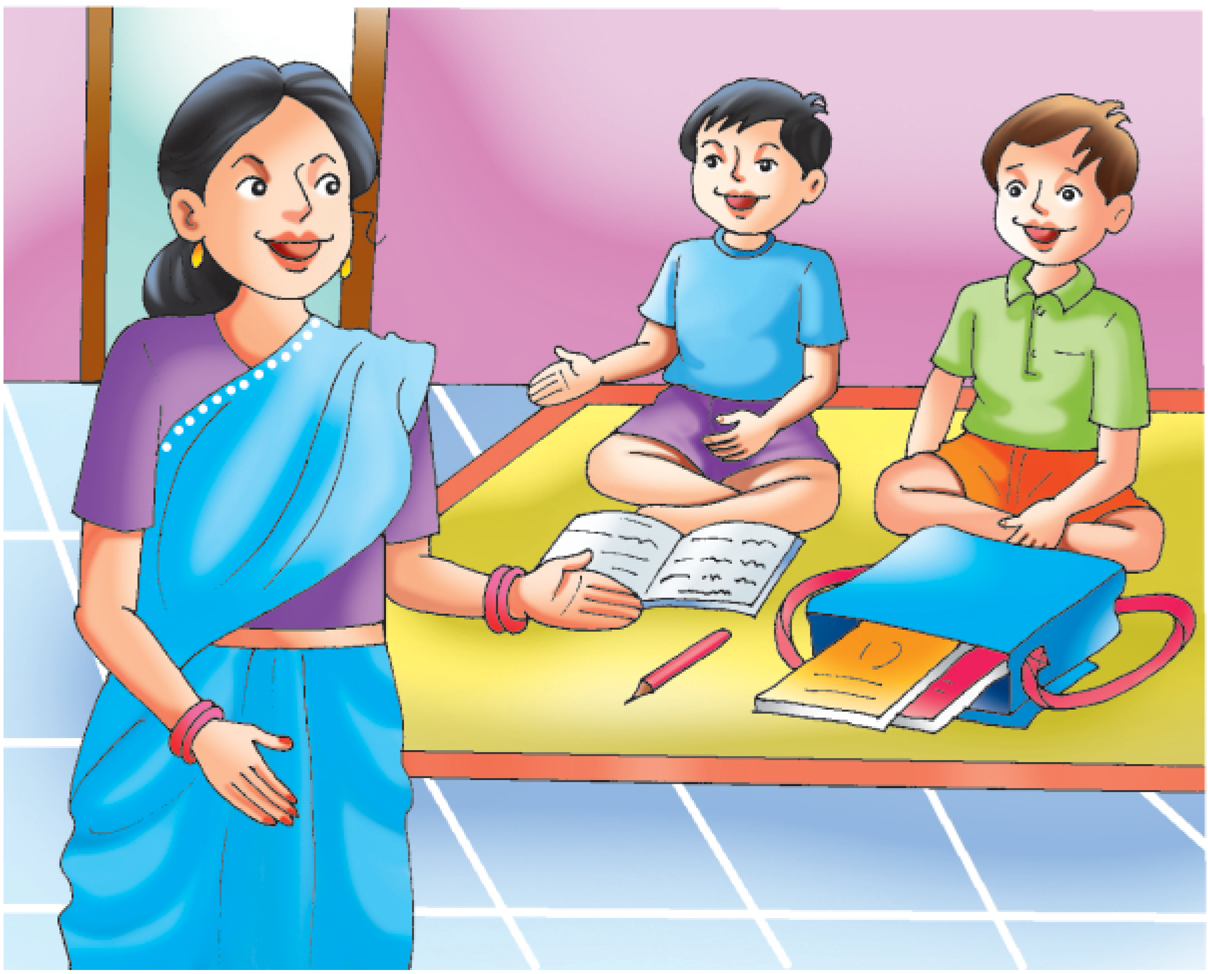

वैभव : मोनू, कह दो, मम्मी अच्छा लगता है।

मंजरी : क्यों, मोनू ?

मनोहर : जी हाँ, मम्मी ही अच्छा लगता है।

मंजरी : (मन-ही-मन कुछ अधिक प्रसन्नता से मुस्कराकर) अच्छा ठीक है, अब तुम भी मुझे मम्मी जी ही कहा करना। वैभव, अब तुम स्कूल जाओगे न ?

वैभव : ज़रूर जाऊंगा, मम्मी। मोनू भी साथ जाएगा। क्यों मोनू ?

मनोहर : हाँ, चलूँगा। मैं भी (कहते-कहते रुक जाता है।)

वैभव : (अधिक प्रसन्न होकर) मैं भी, तुम भी, दोनों स्कूल चलेंगे।

(मंजरी अंदर चली जाती है। वैभव और मनोहर दोनों कुछ गुपचुप बातें करते हैं।)

मंजरी : (अंदर से जोर से) मोनू।

मनोहर : जी जी मम्मी जी। (दौड़कर अंदर जाता है) जी, मम्मी जी।

वैभव : (दौड़ता हुआ आकर) मम्मी, तुमको मोनू ने मम्मी जी कहा है न ?

मंजरी : हाँ, कहा है। देखो मोनू, कल वैभव के स्कूल जाना है न, इसलिए जाओ, तुम भी अपने कपड़े साफ़ करो। गंदा नहीं रहना। यह शहर है, कोई गाँव नहीं है। यहाँ सभी लोग साफ़-सुथरे रहते हैं, समझे ?

मनोहर : जी, मम्मी जी।

मंजरी : तो फिर जाओ वहीं बाथरूम में साबुन है। जाओ, साफ़ करो।

दूसरा दृश्य

(एक आधुनिक मांटेसरी स्कूल का दृश्य। स्कूल के चारों ओर बाउंड्री है। कुछ लड़के खेल रहे हैं, कुछ पढ़ रहे हैं। भाग-दौड़, शोर-शराबा। वैभव और मनोहर भी उन्हीं के बीच हैं।)

राजन : (मनोहर की ओर सैंत करके वैभव से) वैभव, यह कौन है ?

वैभव : यह ... यह मोनू है। इसका नाम मनोहर है। सभी लोग इसे मोनू कहते हैं। गाँव से आया है।

विकास : किस कक्षा में पढ़ता है ?

वैभव : अभी पढ़ता नहीं है, पढ़ेगा।

राजन : क्या गाँव में पढ़ता था ?

वैभव : (मनोहर की ओर देखकर) हाँ-हाँ, पढ़ता था। क्यों, मनोहर ?

मनोहर : हाँ।

विकास : किस कक्षा मे।

वैभव : हमारी ही कक्षा में। कक्षा पाँच में।

राजन : तो क्या इसका भी नाम लिखवाओगे ?

वैभव : हाँ–हाँ लिखवाऊँगा।

विकास : तो चलो, चला जाये। प्रिंसिपल से फार्म लाया जाए।

राजन : लेकिन बिना टैस्ट लिए नाम कैसे लिखा जाएगा ?

विकास : अरे, तुम लोग चिंता क्यों करते हो ? तुम्हारे पापा आएँगे, सब ठीक हो जाएगा।

वैभव : और पापा न आए, तब क्या होगा ?

राजन : हाँ, याद आया। दीनू भैया से कहकर नाम लिखाया जाएगा।

(किसी प्रकार मनोहर टैस्ट में अच्छे अंकों से पास हो जाता है। शपथ–पत्र आदि दाख़िल करके मनोहर का नाम वैभव की कक्षा चार में लिख लिया जाता है। दोनों किसी से भी इस बात को न बतलाने का प्रण करते हैं। मनोहर और वैभव प्रतिदिन साथ–साथ स्कूल जाते और आते हैं। घर पर मनोहर को घरेलू काम भी काफी करना पड़ता है, लेकिन वह अध्ययन में वैभव से अधिक जागरूक रहता है।)

मनोहर : (रात्रि में पढ़ते समय) वैभव भैया, सो रहे हो ? अभी तो केवल बारह बजे हैं। हम लोगों को नित्य एक बजे तक पढ़ना है।

वैभव : लेकिन मोनू, मुझे तो नींद आ रही है।

मनोहर : अरे नींद को भगाओ। उठो–उठो। (वैभव फिर उठ कर पढ़ने लगता है।)

मंजरी : (आँखें मलती हुई) अरे बेटा, वैभव। तुम लोग अभी तक पढ़ रहे हो ? कितना बजा है ?

वैभव : मम्मी, यह मोनू नहीं मानता है। बराबर मुझे जगाता रहता है। कहता है कि मेहनत करोगे, तभी कक्षा में अच्छे नंबर पाओगे।

मंजरी : बेटा, मोनू ठीक ही कहता है। लेकिन अब सो जाओ, बहुत रात हो गई है।

मनोहर : ठीक है, वैभव भइया, चलो सोया जाये।

मंजरी : (अपने पति देवेन्द्र से) आजकल मोनू के साथ रहकर वैभव इतने परिश्रम से अपनी पढ़ाई कर रहा है कि मैं तो देखकर हैरान हूँ।

देवेन्द्र : इसीलिए तो इस साल मैं उसकी प्रगति रिपोर्ट देखकर दंग रह गया हूँ। हर विषय में उसके अंक सर्वश्रेष्ठ हैं। ठीक है पढ़ने दो उसको। तुम मनोहर और वैभव के बीच में जरा भी रोड़े मत अटकाना।

मंजरी : मैं तो बिल्कुल ही नहीं बोलती हूँ। इसलिए तो आजकल मनोहर से घरेलू काम भी कम ही करवाती हूँ क्योंकि मैं देखती हूँ कि वह वैभव की पढ़ाई के पीछे हरदम लगा रहता है।

तीसरा दृश्य

(वही स्कूल का वातावरण)

प्रिंसिपल : (मनोहर और वैभव को बुलाकर) मनोहर, कल स्कूल का सालाना जलसा है। यह पत्र तुम अपने पापा को ले जाकर दे देना और उनसे कहना कि कल स्कूल के वार्षिक समारोह में अवश्य आएँ।

मनोहर : जी, सर।

प्रिंसिपल : और सुनो, बेटे। तुम दोनों भाई भी ज़रूर आना।

मनोहर : अवश्य आएँगे, सर।

(घर पहुँचकर)

वैभव : (अपने पिताजी को पत्र देते हुए) पापाजी, कल हमारे स्कूल का वार्षिक जलसा है। प्रिंसीपल साहब ने आपको उस समारोह में बुलाया है। यह देखिए, यह पत्र भी दिया है। (पत्र देता है।)

वैभव : पापाजी, चलिएगा न ?

देवेन्द्र : हाँ, बेटा, चलूँगा। तुम्हारे प्रिंसीपल ने मुझे इस साल पहले समारोह में बुलाया है तो क्यों नहीं चलूँगा। तुम लोग जाओ, चाय नाश्ता करो।

मंजरी : क्या लिखा है पत्र में ?

देवेन्द्र : कुछ खास नहीं। केवल मुझे वैभव के स्कूल के वार्षिक समारोह में शामिल होने के लिए बुलाया गया है।

मंजरी : इस साल कोई खास बात है क्या ? अभी तक तो कभी नहीं बुलाया गया था।

देवेन्द्र : अरे भाई, वैभव ने इस साल मेहनत की है। अच्छे नंबर पाये होंगे, इसलिए मुझे बुलाया है। अब कल पता चलेगा।

(स्कूल के जलसे का दृश्य।)

प्रिंसिपल : माननीय अभिभावक गण ! हमारे स्कूल की यह परंपरा रही है कि हम अपने वार्षिक जलसे में स्कूल के सांस्कृतिक, सामाजिक, बौद्धिक एवं पाठ्य विषयों में सर्वश्रेष्ठ स्थान पाने वाले छात्र के अभिभावक का अभिनंदन करते हैं। इस वर्ष बाबू देवेंद्र सिंह के लड़के मनोहर, जिसने इसी वर्ष स्कूल में प्रवेश लिया है, ने अपनी प्रतिभा, अपने कला-कौशल तथा अपनी लगन से न केवल इस स्कूल में ही कीर्तिमान स्थापित किया है वरन् मंडलीय स्तर पर आयोजित प्रत्येक प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ स्थान पाकर इस स्कूल का नाम रोशन किया है। मनोहर की लगन तथा उसकी निष्ठा के कारण ही श्री सिंह के दूसरे लड़के वैभव ने भी अपनी कक्षा में श्रेष्ठ छात्र का स्थान ग्रहण किया है। इस तरह मनोहर के मंडल में सर्वश्रेष्ठ छात्र होने तथा वैभव के अपनी कक्षा में सर्वश्रेष्ठ छात्र होने के कारण हमारा स्कूल बाबू देवेन्द्र सिंह का दोहरा अभिनंदन करता है। एक शाल और वाग्देवी की कांस्य प्रतिमा के साथ हम उनको अभिनंदित तथा सम्मानित करते हैं। (यह कहकर प्रिंसीपल देवेन्द्र सिंह को माला पहनाकर शाल और कांस्य प्रतिमा भेंट करते हैं। चारों दिशाएँ तालियों से गूँज उठती हैं।) हम दोनों बच्चों को भी अलग से सम्मानित करेंगे। आज का समारोह अभिभावकों के लिए होता है।

(देवेंद्र सिंह गद्गद होकर घर पहुँचते हैं।

देवेन्द्र : (बाहर से ही, ज़ोर से) अरे मंजरी। ओ मंजरी।

मंजरी : (दौड़कर बाहर आते ही) क्या बात है आज आप इतना ज़ोर से चिल्ला रहे हैं ? और यह इतना सुंदर हार ?

देवेन्द्र : हार ही नहीं, यह लो (गद्गद होकर शाल और प्रतिमा देते हैं।) आज मनोहर ने मेरी मूँछें खड़ी कर दीं। क्या उसने भी अपना नाम लिखा लिया था ? तुम्हें मालूम था ?

मंजरी : नहीं, मुझे तो नहीं मालूम था। वैभव से पूछिए।

वैभव : हाँ, पापा. मोनू का नाम मैंने और मेरे साथियों ने मिलकर लिखवा दिया था।

देवेन्द्र : शाबाश बेटा। तो तुमने मुझे क्यों नहीं बताया ? कोई बात नहीं ? मंजरी, अब हमारे दो बेटे हो गए। बड़ा बेटा मोनू और दूसरा वैभव। मोनू अब नौकर नहीं, हमारा बेटा बनकर रहेगा। दोनों जितना भी पढ़ेंगे, पढ़ाया जाएगा। एक अनाथ बच्चे के अन्दर

छिपी प्रतिभा को हम लोग नहीं पहचान सके, वैभव पहचान गया। यह कितने गौरव की बात है।

मंजरी : अरे, आप तो आज मोनू को अपना बेटा बना रहे हैं, मैं तो उसको पहले ही अपना बेटा बना चुकी हूँ। पूछिए, यह मुझे क्या कहता है ?

देवेन्द्र : क्या कहते हो, मोनू बेटा ?

मनोहर : मम्मी जी।

देवेन्द्र : और आज से मुझे पापाजी।

(मोनू को देवेंद्र सिंह और वैभव को मंजरी गोद में उठा लेते हैं। हँसी-ठहाकों के साथ धीरे-धीरे परदा गिरता है)

अभ्यास

शब्दार्थ

सहपाठी	:	साथ पढ़ने वाला	मंडल	:	समूह
कीर्तिमान	:	किसी क्षेत्र में सर्वोच्च स्तर पर पहुँचना			
वार्तालाप	:	बातचीत	हठ	:	ज़िद्द
वाग्देवी	:	सरस्वती			
प्रण	:	दृढ़ निश्चय	प्रतिभा	:	विलक्षण बौद्धिक शक्ति
परिश्रम	:	मेहनत	प्रतिमा	:	मूर्ति
प्रगति	:	तरक्की, उन्नति	समवयस्क	:	हमउम्र
अभिभावक	:	माता-पिता	सर्वश्रेष्ठ	:	सबसे बढ़िया
अभिनंदन	:	स्वागत	कांस्य	:	ताँबे और टिन के मेल से बनी धातु

बताओ

1. मनोहर कौन था ? मंजरी ने उसे क्या काम दिया ?
2. वैभव ने मंजरी से क्या ज़िद्द की ?
3. मनोहर स्कूल में कैसे दाखिल हुआ ?
4. घर आकर मनोहर क्या-क्या काम करता ?

5. मोनू रात को वैभव को क्यों जगाता रहता ?

6. वैभव की पढ़ाई के पीछे किसका हाथ था ?

7. प्रिंसिपल ने देवेन्द्र को स्कूल क्यों बुलाया ?

8. देवेन्द्र स्कूल जाकर क्यों गद्गद हो उठे ?

9. प्रिंसिपल ने मोनू को क्या इनाम दिया और क्यों ?

10. मनोहर को देवेन्द्र और मंजरी ने क्या इनाम दिया ?

निम्नलिखित मुहावरों के वाक्य बनाओ

	मुहावरा		अर्थ	वाक्य
1.	रोड़े अटकाना	=	रुकावटें पैदा करना	______________
2.	गद्गद होना	=	खुश होना	______________
3.	मूँछें खड़ी करना	=	मान रखना	______________
4.	गुपचुप बातें करना	=	चोरी-छिपे बातें करना	______________
5.	दंग रह जाना	=	हैरान रह जाना	______________

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखो

1.	साथ पढ़ने वाला	=	सहपाठी
2.	आठ साल का	=	______________
3.	स्कूल का प्रधान अध्यापक	=	______________
4.	माता-पिता, रक्षा एवं देखभाल करने वाला	=	______________
5.	संस्कृति से संबंधित	=	______________
6.	समाज से संबंधित	=	______________
7.	सबसे श्रेष्ठ	=	______________

पढ़ो, समझो और लिखो

वर्ष	:	वार्षिक	अभिनंदन	:	अभिनंदित
सप्ताह	:	______	सम्मान	:	______
समाज	:	______	आयोजन	:	______
संस्कृति	:	______	स्थापना	:	______
अर्थ	:	______			

शुद्ध करके लिखो

वरषीय, सलाना, छुटी, स्कुल, दौडकर, प्रिंसीपल, समारो, परितियोगता, कीरतीमान, मूछें, शाबश, सतर

नीचे अंग्रेज़ी और हिंदी के शब्द घुलमिल गए हैं अतः अंग्रेज़ी के साथ सही हिंदी शब्द चुनकर लिखो

बाउंड्री	क्लास	अंक	प्रधानाचार्य	पाठशाला	स्कूल
स्नानागार		प्रपत्र	चारदीवारी	परीक्षण बाथरूम	
टैस्ट		फॉर्म	कक्षा नंबर	प्रिंसीपल	

अंग्रेज़ी शब्द	हिंदी शब्द
बाउंड्री	चारदीवारी
______	______
______	______
______	______
______	______
______	______
______	______

नीचे फ़ारसी और हिंदी के शब्द घुलमिल गए हैं अतः फ़ारसी के साथ सही हिंदी शब्द चुनकर लिखो

सालाना	प्रवेश	हर	जलसा	विशेष	ज़रूर
वार्षिक	अंदर	खास	व्याकुल	नहीं	तो सभा
रोज़ाना	परेशान	नित्य	प्रत्येक	वरना	अवश्य

फारसी शब्द	हिंदी शब्द
सालाना	वार्षिक
______	______
______	______
______	______
______	______
______	______

पाठ–14

मैं झरना

उछल पहाड़ों के शिखरों से,
झर झर झर झर झरता हूँ,
आओ सुनो कहानी मेरी,
झरना मैं खुद को कहता हूँ।

छोटे बड़े पहाड़ों में से,
अपनी राह बनाता हूँ,
चीर-चीर चट्टानों को मैं,
आगे बढ़ता जाता हूँ।

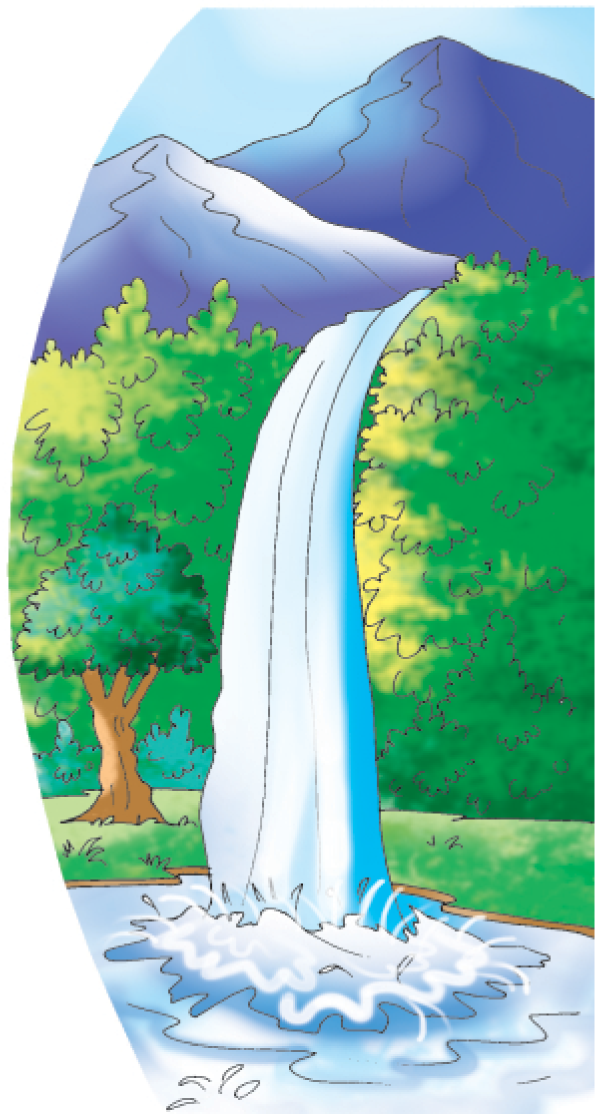

पथ की सारी बाधाओं से,
खेल-खेल कर भिड़ता हूँ
थकता हूँ मैं नहीं कभी भी,
पीछे कभी न हटता हूँ।

नहीं जानता हूँ मैं रोना,
हँसता हर पल गाता हूँ,
प्यासे पौधे, पंछी, पंथी,
सबकी प्यास बुझाता हूँ।

सूरज-चंदा ताराओं को,
गोदी में दुलराता हूँ,
बहता हूँ धरती पर,
पर अम्बर को गले लगाता हूँ।

अभ्यास

शब्दार्थ

शिखर	:	चोटी	पथ/राह	:	रास्ता
बाधा	:	कठिनाई, रुकावट	पंथी	:	राही
अम्बर	:	आकाश			

बताओ

1. झरना कहाँ से निकलता है ?
2. झरने के रास्ते में कौन-कौन सी बाधाएँ आती हैं ?
3. झरना किन-किन की प्यास बुझाता है ?
4. झरना कहाँ पर बहता है ?
5. बहता झरना आपको क्या प्रेरणा देता है ?

सरलार्थ लिखो

नहीं जानता हूँ मैं रोना,
हँसता हर पल गाता हूँ।
प्यासे पौधे, पंछी, पंथी,
सबकी प्यास बुझाता हूँ।

समानार्थक शब्द लिखो

पहाड़ : ________

राह : ________

सूरज : ________

धरती : ________

चंदा : ________

अम्बर : ________

बहुवचन रूप लिखो

शिखर : ________

पहाड़ : ________

चट्टान : ________

पौधा : ________

तारा : ________

जानिए

* **जब नदी का पानी चट्टानों के ऊपर से नीचे गिरता है तो झरना बनता है।**
* **यदि झरना बहुत बड़ा हो तो उसे जल-प्रपात कहा जाता है।**
* **विश्व के तीन सबसे प्रसिद्ध जल प्रपात हैं–**

  अमेरिका का नियाग्रा फॉल्स

  अफ्रीका का विक्टारिया फॉल्स

  अर्जेंटीना, ब्राजील और पेराग्वे का इगूआसू फॉल्स

कवि की कल्पनाशीलता

कविता की उन पंक्तियों को पढ़ो जिनमें कवि की अनूठी कल्पना शक्ति दिखाई देती है। दिन में सूरज और रात में चंद्रमा तथा तारों का प्रतिबिम्ब बहते झरने के जल में हिलता हुआ दिखायी देता है। मानो झरना उन्हें अपनी गोद में दुलार रहा हो। ऐसा लगता है मानो पूरा आकाश झरने में सिमट गया है।

अध्यापन संकेत : अध्यापक बच्चों को बताए कि हमें जल-स्त्रोतों जैसे नदियों, नहरों, जलाशयों झरनों आदि को साफ़-सुथरा रखना चाहिए। हमें उन्हें प्रदूषित नहीं करना चाहिए।

पाठ–15

एक दीवाली ऐसी भी !

दीवाली को केवल दो दिन ही शेष थे। स्कूल से घर आते ही वह माँ से पटाखे लाने की जिद्द करने लगा।

माँ के समझाने पर कि बेटा हाथ–मुँह धोकर खाना खाओ। तब तक मैं पिताजी को फ़ोन लगाती हूँ। दीपक खाना खाने लगा। माँ 'बेटा पिता जी से बात हो गई है। वह जब दफ्तर से आएँगे, तब तुझे पटाखे और नई पोशाक भी दिला देंगे। तब तक तुम अपना पढ़ाई का काम पूरा कर लो।' माता जी की बात सुनते ही दीपक ने अपना खाना निपटाया और हाथ–मुँह धोकर अपना गृहकार्य करने बैठ गया।

स्कूल का काम समाप्त करने के बाद वह उत्साहित हुआ और घर के बरामदे में खड़ा पिता जी का इंतजार करने लगा। उनका घर बाज़ार में ही था। बाज़ार में खूब रौनक थी। चारों ओर चहल–पहल थी। लोग मिठाइयाँ, गिफ्ट, पटाखे व घर को सजाने का सामान इत्यादि खरीद रहे थे। बाज़ार खचाखच भरा हुआ था। दीपक ऊपर से खड़ा सब दृश्य देख रहा था। सब तरफ से हॉकरों की आवाज़ें आ रही थीं। हर किसी को खरीददारी करके घर पहुँचने की जल्दी थी। वह खुद भी दीवाली की खरीददारी करने के लिए लालायित हो रहा था।

शाम होने लगी। देखते ही देखते बाज़ार में बत्तियाँ जलने लगीं। अचानक दीपक की नज़र एक कुर्ता–पायजामा पहने कंधे पर काले रंग का बैग उठाए हुए नौजवान पर पड़ी। जिसका मुँह लगभग ढका हुआ था। वह बाज़ार में घुसते ही नज़र इधर–उधर दौड़ाने लगा। सबसे नज़र बचाता हुआ वह एक पटाखों के स्टॉल के पास पहुँचा। अपना बैग नीचे रखकर पटाखों का मोल–भाव करने लगा। ग्राहक, दुकानदार इत्यादि सभी अपने–अपने काम में मस्त एवं व्यस्त थे। वह नौजवान पटाखे देखते–देखते पाँव से बैग को अंदर की तरफ सरका रहा था।

उसे देखकर दीपक के दिमाग में आज अध्यापक द्वारा बतायी गई बातें घूमने लगीं। 'बच्चो, पर्वों त्योहारों, मेलों, एवं सामूहिक आयोजनों पर हमें विशेषतौर पर सतर्क रहना चाहिए जैसे गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, दीवाली, होली और वैशाखी इत्यादि। इन दिनों असामाजिक तत्व अधिक सक्रिय हो जाते हैं। देश की एकता और अखण्डता को खतरा पैदा हो जाता है। इसलिए सब त्योहारों को उत्साह एवं उमंग से मनाने के साथ–साथ हमें इन तत्वों से सजग एवं सतर्क अवश्य रहना चाहिए। ये सब बातें याद आते ही दीपक को एकदम से किसी अनहोनी की आशंका होने लगी।'

उधर देखते ही देखते वह नौजवान बिना पटाखे खरीदे चलने लगा। दीपक चिल्लाया, 'कुर्ते–पायजामे वाले को पकड़ो–पकड़ो।' नौजवान लगभग दौड़ने–सा लगा। सब इधर–उधर झाँकने लगे। अफरा–तफरी मच गई। कुछ लोग कुर्ते–पायजामे वाले के पीछे–पीछे दौड़ने लगे। तभी 'पकड़ो' 'पकड़ो' की आवाज़ें

गूँजने लगी। दीपक पलक झपकते ही सीढ़ियाँ उतरता हुआ नीचे आ पहुँचा। शोर सुनकर दीपक की माँ भी बरामदे की ओर लपकी। बाज़ार में सब सतर्क हो गए। पुलिस सहायता कक्ष पर तैनात पुलिस भी भागी। सबने मिलकर उस नौजवान को पकड़ लिया।

दीपक के बताने पर दो सिपाही बैग के पास पहुँचे। तभी वायरलैस से फ़ोन पर बम विशेषज्ञ को बुलाया गया। इतने में पुलिस ने जनता को घरों में लौट जाने का परामर्श दिया। काले बैग में पड़े बम को कुछ ही पलों में निष्क्रिय कर दिया गया। सबने राहत की साँस ली। दीपक की माँ दौड़ती हुई नीचे आई और उसे अपनी बाँहों में भर लिया। तभी दीपक के पिताजी भी आ पहुँचे।

अपने बेटे को पुलिस के पास खड़ा देखकर उनके पाँव तले ज़मीन खिसक गई। तभी इंस्पैक्टर दीपक के सिर पर हाथ फेरते हुए कहने लगा, 'आज आपके बेटे की सतर्कता, जागरूकता एवं बुद्धिमता के कारण बहुत बड़ा हादसा होने से टल गया। कितने लोगों की जानें चली जातीं और बाज़ार श्मशान में तबदील हो जाता। हमारी थोड़ी-सी लापरवाही और चूक ही स्वार्थी लोगों को आतंक फैलाने का अवसर देती है।' यह शब्द सुनते ही दीपक के माता-पिता का मन गद्‌गद हो उठा।

तभी यह ख़बर सुनते ही अखबारों के प्रैस रिपोर्टर वहाँ आ पहुँचे। दीपक और उसके माता-पिता का फोटो खींचकर दीपक की इंटरव्यू लेने लगे। दीपक को शाबाश देते हुए पुलिस उस नौजवान को जीप में बिठाकर थाने ले गयी। लोग दीपक को दुआएँ देते हुए घरों को लौटने लगे। आज दीपक सबकी आँखों का तारा बना हुआ था। यहाँ तक कि वह पटाखे लेना भी भूल गया।

अगले दिन दीपक अपनी सतर्कता एवं बुद्धिमता के कारण सभी अख़बारों के पहले पृष्ठ पर छाया हुआ था।

अभ्यास

शब्दार्थ

शेष	:	बाकी	असामाजिक तत्व	:	ऐसे लोग जो समाज विरोधी कार्य करते हैं
पोशाक	:	सिले-सिलाये वस्त्र			
सतर्क	:	जागरूक	आशंका	:	डर
रौनक	:	चहल-पहल	अनहोनी	:	जिसके बारे पता न हो
झाँकना	:	छिपकर देखना	उमंग	:	ललक
उत्साह	:	हौसला	चूक	:	गलती
तबदील	:	बदल देना	इंटरव्यू	:	प्रश्न पूछना
आयोजन	:	किसी भी कार्य की व्यवस्था करना			

बताओ

1. स्कूल से आते ही दीपक ने माँ से क्या ज़िद्द की ?
2. स्कूल का काम समाप्त करने के बाद दीपक क्या करने लगा ?
3. अचानक दीपक की नज़र कहाँ पड़ी ?
4. कुछ लोग देश में आतंक क्यों फैलाते हैं ?
5. हमें किन से सतर्क रहना चाहिए ?
6. दीपक ने लावारिस वस्तु मिलने पर क्या किया ?
7. बम फट जाने से क्या नुकसान होता ?
8. दीवाली पर लोग आमतौर पर क्या-क्या खरीदते हैं ?
9. दीपक का फोटो अख़बार में क्यों छपा ?

वाक्य पूरे करो

1. सब तरफ से _______ की आवाज़ें आ रही थीं।
2. देखते ही देखते बाज़ार में _______ जलने लगीं।
3. दीपक चिल्लाया, "_______ वाले को पकड़ो-पकड़ो।"
4. _______ सुनकर दीपक की माँ _______ की ओर लपकी।

5. तभी वायरलैस फ़ोन पर ______ को बुलाया गया।

6. हमारी थोड़ी-सी ______ और ______ ही स्वार्थी लोगों को ______ फैलाने का अवसर देती है।

7. वह ______ लेना ही भूल गया।

पढ़ो, समझो और लिखो

स्वतंत्र	**स्वतंत्रता**	जागरूक	______
अखंड	______	विशेष	______
सजग	______	सतर्क	______

विराम चिह्न लगाओ

अपने बेटे को पुलिस के पास खड़ा देखकर उनके पाँव तले ज़मीन खिसक गई तभी इंस्पैक्टर दीपक के सिर पर हाथ फेरते हुए कहने लगा आज आपके बेटे की सतर्कता जागरूकता एवं बुद्धिमता के कारण बहुत बड़ा हादसा होने से टल गया यह शब्द सुनते ही माता-पिता का मन गद्गद हो उठा

	वाक्य बताओ	**अर्थ**	**वाक्य**
1.	लालायित होना	______	______
2.	नज़र बचाना	______	______
3.	मोल भाव करना	______	______
4.	अफरा-तफरी मचना	______	______
5.	राहत की साँस लेना	______	______
6.	बाँहों में भरना	______	______
7.	श्मशान में तबदील होना	______	______
8.	मन गद्गद हो उठना	______	______
9.	आँखों का तारा	______	______
10.	दुआएँ देना	______	______
11.	छा जाना	______	______

करो

1. दीवाली पर बाज़ार के दृश्य पर दस पंक्तियाँ लिखो।
2. आप दीवाली कैसे मनाते हैं, लिखो।
3. आप दीपक की जगह होते, तो क्या करते ?

पाठ–16

प्लास्टिक : सजग प्रयोग

बच्चो, सुबह उठते ही आपके दिन की शुरुआत टूथब्रश से होती है। फिर सुबह से विद्यालय जाने तक, विद्यालय से लौटकर रात को सोने तक आप बहुत-सी वस्तुओं का उपयोग करते हो जैसे बाल्टी, मग, कंघी, वाटर बॉटल, टिफिन बॉक्स, पैन, शार्पनर, कुर्सी, मेज़, खिलौने, टेलीफ़ोन, रेडियो, टेलीविज़न, कंप्यूटर तथा मोबाइल इत्यादि।

क्या आप बता सकते हो कि ये सब वस्तुएँ किससे बनी हैं ? मुझे मालूम है आपका उत्तर होगा– प्लास्टिक।

हाँ, ये सब वस्तुएँ प्लास्टिक से ही बनी हैं। वास्तव में हम आज के युग को 'प्लास्टिक युग' की संज्ञा दे सकते हैं क्योंकि घर हो या बाहर चारों ओर बस प्लास्टिक ही प्लास्टिक का साम्राज्य है। इसने हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपना दबदबा बना लिया है। यह आज विश्व भर में सबसे अधिक प्रयोग होने वाला मानव निर्मित पदार्थ है।

विभिन्न प्लास्टिकों से निर्मित वस्तुओं का उपयोग घरों में होने के साथ-साथ कृषि, परिवहन, भवन-निर्माण, चिकित्सा आदि विभिन्न क्षेत्रों में निरंतर बढ़ता ही जा रहा है।

कृषि क्षेत्र में सिंचाई के साधनों में, पशु आवास के निर्माण में तथा ग्रीन हाउस की छत बनाने में विभिन्न प्लास्टिकों का उपयोग किया जाता है। परिवहन के क्षेत्र में सभी परिवहन साधनों के टायर-ट्यूब रबड़ (एक प्रकार की प्लास्टिक) से बनाए जाते हैं। आजकल मोटर-साइकिलों व स्कूटरों की बाडी भी प्लास्टिक की ही बनाई जाती है। भवन-निर्माण में आजकल प्लास्टिक के बने खिड़की, दरवाज़े तथा चौखट प्रयोग में लाए जाते हैं। छत निर्माण में भी प्लास्टिक का उपयोग किया जाता है। चिकित्सा के क्षेत्र में भी अलग-अलग प्रकार के प्लास्टिकों का प्रयोग काफी बढ़ गया है। विकलांगों के लिए कृत्रिम अंग (हाथ, पाँव व आँख आदि), चश्मे के फ्रेम तथा ग्लास-प्लास्टिक के ही बनते हैं। चश्मे से कतराने वालों के लिए 'कान्टेक्ट लेंस' एक विशेष प्रकार के प्लास्कि से बनाए जाते हैं। प्लास्टिक सर्जरी में तथा हृदय के कृत्रिम भाग (वाल्व आदि) बनाने में प्लास्टिक की विशेष भूमिका है।

घर की रोज़मर्रा की खाद्य-सामग्री तथा घरेलू सामान आटा, चीनी, घी, दूध, पनीर, दालें तथा सब्ज़ियाँ आदि प्लास्टिक की थैलियों में ही आते हैं। आईसक्रीम के कप, कोल्डड्रिंक तथा मिनरल वाटर की बोतलें भी इसी प्लास्टिक से बनती हैं। यह प्लास्टिक लोगों में पॉलीथीन के नाम से लोकप्रिय

है। यह पॉलीथीन अन्य धातुओं की तुलना में सस्ता, हल्का, मज़बूत तथा सुविधाजनक होने के कारण हमारे घरों का अभिन्न अंग बन गया है। इसने हमारे दैनिक जीवन को सरल व सुगम बना दिया है।

बच्चो, प्लास्टिक जगत की यात्रा में आपने अब तक जो भी जानकारी प्राप्त की है वह पूर्ण नहीं है, अधूरी है। इस जानकारी को पूरा करने के लिए आपको कुछ प्रश्नों के उत्तर पता होने चाहिए जैसे क्या प्लास्टिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है या नहीं ? क्या खाद्य पदार्थ प्लास्टिक या पॉलीथीन के संपर्क में आने पर सुरक्षित रहते हैं या नहीं ? क्या प्लास्टिक का पर्यावरण पर दुष्प्रभाव पड़ता है या नहीं ? क्या प्लास्टिक को मिट्टी में दबाने, जलाने या जल में बहाने से प्रदूषण होता है या नहीं ?

'क्या आप इन प्रश्नों के उत्तर दे सकते हो ?' चलिए, मैं ही इनके उत्तर देकर आपकी ज्ञानवृद्धि कर देती हूँ।

सामान्यत: अच्छी कोटि के प्लास्टिक को हानिकारक या विषैला नहीं माना जाता। खाद्य-पदार्थ भी प्लास्टिक के संपर्क में आने पर विषैले नहीं होते इसीलिए इसका प्रयोग मिठाइयों, दूध, दही, नमक, अनाज आदि की पैकिंग में होता है। अच्छी कोटि की प्लास्टिक की थैलियों में खाद्य पदार्थों की पैकिंग करना पूर्णत: सुरक्षित व स्वास्थ्यकारी होता है। इस प्लास्टिक में रखी वस्तुएँ बहुत समय तक रखने पर खराब नहीं होतीं। इसमें नमी और रसायन के प्रति प्रतिरोधता होती है। प्लास्टिक या पॉलीथीन स्वयं में नुकसानदायक नहीं होता किंतु जब इसमें बाहरी घटक रंगीन पदार्थ मिलाए जाते हैं तो ये स्वास्थ्य के लिए खतरनाक होते हैं। घटिया व सस्ते प्लास्टिक में लंबे समय तक रखे खाद्य-पदार्थ में भी प्लास्टिक के हानिकारक योगशील रसायन घुल जाते हैं जो स्वास्थ्य के लिए घातक साबित होते हैं।

बच्चो, इसी प्रकार प्लास्टिक कचरे (पॉलीथीन की थैलियाँ, कोल्डड्रिंक्स, मिनरल वाटर की बोतलें तथा पैकिंग सामग्री आदि) के कारण भी हमारे पर्यावरण पर पर्याप्त दुष्प्रभाव पड़ता है। शहरों, नगरों, महानगरों व गाँवों में तथा तालाबों, झीलों, नदियों, समुद्रों व पहाड़ों में प्लास्टिक कचरे की उपस्थिति मिट्टी, वायु तथा जल को प्रदूषित करने के लिए काफी हद तक ज़िम्मेदार हैं।

जिस प्रकार कागज़ जैसे पदार्थ पानी, हवा और सूर्य प्रकाश से भुरभुरा कर मिट्टी में घुलमिल जाते हैं। लकड़ी जैसे पदार्थ कीड़े-मकौड़ों व दीमक द्वारा रासायनिक प्रक्रिया द्वारा अपघटित कर दिए जाते हैं। खाद्य-पदार्थ, मृतजीव शरीर प्रकृति में उपस्थित बैक्टीरिया द्वारा जैविक रूप से नष्ट कर दिए जाते हैं किन्तु प्लास्टिक तथा पॉलीथीन ऐसे रासायनिक पदार्थ हैं जो न तो सड़ते हैं, न ही घुलते हैं न ही प्रकृति में जैविक विधि से नष्ट होते हैं। प्लास्टिक कचरे को ज़मीन में दबाने पर यह मिट्टी का ही प्रदूषण करता है। मिट्टी की जल को संचित करने की क्षमता तथा मिट्टी की उर्वर शक्ति को कम कर देता है। मिट्टी

में दबे प्लास्टिक के रसायन गर्मी पाकर विषैली गैसें उत्पन्न करते हैं जिनसे भूमि में रहने वाले जीवाणु, कीड़े मकौड़े प्रभावित होते हैं। जमीन पर फैंके प्लास्टिक कचरे को गाय-भैंसों जैसे पशु निगल कर असमय ही मौत के मुँह में समा जाते हैं।

बच्चो, क्या आप जानते हैं कि जब प्लास्टिक कचरे को पुनरुत्पादन के लिए खुले में जलाया व पिघलाया जाता है तो शहरी कचरे के साथ-साथ प्लास्टिक तथा पॉलीथीन भी जल जाते हैं जिनसे कई हानिकारक विषाक्त पदार्थ व जहरीली गैसें निकलती हैं जो वातावरण में घुलकर वायुमंडल को दूषित करती हैं तथा मानव स्वास्थ्य को भी नुकसान पहुँचाती हैं।

प्लास्टिक कचरे के कारण शहरों में नाले-नालियाँ तथा सीवर बंद हो जाते हैं। गंदा पानी चारों ओर फैल जाता है जिनसे लोगों को कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। मच्छर, मक्खी तथा अनेक प्रकार के रोगाणु पैदा होकर मानव स्वास्थ्य को हानि पहुँचाते हैं।

बच्चो, अब तक तो आप जान ही गए होंगे कि आज प्लास्टिक प्रदूषण हमारे समक्ष गंभीर चिंतन का विषय है। भारत सरकार तथा विभिन्न राज्य सरकारें प्लास्टिक प्रदूषण को रोकने के लिए प्रयत्न कर रही हैं जैसे दिल्ली, चंडीगढ़ तथा हिमाचल प्रदेश में पॉलीथीन के प्रयोग पर पाबंदी है। विभिन्न सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाएँ भी इस पर नियंत्रण करने के लिए परियोजनाएँ चला रही हैं। किंतु जब लोग प्लास्टिक प्रदूषण को रोकने के लिए सामूहिक रूप से स्वयं कुछ प्रयास व उपाय करें तभी इसको रोका जा सकता है जैसे-प्लास्टिक के स्थान पर कागज़ को ही पैकिंग आदि में प्रयोग करें। पॉलीथीन की थैलियों के स्थान पर कपड़े या जूट से बने थैलों का उपयोग करें। प्लास्टिक कचरा इधर-उधर खुले में न फैंकें, न ही जलाएं।

बच्चो, आप भी इस प्लास्टिक प्रदूषण नियंत्रण अभियान में शामिल हो जाइए और अभियान को सफल बनाइए।

अभ्यास

शब्दार्थ

साम्राज्य	:	दबदबा	चिकित्सा	:	इलाज, उपचार
परिवहन	:	एक स्थान से दूसरे स्थान तक	विकलांग	:	अंग से हीन
सर्जरी	:	शल्य चिकित्सा	कृत्रिम	:	बनावटी, नकली
उपलब्ध	:	प्राप्त	पर्यावरण	:	वातावरण
भुरभुरा	:	अलग-अलग होने वाला	अपघटित	:	नाश, क्षय
विषाक्त	:	विष से युक्त	उर्वर	:	उपजाऊ

जीवाणु : विकार से उत्पन्न होने वाले अति सूक्ष्म जीव

दुष्प्रभाव : बुरा प्रभाव

प्रतिरोधता : रुकावट, बाधा

चिंतन : सोच-विचार करना

अभियान : सामूहिक रूप से कोई कार्य करना

बताओ

1. सुबह उठते ही आपके दिन की शुरुआत किससे होती है ?
2. आज के युग को किसकी संज्ञा दे सकते हैं ?
3. विभिन्न प्लास्टिकों से बनी वस्तुओं का उपयोग किन-किन क्षेत्रों में हो रहा है ?
4. कृषि क्षेत्र तथा भवन निर्माण में प्लास्टिक से क्या-क्या वस्तुएँ बनती हैं ?
5. परिवहन क्षेत्र में प्लास्टिक से क्या निर्मित होता है ?
6. चिकित्सा क्षेत्र में प्लास्टिक की क्या भूमिका है ?
7. घर में रोज़मर्रा की खाद्य सामग्री किसमें आती है ?
8. अच्छी कोटि के प्लास्टिक या पॉलीथीन तथा घटिया प्लास्टिक या पॉलीथीन में अंतर स्पष्ट करें।
9. हमारे पर्यावरण पर किसका दुष्प्रभाव पड़ता है ?

चार-पाँच वाक्यों में उत्तर दो

1. सबसे लोकप्रिय प्लास्टिक कौन-सा है ? खाद्य-सामग्री में उसका उपयोग किस प्रकार से हो रहा है ?
2. कौन-कौन से पदार्थ प्रकृति में अपघटित (नष्ट) हो जाते हैं और कौन से नहीं ?
3. प्लास्टिक प्रदूषण की रोकथाम के लिए आप क्या योगदान दे सकते हैं ? लिखो।

विपरीत शब्द लिखो

कृत्रिम : ________

निर्माण : ________

उपयोग : ________

उपस्थित : ________

हानि : ________

स्वच्छ : ________

गंदा लाभ विनाश अनुपस्थित प्राकृतिक दुरुपयोग

समानार्थक शब्द लिखो

विश्व : ______

दिन : ______

रात : ______

नदी : ______

समुद्र : ______

पहाड़ : ______

सूर्य : ______

वायु : ______

वचन बदलो

बाल्टियाँ : ______

डिब्बा : ______

सब्ज़ी : ______

बोतलें : ______

वस्तुएँ : ______

अपना : ______

विषैला : ______

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखो

वातावरण लोकप्रिय विषाक्त
पुनरुत्पादन दुष्प्रभाव हानिकारक
अभियान विकलांग परियोजना

अंग से हीन : ______

विष से युक्त : ______

लोगों में प्रिय : ______

व्यवस्थित आंदोलन : ______

दोबारा उत्पादन करना : ______

बुरा प्रभाव : ______

हानि पहुँचाने वाला : ______

नियमित एवं व्यवस्थित रूप से : ______

पृथ्वी के चारों ओर की वायु : ______

वाक्य बनाओ

कृषि : ______

पर्यावरण : ______

स्वास्थ्य : ______

संचित : ______

नियंत्रित : ______

रोगाणु : ______

पढ़ो, समझो और लिखो

अभि + यान = अभियान, **अभिमान**

प्र + दूषित = प्रदूषित, ______

सह + योगी = सहयोगी, ______

उप + योगी = उपयोगी, ______

परि + योजना = परियोजना, ______

अप + घटित = अपघटित, ______

सु + गम = सुगम, ______

वि + भिन्न = विभिन्न, ______

सोचिए और लिखिए

*घटिया प्लास्टिक किस तरह वायु, जल तथा मिट्टी को प्रदूषित कर रहा है ? पाँच-सात वाक्य लिखो।

*हमारे दैनिक जीवन में घटिया प्लास्टिक से बनने वाली चीज़ों की सूची बनाएँ और उन चीज़ों के विकल्प भी बताएँ।

	घटिया प्लास्टिक से बनी चीज़ें	विकल्प
1.	पॉलीथीन लिफ़ाफ़े	कागज़ के लिफ़ाफ़े, कपड़े के थैले आदि
2.		
3.		
4.		
5.		

पाठ – 17

उन्नति का मंत्र

कभी सवेरा कभी अँधेरा
        कभी चाँद मुसकाता है।
खिलता फूल कभी डाली पर,
        वही कभी झड़ जाता है।
कभी बालपन मिलता हमको,
        कभी जवानी आती है।
पागल बन जब झूमा करते,
        तभी जरा आ जाती है,
समय निरंतर बढ़ता जाता,
        बदल रहा जग–जीवन है।
बल रही है पत्ती–पत्ती,
        बदल रहा सब कण–कण है।
यदि इच्छा है सुख की तुमको,
        समय व्यर्थ मत खोना रे।
जो कुछ करना, करो समय पर,
        नहीं आलसी होना रे।
समय मान है, समय प्राण है,
        समय सभी सुख–दाता है।
समय नष्ट कर नहीं कोई भी,
        विद्या–धन सुख पाता है।
नहीं समय को कभी गँवाओ,
        मंत्र उन्नति का याद रहे।
मूल्य समय का जो पहचाने,
        जीवन उसका आबाद रहे।

अभ्यास

शब्दार्थ

उन्नति	= तरक्की, आगे बढ़ना	बालपन	= बचपन
जरा	= बुढ़ापा	निरंतर	= लगातार, बिना रुके
आबाद	= बसा हुआ, खुशहाल		

बताओ

1. संसार में लगातार परिवर्तन होता रहता है, इसके कोई पाँच उदाहरण लिखो।
2. समय नष्ट न करने वाले को क्या मिलता है ?
3. कवि ने उन्नति का कौन-सा मंत्र कविता में दिया है ?
4. 'समय अमूल्य है' इस विषय पर पाँच वाक्य लिखो।

सरलार्थ करो

कभी बालपन मिलता हमको,
कभी जवानी आती है।
पागल बन जब झूमा करते,
तभी जरा आ जाती है।

वाक्य बनाओ

बालपन : ____________________

नष्ट : ____________________

इच्छा : ____________________

सुख : ____________________

समानार्थक शब्द लिखो

सवेरा : ________

अंधेरा : ________

चाँद : ________

फूल : ________

डाली : ________

विपरीत शब्द समझो

इच्छा	=	अनिच्छा
सुख	=	दु:ख
आलसी	=	चुस्त
जीवन	=	मृत्यु
आबाद	=	उजाड़

रेखांकित शब्दों के वचन बदल कर वाक्य दोबारा लिखो

<u>यह</u> आम के <u>पेड़</u> की <u>डाली है</u>। ______________________________

<u>पेड़</u> <u>का</u> <u>पत्ता</u> हरा <u>है</u>। ______________________________

नये शब्द बनाओ

न् + न = न्न = उन्नति ______________________________

त् + र = त्र = मंत्र, ______________________________

त् + त = त्त = पत्ती, ______________________________

प् + र = प्र = प्राण, ______________________________

ष् + ट = ष्ट = नष्ट, ______________________________

द् + य = द्य = विद्या, ______________________________

शब्दों की माला पूरी करो

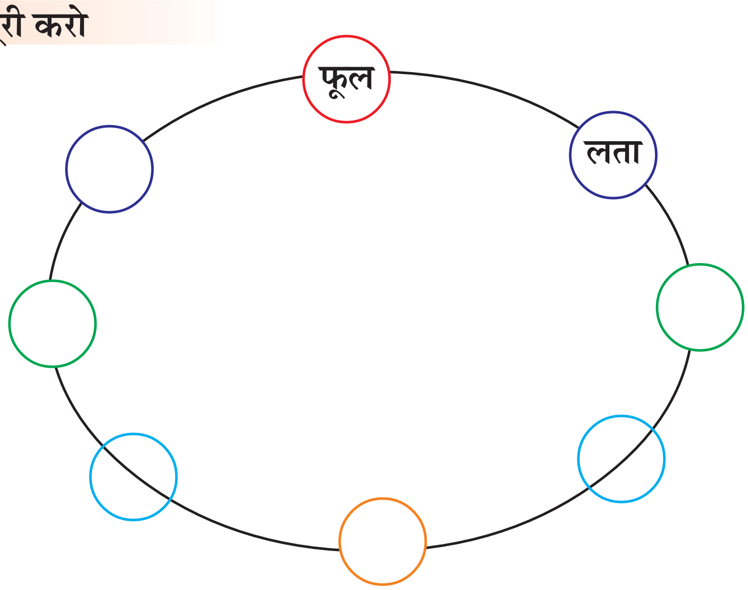

पाठ–18

नारियल का बगीचा-केरल प्रदेश

हमारा भारत देश अलग-अलग प्रदेशों से मिलकर बना हुआ है। भारत में कुल 28 प्रदेश हैं, जिनमें केरल प्रदेश बहुत ही समृद्ध और प्रसिद्ध है। केरल के पूर्व में अरब सागर, पश्चिम में तमिलनाडु, उत्तर में कर्नाटक तथा दक्षिण में हिंद महासागर है। केरल की राजधानी तिरुअन्तपुरम है।

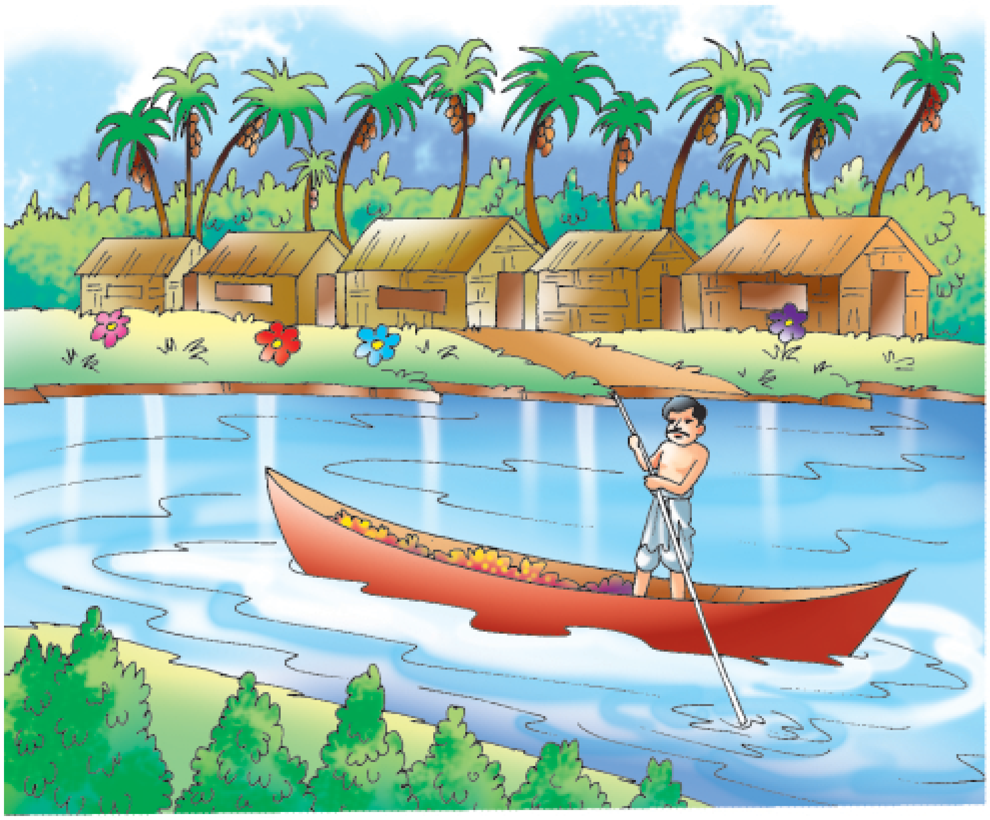

केरल समुद्री तट पर स्थित है और समुद्र के किनारे-किनारे नारियल के वृक्षों की लम्बी पट्टी बिछी हुई है जो कि इसकी सुंदरता को चार चाँद लगा देती है। हैलीकाप्टर या हवाई जहाज़ से देखने पर इतना मनोहरी दृश्य बनता है कि केरल को 'नारियल का बगीचा' भी कहा जाता है। नारियल के वृक्ष को 'केरल का कल्पवृक्ष' भी कहते हैं क्योंकि यहाँ की बहुत-सी ज़रूरतें नारियल के वृक्षों द्वारा पूरी होती हैं।

केरल दो तरफ समुद्र से घिरा हुआ है अत: यहाँ का मौसम बहुत सुहावना रहता है। यहाँ न अधिक गर्मी और न ही अधिक सर्दी होती है। यही कारण है कि इसकी सुंदरता प्राकृतिक दृश्य कश्मीर के तुल्य माने जाते हैं। इसके मनोरम दृश्य की वजह से ही इसे 'भारत का नंदनवन' भी कह कर पुकारा जाता है।

केरल की सुंदरता को बढ़ाने में यहाँ पर पड़ने वाली भारी वर्षा का भी बहुत योगदान है। यहाँ 400 सै.मी. से 500 सै.मी. तक वर्षा होती है। इसी कारण यहाँ घने जंगल पाए जाते हैं जिनमें रबड़, चंदन, सागौन तथा शीशम के वृक्षों की बहुतायत है। केरल के ज्यादातर उद्योग धंधे इन जंगलों पर ही आधारित हैं। केरल के जंगलों में हाथी, शेर, चीता, भेड़िया, रीछ आदि जानवर भी बहुत संख्या में पाए जाते हैं। हाथी यहाँ का विशेष प्रिय जानवर है। इसे लकड़ियाँ ढोने और सवारी करने में विशेष तौर पर इस्तेमाल किया जाता है।

केरल प्रदेश में नीलगिरी पर्वत फैला हुआ है। इस पर्वत पर चाय के बाग़ानों की भरमार है। चाय की पत्ती के इलावा कालीमिर्च, इलायची, सुपारी आदि वस्तुएँ देश-विदेश में भेजी जाती हैं। यहाँ भारी वर्षा के कारण चावल की फसल भी अधिक मात्रा में होती है।

केरल में समुद्री किनारे, झीलें, नदियाँ और नहरों की बहु-संख्या है। अत: एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए नाव का प्रयोग ही किया जाता है। इसके इलावा पक्की सड़कों का जाल बिछा हुआ है। यहाँ रेलों की संख्या बहुत कम है।

केरल के लोगों का मुख्य भोजन चावल और मछली है। यहाँ पर बनने वाली चावल की बहुत-सी चीजें जैसे इडली, डोसा, उपमा, उत्तपम, पोहा आदि देश क्या विदेश में भी अपने स्वाद के कारण लोकप्रिय हो चुकी हैं। इनके इलावा फिश करी, केरल राईस, परांठा भी बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ खाने के साथ पीने के लिए गुनगुना पानी मसाले डालकर दिया जाता है। जिससे पानी की रंगत और स्वाद बढ़ जाता है।

केरल के लोग बहुत सीधे-सादे हैं। ज्यादातर लोग ढीले-ढाले कपड़े पहनते हैं। औरतें धोती और ब्लाऊज़ पहनती हैं तथा पुरुष लुंगी एवं कुर्ता पहनना पसंद करते हैं। यहाँ बंगला, हिंदी और अंग्रेज़ी भाषाएँ बोली जाती हैं। यहाँ ज्यादातर लोग शिक्षित हैं। भारत में सबसे अधिक शिक्षित लोगों के होने का गौरव केरल को ही प्राप्त है। यहाँ के लोग नृत्य और संगीत के शौकीन हैं। यहाँ का कथकली नृत्य बहुत प्रसिद्ध है।

केरल का मुख्य त्योहार ओणम है। ओणम के आते ही केरलवासियों में अलग ही श्रद्धा और उत्साह भर जाता है। हरेक घर और दुकान को सफ़ाई करके सजाया जाता है। घरों में भिन्न-भिन्न पकवान और मिठाइयाँ बनती हैं। ओणम वाले दिन लक्ष्मी माता और विशेष तौर पर नौका की पूजा-अर्चना की जाती है। इस दिन नौका प्रतियोगिताएँ भी करवाई जाती हैं। उस समय बहुत ही मनोहारी दृश्य बनता है जब पानी की लहरों पर दौड़ती नौकाओं में सवार लोग मधुर गीत गाते हैं और किनारों पर जमा लोग प्रतियोगिता में हिस्सा लेने वालों का हौसला बढ़ाते हैं।

ओणम के त्योहार के अवसर पर हाथियों को विशेष रूप में सजाकर देवताओं की सवारी निकाली जाती है। इसके ठीक बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं जिनमें नृत्य, संगीत, नाटिकाएँ पेश की जाती हैं।

केरल के कुदरती नजारों की खूबसूरती, नारियल के बागों, चाय के बागानों, जंगली जानवरों, जड़ी-बूटियों, सांस्कृतिक नृत्यों व संगीत की जितनी भी तारीफ़ की जाए, कम है। बच्चो, आपको जब कभी भी मौका मिले केरल की यात्रा पर ज़रूर जाना और अपने अनुभव डायरी में लिखना। वैसे घूमने का अच्छा समय अक्तूबर-नवंबर माह है क्योंकि इन महीनों में ज्यादा फूल खिलते हैं और मौसम अच्छा होता है।

अभ्यास

शब्दार्थ

प्रसिद्ध	:	मशहूर	शौक	:	दिलचस्पी
तट	:	किनारा	शिक्षित	:	पढ़े-लिखे
स्वादिष्ट	:	स्वाद	गौरव	:	सम्मान, इज्जत
तुल्य	:	समान	मुख्य	:	खास
योगदान	:	सहयोग	श्रद्धा	:	विश्वास
उद्योग-धन्धे	:	कारोबार	पकवान	:	खाने की चीज़ें
इस्तेमाल	:	प्रयोग	अर्चना	:	प्रार्थना
भरमार	:	अधिकता	कार्यक्रम	:	समारोह
आधारित	:	निर्भर	आयोजित	:	प्रबंध करना
मनोहारी दृश्य	:	मन को छू लेने वाला नज़ारा	तारीफ़	:	प्रशंसा
प्राकृतिक दृश्य	:	कुदरती नज़ारे	सांस्कृतिक	:	संस्कृति से जुड़े हुए

बताओ

1. केरल के समुद्री किनारे के साथ-साथ किस चीज़ की पट्टी बिछी हुई है ?
2. केरल को क्या कहकर बुलाया जाता है ?
3. केरल का प्रिय जानवर कौन-सा है ?
4. केरल के लोगों का मुख्य त्योहार कौन-सा है ?
5. केरल के लोगों का प्रमुख नृत्य कौन-सा है ?

इन प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखो

1. केरल को नारियल का बगीचा क्यों कहते हैं ?
2. केरल को भारत का नंदनवन कहकर क्यों पुकारा जाता है ?
3. केरल के जंगलों में कौन-कौन से वृक्ष पाए जाते हैं ?

4. केरल के लोगों का पहरावा कैसा है ?

5. नारियल के वृक्ष को केरल का कल्पवृक्ष क्यों कहा जाता है ?

6. हाथी केरल के लोगों का प्रिय जानवर क्यों है ?

7. केरल निवासी ओणम का त्योहार कैसे मनाते हैं ?

वाक्यों में प्रयोग करो

तुल्य : ______________________________

विशेष : ______________________________

मनोरम : ______________________________

मुख्य : ______________________________

लोकप्रिय : ______________________________

शिक्षित : ______________________________

प्रतियोगिता : ______________________________

वचन बदलो

मछली :	________	झीलें :	________
नदी :	________	प्रतियोगिता :	________
लड़की :	________	नाटिका :	________
धोती :	________	रस्सी :	________
चटाई :	________	पत्ती :	________

समानार्थक शब्द लिखो

तट :	________	खूबसूरत :	________
मनोहारी :	________	बहुतायत :	________
भरमार :	________		

शुद्ध करके लिखो

परदेशों :	________	परसिध :	________
पशचिम :	________	पूरब :	________
तामीलनाडु :	________	करनाटक :	________

दकशिन	:	_______	नारीअल	:	_______
मनौहारी	:	_______	कलपवृक्ष	:	_______
गुनकारी	:	_______	खुबसुरत	:	_______
पियाले	:	_______	उदयोग–दन्दे	:	_______
विशेश	:	_______	सीदे–सादे	:	_______

पाठ में से ढूँढ़कर पाँच युग्म शब्द लिखो जैसे–अलग–अलग

प्रत्येक वाक्य को पढ़ो। सही (√) या गलत (×) का निशान लगाओ

1. नारियल की लकड़ी का प्रयोग क्रिकेट का बल्ला बनाने में किया जाता है। ( )
2. केरल में मौसम अधिकतर गर्म रहता है। ( )
3. केरल में ज्यादातर लोग खेतीबाड़ी करते हैं। ( )
4. केरल प्रदेश में नीलगिरी पर्वत फैला हुआ है। ( )
5. केरल के लोग रेलगाड़ी से अधिक सफर करते हैं। ( )
6. केरल का प्रसिद्ध नृत्य कथकली है। ( )

वाक्य पूरे करो

(चावल, अरब सागर, श्रद्धा, हिन्द महासागर, उत्साह, साबुन, हाथी, कश्मीर)

1. केरल के पूर्व में _______ और दक्षिण में _______ है।
2. नारियल तेल _______ बनाने में भी काम आता है।
3. केरल के प्राकृतिक दृश्य _______ के तुल्य माने जाते हैं।
4. लकड़ियाँ ढोने और सवारी करने में _______ का प्रयोग किया जाता है।
5. इडली, डोसा, उत्तपम आदि _______ से बनते हैं।
6. ओणम का त्योहार _______ और _______ से मनाया जाता है।

सोचिए और लिखिए

1. केरल प्रदेश से संबंधित चित्र ढूँढ़कर अपनी कॉपी में चिपकाएँ।
2. भारत के अन्य प्रदेशों के बारे में जानकारी मैगज़ीनों, अख़बारों, लाइब्रेरी की पुस्तकों से प्राप्त करें और संग्रह करें।
3. किसी प्रदेश की यात्रा करें तो उसका अनुभव अपनी डायरी में ज़रूर लिखें।

पाठ–19

रेत और पत्थर

'उस क्षति को मत याद रखो
जो किसी ने तुम्हें पहुँचाई,
उस कार्य को भूल जाओ जो
आपने किसी के लिए किया था।'

दो दोस्त समुद्र के किनारे पर टहल रहे थे। टहलते-टहलते किसी बात पर दोनों में बहस शुरू हो गई और नौबत यहाँ तक पहुँच गई कि एक ने दूसरे के गाल पर कसकर चाँटा मार दिया। जिसे चाँटा लगा उसे गहरा आघात पहुँचा, पर मुँह से एक भी शब्द निकाले बिना उसने समुद्र के किनारे पर पड़े रेत पर लिख दिया–

"आज मेरे सबसे प्यारे दोस्त ने मुझे चाँटा मारा"

इसके बाद भी दोनों एक साथ किनारे पर टहलते रहे। कुछ समय बाद समुद्र में भाटे के कारण जल स्तर कम होने लगा। समुद्र के उफान को कम होता देख दोनों ने उसमें नहाने का फैसला किया। समुद्र में नहाते हुए अचानक जिस दोस्त को चाँटा लगा था उसका पैर पानी के नीचे दलदल में फँस गया और वह डूबने लगा। यह देखते ही उसके दोस्त ने तुरंत छलाँग लगाकर उसे बचा लिया और पानी से बाहर ले आया। हल्की बेहोशी के बाद जब उसे होश आया तो उसने स्वयं को दोस्त की बाँहों में पाया। कुछ समय बाद जब वह अपने सहारे खड़ा हुआ तो उसने पास खड़े एक पत्थर पर लिख दिया–

'आज मेरे सबसे अच्छे दोस्त ने मेरी जान बचायी है

यह देखकर उसके दोस्त ने पूछा :'

'जब मैंने तुझे चाँटा मारा था तो उस समय तुमने रेत पर लिखा था, पर इस बार तुमने पत्थर पर लिखा है, ऐसा क्यों ?' दूसरे दोस्त ने उत्तर दिया 'जब कोई व्यक्ति हमें दु:ख या कष्ट देता है तो हमें उसे रेत पर लिख देना चाहिए क्योंकि वहाँ भुलावे रूपी लहरें और हवाएँ उसे मिटा देती हैं परंतु जब कोई हमारे लिए कुछ अच्छा करता है तो हमें उसे पत्थर पर तराशकर लिख देना चाहिए जहाँ कोई हवा या पानी उसे कभी मिटा नहीं पाए !!!'

अपने दु:खों और कष्टों को रेत पर लिखना तथा

खुशियों को पत्थर या फिर हृदय पर तराशना सीखो।

अभ्यास

शब्दार्थ

क्षति	:	नुकसान	भाटा	:	समुद्र के पानी के चढ़ाव का उतार
उफान	:	उबाल	आघात	:	चोट
दलदल	:	कीचड़ से भरी जगह			

बताओ

1. दोनों दोस्त कहाँ टहल रहे थे ?
2. एक दोस्त ने दूसरे दोस्त को चाँटा क्यों मारा ?
3. चाँटा लगने पर दोस्त ने क्या किया ?
4. एक दोस्त बेहोश क्यों हो गया ?
5. होश आने पर उसने क्या किया ?
6. इस कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

समानार्थक शब्द लिखो

दोस्त = **मित्र, सखा**

किनारा = ________, ________

चाँटा = ________, ________

पैर = ________, ________

बाँह = _______, _______

पत्थर = _______, _______

लहर = _______, _______

इन वाक्यों को निर्देशानुसार बदलो

1. दो दोस्त समुद्र के किनारे टहल रहे थे। (वर्तमान काल में बदलो)
2. आज मेरे सबसे प्यारे दोस्त में मेरी जान बचायी है। (भविष्य काल में बदलो)
3. वह डूबने लगा। (वर्तमान काल में बदलो)
4. हल्की बेहोशी के बाद जब उसे होश आया तो उसने स्वयं को दोस्त की बाँहों में पाया। (भविष्य काल में बलो)
5. एक ने दूसरे के गाल पर कसकर चाँटा मारा। (वर्तमान काल में बदलो)

इस पत्थर में सभी शब्द घुलमिल गए हैं। उनमें से क्रिया शब्द छाँटकर उनसे उचित वाक्य बनाओ।

क्रिया शब्द		वाक्य
1. टहलना	=	_______________
2. _______	=	_______________
3. _______	=	_______________
4. _______	=	_______________
5. _______	=	_______________
6. _______	=	_______________

विलोम शब्द लिखो

दोस्त = ______

मारना = ______

नीचे = ______

होश = ______

दुःख = ______

अच्छा = ______

सर्वनाम भरकर वाक्य पूरे करो

1. ______ सबसे प्यारे दोस्त ने चाँटा मारा।
2. इस बार ______ पत्थर पर लिखा है ऐसा क्यों।
3. ______ स्वयं को दोस्त की बाँहों में पाया।
4. ______ डूबने लगा।
5. ______ पैर पानी के नीचे दलदल में फँस गया।

कुछ करने के लिए

1. यदि आपने कभी किसी की सहायता की है तो उसका अनुभव लिखो।
2. वीर बालकों की कथा-कहानियाँ पढ़ो।

पाठ–20

भूल गया है क्यों इंसान

भूल गया है क्यों इंसान।

सबकी है मिट्टी की काया,

सब पर नभ की निर्मल छाया,

यहाँ नहीं कोई आया है, ले विशेष वरदान।

भूल गया है क्यों इंसान।

धरती ने मानव उपजाए,

मानव ने ही देश बनाए,

बहु देशों में बसी हुई है, एक धरा संतान।

भूल गया है क्यों इंसान।

देश अलग हैं, देश अलग हों,

वेश अलग हैं, वेश अलग हों,

मानव का मानव से लेकिन, अलग न अंतर–प्राण।

भूल गया है क्यों इंसान।

अभ्यास

शब्दार्थ

इंसान	:	मानव	काया	:	शरीर
नभ	:	आकाश	निर्मल	:	मल रहित, स्वच्छ
बहु	:	अनेक	धरा संतान	:	पृथ्वी की संतान अर्थात् मानव
अंतर-प्राण	:	हृदय			

बताओ

1. इंसान किस बात को भूल गया है ?
2. अनेक देशों में किसकी संतान बसी हुई है ?
3. देश और वेशभूषा अलग होने पर भी मानव में क्या समानता है ?

सरलार्थ करो

1. सबकी है मिट्टी की काया,
सब पर नभ की निर्मल छाया,
यहाँ नही कोई आया है, ले विशेष वरदान,
भूल गया हैं क्यों इंसान।

समान तुक वाले शब्द मिलाओ

काया	वेश
उपजाए	छाया
देश	संतान
वरदान	बनाए

चित्र को देखो और पाँच पँक्तियाँ लिखो

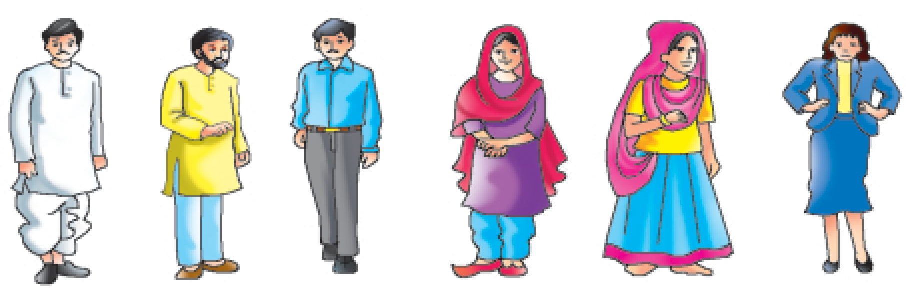

समानार्थक शब्द लिखो

इंसान = **मानव, मनुष्य**

काया = ______, ______

धरा = ______, ______

संतान = ______, ______

करिए

कविता को हाव-भाव के साथ गायें।

नए शब्द बनाओ

मिट्टी : ट् + ट = ______

इंसान : ˉ + स = ______

निर्मल : र् + म = ______

पाठ–21

तेंदुए से मुठभेड़

उत्तराखंड के उत्तरकाशी में खट्टूखाल नाम का एक छोटा-सा गाँव है। यह कहानी इसी छोटे से गाँव में रहने वाली 37 साल की एक औरत के एक बड़े कारनामे की है। इस औरत ने अपनी बहादुरी का ऐसा परिचय दिया कि वह नरभक्षी तेंदुए से भी नहीं डरी और उससे जूझ पड़ी।

यह घटना 18 जुलाई 2010 की है। खट्टूखाल गाँव में छवि नाम की एक औरत अपनी बेटी के साथ सो रही थी। अचानक जंगल से नरभक्षी तेंदुआ वहाँ आ गया। उसने एक ओर छवि की झोंपड़ी के बाहर बँधी हुई भैंसों को देखा तो दूसरी ओर सोई हुई छवि और उसकी बेटी को देखा। इतने शिकार एक साथ देखकर तेंदुए के मन में लड्डू फूटने लगे। वह भूख से व्याकुल था। उससे अब रहा न गया। वह बिना किसी आहट के छवि के पास पहुँचा। अब उसका शिकार उसके सामने था। उसने तुरंत छवि की गर्दन के

बायीं ओर वार किया और उसे अपने मुँह में दबोचकर पूरी ताकत के साथ खींचता हुआ वहाँ से दौड़ पड़ा। शिकार को अपने कब्ज़े में लेकर वह फूला नहीं समा रहा था। दूसरी ओर यद्यपि छवि बुरी तरह से घबरा गयी थी तथापि उसने हिम्मत न हारी। उसे इस बात का अहसास हो गया था कि मौत उसके सिर पर खेल रही है। यकायक छवि में इतनी हिम्मत आ गयी कि उसने पहले तो तेंदुए के पेट पर लगातार लात मारनी

शुरू कर दी। तेंदुआ एक पल के लिए रुक गया तभी छवि ने उससे छूटने की कोशिश करते हुए अपने दोनों हाथों से उसके जबड़े को चीर दिया। तेंदुए ने तो इसकी कल्पना भी न की थी। छवि के इस प्रहार से तो मानो तेंदुए के पैरों तले से ज़मीन ही खिसक गयी। वह वहाँ से तुरंत अपने शिकार को छोड़ कर भाग खड़ा हुआ। छवि की हिम्मत की जीत हो चुकी थी। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह तेंदुए के चुँगल से बच गयी है। उसकी गर्दन से खून बह रहा था। उसने अपने पहने हुए कपड़े का एक हिस्सा फाड़ कर अपनी गर्दन में बाँधा और घायल हालत में लड़खड़ाती हुई घर पहुँची। उसकी बेटी ने गाँव वालों को सारी बात बताई तो गाँव वाले उसे लेकर सबसे पहले गाँव के प्राथमिक चिकित्सा केंद्र पहुँचे परंतु इसकी हालत इतनी बुरी थी कि उसका इलाज यहाँ संभव न था। गाँव वाले उसे वहाँ से लेकर देहरादून के ज़िला अस्पताल में पहुँचे किंतु उसकी हालत बड़ी नाज़ुक थी अतः ज़िला अस्पताल देहरादून के डॉक्टरों ने गाँव वालों से कहा कि यदि आप इसकी जान की खैरियत चाहते हो तो चंडीगढ़ में एक बड़े अस्पताल पी०जी०आई० में ले जाओ। गाँव वाले उसे बिना किसी देरी के पी०जी०आई० ले आए। पी०जी०आई० पहुँचते-पहुँचते छवि की हालत और भी गंभीर हो गयी थी।

इस हादसे को हुए बीस घंटे बीत चुके ते किंतु पी०जी०आई० के डॉक्टरों ने भी हिम्मत जुटाई और अनेक दिक्कतों के बावजूद उन्होंने उसका ऑप्रेशन कर छवि को बचा लिया। तीन हफ़्तों के बाद उसे अस्पताल से छुट्टी मिल गयी। निस्संदेह यह छवि की अपनी हिम्मत ही थी कि वह नरभक्षी तेंदुए के चँगुल से न केवल बच गयी अपितु तेंदुए को भागने पर मजबूर कर दिया।

ज्यो-ज्यों लोगों को इस घटना के बारे में पता चला त्यों-त्यों लोगों का उससे मिलने के लिए तांता लगने लगा। लोग खुद छवि की जुबान से उसकी वीरता की कहानी सुनते और अचंभित हो उठते। पहले जहाँ गाँव में बड़े-बूढ़े ऐसी कहानियाँ सुनाते थे जिसमें तेदुआ आकर जानवरों व लोगों को किस प्रकार अपना शिकार बनाता था किंतु आज गाँव में छवि की इस बहादुरी का किस्सा भी सब की जुबान पर था।

अभ्यास

शब्दार्थ

नरभक्षी	:	मनुष्य को खाने वाला	खैरियत	:	कुशल मंगल
यकायक	:	एकाएक	दिक्कत	:	कठिनाई
व्याकुल	:	परेशान	अचंभित	:	हैरान
चँगुल	:	पकड़, अधिकार			

बताओ

1. छवि के गाँव का नाम बतायें।
2. छवि पर किसने हमला किया ?
3. छवि ने तेंदुए पर कहाँ वार किया ?
4. तेंदुआ अपने शिकार को छोड़कर क्यों भाग गया ?
5. गाँव वाले उसे सबसे पहले किस अस्पताल में लेकर गये ?
6. किस अस्पताल के डॉक्टरों ने छवि की जान बचायी और कैसे ?

इस मुहावरों के वाक्य बनाओ

	मुहावरा	अर्थ	वाक्य
1.	मन में लड्डू फूटना	खुश होना	____________
2.	फूला न समाना	खुश होना	____________
3.	पैरों तले से ज़मीन खिसक जाना	होश-हवास न रहना	____________
4.	मौत सिर पर खेलना	मौत करीब होना	____________

पढ़ो, समझो और लिखो

1.	वर्तमानकाल	:	उसका शिकार उसके सामने है।
	भूतकाल	:	उसका शिकार उसके सामने था।
	भविष्यकाल	:	उसका शिकार उसके सामने होगा।
2.	वर्तमानकाल	:	
	भूतकाल	:	छवि बुरी तरह से घबरा गई थी।
	भविष्यकाल	:	
3.	वर्तमान काल	:	
	भूतकाल	:	
	भविष्यकाल	:	तेंदुआ जानवरों व लोगों को अपना शिकार बनाएगा।

बहुवचन लगाओ

झोंपड़ी	:	झोंपड़ियाँ	बात	:	बातें
बेटी	:	______	औरत	:	______
कहानी	:	______	भैंस	:	______
छुट्टी	:	______	गर्दन	:	______

शुद्ध शब्द पर गोला लगाओ

1. परिचय/परीचय/परीचै
2. कब्जे/कबजे/कब्ज़े
3. हिमत/हीमत/हिम्मत
4. झौंपड़ी/झोंपड़ी/झोपड़ी
5. पराथमिक/प्राथमिक/प्राथमिक
6. ऑप्रेशन/ओपरेशन/आपरेशन

निम्नलिखित प्रत्येक शब्द समूह में से जो शब्द सबसे अलग हो, उस पर गोला लगाओ

1. हिम्मत, बहादुरी, ताकत, घबराहट
2. पेट, खेल, मुँह, गर्दन
3. वार, चोट, बात, प्रहार
4. भागना, छुट्टी, दौड़ना, रुकना
5. चंडीगढ़, गाँव, देहरादून, खट्टूखाल
6. अस्पताल, डॉक्टर, कल्पना, ऑप्रेशन

पाठ में आए निम्नलिखित अव्यवस्थित शब्दों को व्यवस्थित करके लिखें

चा क अ न	बो क द र च	ड् क फा र
अचानक	______	______
	______	______
ता अ स प ल	जू बा द व	या क नि हा
______	______	______
______	______	______

निम्नलिखित में से संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया शब्द छाँटो

		संज्ञा	सर्वनाम	क्रिया
1.	उसकी गर्दन से खून बह रहा था।	गर्दन, खून	उसकी	बह रहा था
2.	बहादुर छवि के आगे उसको भागना पड़ा।	______	______	______
3.	उसने तेंदुए के पेट पर लगातार लात मारनी शुरू कर दी।	______	______	______
4.	छवि ने उसके जबड़े को चीर दिया।	______	______	______
5.	वह नरभक्षी तेंदुए के चँगुल से बच गयी।	______	______	______

पाठ–22

आत्मविश्वास

अपनी शक्ति एवं योग्यता पर विश्वास ही आत्मविश्वास कहलाता है। यही सफलता का मूल मंत्र है। यही वह कुँजी है जिसके सहारे व्यक्ति तमाम कठिनाइयों का सामना करता हुआ मंज़िल तक पहुँच जाता है। जीवन चलते रहने का नाम है अतः ज़िंदगी में निरंतर आगे बढ़ते रहना चाहिए। आपको जीवन में ऐसे लोग भी मिलेंगे जो आपके मार्ग में रुकावटें खड़ी करेंगे। आप बिना किसी डर के आत्मविश्वास के सहारे उन रुकावटों को पार करते जाइए। यही साहसी मनुष्य की सबसे बड़ी पहचान है।

ज़िंदगी में कई बार ऐसा भी होता है कि आपने बहुत मेहनत व निष्ठा से काम किया किंतु फिर भी आपको सफलता नहीं मिलती। ऐसे में हमें घबराना नहीं चाहिए। मान लीजिए आपने स्कूल में किसी कविता, गीत, पेंटिंग, नृत्य या खेल प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रतियोगिता में और विद्यार्थियों ने भी भाग लिया। अब प्रथम स्थान तो किसी एक को ही मिलना है अतः कोई भी स्थान न मिलने पर या निचला स्थान मिलने पर हमें निराश नहीं होना चाहिए। यही वह समय होता है जब हमें सोचना चाहिए कि हमसे क्या गलती हो गई। हमें पुनः उस कार्य को करने में पहले से भी अधिक शक्ति के साथ कमर कस लेनी चाहिए।

दुनिया में तीन तरह के लोग होते हैं। पहले वर्ग में इस तरह के लोग आते हैं जो सर्वदा डरते रहते हैं, शंकाओं से घिरे रहते हैं। ऐसे लोग किसी भी कार्य को करने में हिचकिचाते हैं अतः वे कोई भी काम शुरू ही नहीं करते। इन्हें अधम वर्ग में गिना जाता है। दूसरे वर्ग में ऐसे लोग आते हैं जो किसी काम को शुरू तो करते हैं परंतु थोड़ा-सा नुकसान देखकर घबरा जाते हैं और काम को बीच में ही छोड़ देते हैं। इन्हें मध्यम वर्ग के लोग कहा जाता है। किंतु कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जिनमें अपार आत्मविश्वास होता है। ऐसे लोग किसी काम को पूरे उत्साह के साथ शुरू करते हैं, चाहे कितनी ही रुकावटें आएं, कितना नुकसान हो जाए, वे कार्य को बीच में नहीं छोड़ते अपितु उसे हर हालत में पूरा करके ही दम लेते हैं। ऐसे लोगों को उत्तम वर्ग में गिना जाता है।

विश्व में ऐसे अनेक व्यक्तियों के उदाहरण हमारे सामने हैं जिन्होंने अपने आत्मविश्वास के सहारे सफलता प्राप्त की। यह पितृभक्त श्रवण का आत्मविश्वास ही था जो अपने अंधे माता-पिता को बहँगी में

बिठाकर और उसे कंधे पर उठाकर तीर्थों की यात्रा करवाने के कार्य को कर सका था। यह एकलव्य का आत्मविश्वास ही था जिसने गुरु द्रोणाचार्य की मिट्टी की मूर्ति बनाकर उसे ही गुरु मानकर विद्या में कुशलता प्राप्त की। श्री राम भगवान हनुमान की शक्ति से परिचित थे और भगवान हनुमान स्वयं भी आत्मविश्वास की मूर्ति थे अत: पहाड़ को उठा कर लाने का दुष्कर कार्य कर सके। गुरु नानक, महात्मा बुद्ध, महात्मा गाँधी आदि महापुरुषों आदि ने अपने आत्मविश्वास के बल पर गुमराह जनता को सच्ची राह दिखाई और उनके उपदेश आज भी सारी मानव जाति का मार्गदर्शन कर रहे हैं। यह एडीसन का आत्मविश्वास ही था जिसने अनेक बार असफल होने पर भी बल्ब का आविष्कार कर दुनिया को जगमग कर दिया। लुई ब्रेल ने अनेक प्रयत्नों के बाद एक ऐसी लिपि (ब्रेल लिपि) का आविष्कार किया जिससे अंधे व्यक्ति भी पढ़ने में सक्षम हो सके। निर्धन परिवार व अभावों से ग्रस्त लाल बहादुर शास्त्री का आत्मविश्वास ही उन्हें प्रधानमंत्री के सर्वोच्च पद तक ले गया। हमारे देश के महान नेताओं जैसे जवाहरलाल नेहरू, महात्मा गाँधी, सुभाषचंद्र बोस, सरदार वल्लभ भाई पटेल, लाला लाजपतराय, भगत सिंह आदि ने अनेक शारीरिक, मानसिक, आर्थिक कष्ट सहे किंतु यह उनका आत्मविश्वास ही था जिसके बल पर वे देश को आज़ादी दिलाने में कामयाब रहे। प्रसिद्ध नृत्यांगना सुधा चन्द्रन का एक पैर लकड़ी का होने के बावजूद उसने नृत्य अभ्यास के समय अनेक शारीरिक कष्ट सहे किंतु उसने आत्मविश्वास नहीं छोड़ा और नृत्यांगना के रूप में प्रवीणता प्राप्त की। आज भी वह फिल्मों व दूरदर्शन में काम कर रही है। इसी तरह संगीत के क्षेत्र में लता मंगेशकर, मोहम्मद रफी, किशोर कुमार, फिल्मों में अमिताभ बच्चन, क्रिकेट में सचिन तेंदुलकर, शतरंज में विश्वनाथन आनंद, शूटिंग में अभिनव बिंद्रा आदि ने अपने-अपने क्षेत्र में आत्मविश्वास के बल पर ही दुनिया में नाम कमाया है। इसी तरह दुनिया में ऐसे अनेक वैज्ञानिक, डाक्टर, नेता, अभिनेता, कलाकार आदि हुए हैं जिन्होंने आत्मविश्वास का दामन पकड़कर उच्च शिखरों को छुआ।

अत: विकट से विकट परिस्थिति में भी सकारात्मक सोचें कि मैं यह काम कर सकता हूँ, मैं जीत जाऊँगा, मेरे लिए यह काम तो बहुत सरल है, मुझे यह कार्य हर हाल में करना है, मैं सफल हो जाऊँगा, मैं लक्ष्य पा जाऊँगा आदि। एक बात का ध्यान रखें कि आत्मविश्वास का सबसे बड़ा दुश्मन है डर। अपने मन में डर और शंका को न पनपने दें। जीत निश्चय ही आपकी होगी। अत: अपने विश्वास को जगाएँ और सफलता आपके कदम चूमेगी।

अभ्यास

शब्दार्थ

तमाम	:	सारी, समस्त	बहँगी	:	काँवर
निष्ठा	:	पक्का इरादा	गुमराह	:	रास्ता भटके हुए
सर्वदा	:	हमेशा	आविष्कार	:	खोज
अधम	:	सबसे निचला	सक्षम	:	समर्थ
मध्यम	:	बीच का	सर्वोच्च	:	सबसे ऊँचा
उत्तम	:	बढ़िया	प्रवीणता	:	कुशलता

बताओ

1. लेखक ने आत्मविश्वास किसे कहा है ?
2. साहसी मनुष्य की क्या पहचान है ?
3. असफल हो जाने पर हमें क्या करना चाहिए ?
4. लेखक ने अधम वर्ग वाले लोग किन्हें कहा है ?
5. लेखक ने मध्यम वर्ग वाले लोग किन्हें कहा है ?
6. लेखक ने उत्तम वर्ग वाले लोग किन्हें कहा है ?
7. हमें विकट परिस्थितियों में किस प्रकार सोचना चाहिए ?
8. लेखक ने आत्मविश्वास का सबसे बड़ा दुश्मन किसे कहा है ?

शुद्ध शब्द पर गोला लगाओ

रूकावट/रुकावट	दुश्कर/दुष्कर
प्रतीयोगिता/प्रतियोगिता	आविष्कार/आविश्कार
कठिनाईयाँ/कठिनाइयाँ	शास्तरी/शास्त्री
मूरती/मूर्ति	शरीरिक/शारीरिक
परीचित/परीचित	आज़ादी/आजादी
गुरू/गुरु	लक्षय/लक्ष्य

इन मुहावरों को वाक्यों में प्रयोग करो

मुहावरा	अर्थ	वाक्य
कमर कस लेना	तैयार हो जाना	______________
दामन पकड़ना	किसी की शरण में जाना	______________
कदम चूमना	कामयाबी मिलना	______________

मिलान करो

श्रवण कुमार	पवनपुत्र
एकलव्य	शूटर
सचिन तेंदुलकर	नृत्यांगना
सरदार वल्लभ भाई पटेल	अभिनेता
अमिताभ बच्चन	गायक
किशोर कुमार	क्रिकेटर
हनुमान	पितृभक्त
लुई ब्रेल	प्रधानमंत्री
एडीसन	शतरंज खिलाड़ी
सुधा चन्द्रन	ब्रेल लिपि आविष्कारक
अभिनव बिंद्रा	धनुर्धर
विश्वनाथ आनंद	नेता
लाल बहादुर शास्त्री	बल्ब आविष्कारक

इन वाक्यों में से विशेषण शब्दों को अलग करके लिखो

1. यही साहसी मनुष्य की सबसे बड़ी पहचान है। ________
2. उत्तम लोग कार्य को बीच में नहीं छोड़ते। ________
3. उसने अपार सफलता प्राप्त की। ________
4. सुधा चन्द्रन ने अनेक शारीरिक कष्ट सहे। ________
5. गुरु नानक देव और महात्मा बुद्ध ने गुमराह जनता को सच्ची राह दिखाई। ________

पाठ में आए अव्यवस्थित शब्दों को व्यवस्थित करके लिखो

ता स ल फ	ति गि यो ता प्र	ब घ ना रा
सफलता	____________	____________
____________	____________	____________
च चा ते हि कि	नु न ह मा	चि प त रि
____________	____________	____________
____________	____________	____________
क नु न सा	ख दे र क	ज्ञा नि क वै
____________	____________	____________
ला का र क	क क ड़ प र	ने प न प

सोचिए और लिखिए

1. आपको इस पाठ में आए किस व्यक्ति महापुरुष/नेता ने जीवन में प्रभावित किया है और क्यों ? तीन–चार वाक्य लिखें।
2. मान लीजिए आप स्कूल में दौड़ में भाग ले रहे हैं। आपके किसी सहपाठी ने कह दिया कि आप दौड़ में जीत नहीं सकेंगे उस समय उसकी बात पर विश्वास कर लेंगे या जीतने की हर संभव कोशिश करेंगे। तीन–चार वाक्यों में लिखें।